“सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानियों में चित्रित स्त्री”

HIN-675 शोध प्रबंध

श्रेयांक: 16

स्नातकोत्तर कला (हिंदी)

की उपाधि हेतु प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध

शोधार्थी

“ तन्वी तारकेश्वर खोर्जुवेकर ”

अनुक्रमांक: 22P0140013

PR Number: 201809263

मार्गदर्शक

“ ममता दीपक वर्लेकर ”

शणै गोंयबाब भाषा और साहित्य संकाय

हिंदी अध्ययन शाखा

गोवा विश्वविद्यालय

अप्रैल 2024

GOA UNIVERSITY SHENOI GOEMBAB SCHOOL OF LANGUAGES & LITERATURE TALEIGAON PLATEAU

परीक्षक: ममता दीपक वेर्लेकर

Seal of the School

DECLARATION

I hereby declare that the data presented in this Dissertation report entitled, "सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानियों में चित्रित स्त्री " is based on the results of investigations carried out by me in the Discipline of Hindi at Shenoi Goembab School of Languages and Literature, Goa University under the Supervision of Ms. "Mamta Deepak verlekar" and the same has not been submitted elsewhere for the award of a degree or diploma by me. Further, I understand that Goa University or its authorities will be not be responsible for the correctness of observations/experimental or other findings given the dissertation. I hereby authorize the University authorities to upload this dissertation on the dissertation repository or anywhere else as the UGC regulations demand and make it available to any one as needed.

TTKhorjuvekar

Tanvi Tarkeshwar Khorjuvenkar

22P0140013

Date:18|04|2024

Place: Goa University

COMPLETION CERTIFICATE

This is to certify that the dissertation report " सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानियों में चित्रित स्त्री " is a bonafide work carried out by Ms. Tanvi Tarkeshwar Khorjuvenkar under my supervision in partial fulfilment of the requirements for the award of the degree of Master of Arts in the Discipline of Hindi at the Shenoi Goembab School of Languages and Literature, Goa University.

Mamta Deepak verlekar

Date: 18|04|2024

Prof. Anuradha Wagle

Dean, SGSLL, GoaUniversity

GOA UNIVERSITY SHENOI GOEMBAB SCHOOL OF LANGUAGES & LITERATURE TALEIGAON PLATEAU

School Stamp

Date:18|04|2024

Place: Goa University

ATMANIRBHAR BHARAT
SWAYAMPURNA GOA

गोंय विद्यापीठ
ताळगांव पठार,
गोंय - ४०३ २०६
फोन : +९१-८६६९६०९०४८

(Accredited by NAAC)

Goa University
Taleigao Plateau, Goa-403 206
Tel : +91-8669609048
Email : registrar@unigoa.ac.in
Website : www.unigoa.ac.in

Ref. No.: GU/LIB/ATTENDANCE CERT./2024/ 252

Date: 06/05/2024

TO WHOM SO EVER IT MAY CONCERN

This is to certify that Miss Tanvi Tarkeshwar Khorjuvenkar a student of Goa University, M.A. (Hindi), visited the Goa University Library for her reference work on the following dates and completed 63 Hours & 31 Minutes of research internship as a part of her M.A. dissertation.

The detailed dates and times she visited are attached herewith.

This certificate has been issued at the written request of Assistant Professor Mamata Deepak Verlekar.

6/5/24

University Librarian
(Dr. Sandesh B. Dessai)

Dr. Sandesh B. Dessai
UNIVERSITY LIBRARIAN
Goa University
Taleigao - Goa.

GOA UNIVERSITY
LIBRARY
GOA

VISITS TO GOA UNIVERSITY LIBRARY

SR.NO.	DATE	TIMING	TIME SPENT
1.	20/04/23	11:40-04:45	4 hours 5min
2.	24/04/23	04:30-05:55	1 hour 25min
3.	25/04/23	09:58-10:04	6 min
4.	25/04/23	02:00-06:15	5 hours 15min
5.	26/04/23	11:20-05:05	5 hours 45 min
6.	28/04/23	10:40-12:10	1 hour 30min
7.	19/06/23	11:18-01:42	2 hours 24 min
8.	20/06/23	11:11-04:00	4 hours 49 min
9.	10/07/23	03:51-04:20	29 min
10.	17/07/23	03:00-03:39	39min
11.	01/08/23	04:26-05:32	1 hour 6 min
12.	07/08/23	12:58-04:00	3 hours 2 min
13.	21/08/23	12:35-01:40	1 hour 5 min
14.	06/09/23	03:10-03:37	25 min
15.	27/09/23	11:17-11:54	28 min
16.	03/10/23	02:50-03:55	1 hour 5min
17.	13/10/23	10:44-10:50	7min
18.	14/10/23	03:38-04:50	1 hour 12min
19.	17/10/23	01:38-04:00	2 hours 22 min
20.	18/10/23	10:20-10:31	12min
21.	20/10/23	03:00-03:15	15min
22.	30/10/23	11:00-04:06	5 hours 6 min
23.	15/11/23	12:18-12:20	3min
24.	03/01/24	12:00-04:45	4 hours 45min
25.	09/01/24	11:30-02:09	3 hours 9 min
26.	10/01/24	11:23-12:30	1 hour 7 min
27.	17/01/24	11:30-04:00	4 hours 30 min
28.	23/01/24	01:58-02:02	5 min
29.	24/01/24	11:55-12:45	50min
30.	06/02/24	12:47-01:49	1 hour 2 min
31.	04/03/24	01:32-01:40	8min
32.	12/03/24	12:49-01:08	19 min
33.	14/03/24	10:52-11:03	11 min
34.	19/03/24	12:46-02:48	2 hours 2 min
35.	28/03/24	10:50-12:40	1 hour 50 min
36.	18/04/24	05:23-06:10	38 min
Total hours			**63 Hours 31 Minutes**

Signature of the Guide
(Asst. Prof. Mamata Deepak Verlekar)

Signature of the University Librarian
Dr. Sandesh B. Dessai

TTKhorjuvekar
Signature of the Student
Miss Tanvi Tarkeshwar Khorjuvenkar

अनुक्रम

अध्याय	विवरण	पृष्ठ संख्या
	Acknowledgements	
	अनुक्रम	
	प्रस्तावना	
1. प्रस्तावना	1.1 शोध समस्या 1.2 प्रस्तावित अनुसंधान की प्रासंगिकता और आवश्यकता 1.3 प्रस्तावित शोध के उद्देश्य 1.4 साहित्यिक पुनविश्लेषण 1.5 प्रस्तावित अनुसंधान के लिए अनुसंधान पद्धति 1.6 अनुक्रमणिका	
2. सुभद्रा कुमारी चौहान:- सामान्य परिचय	2.1 प्रस्तावना 2.2 जन्म एवं परिवार 2.3 बचपन 2.4 शिक्षा 2.5 पुरस्कार और सम्मान 2.6. निधन 2.7 कृतित्व	

3. भारतीय समाज और स्त्री संघर्ष	3.1 विभिन्न युगों में स्त्रियों का संघर्ष 3.1.1 वैदिक काल 3.1.2 उत्तर वैदिक काल 3.1.3 मध्ययुगीन काल 3.1.4 नवजागरण काल 3.2 स्त्रियों की समस्याएँ 3.3 पर्दा-प्रथा 3.2.1 पर्दा-प्रथा 3.2.2 शिक्षा संबंधित समस्याएँ 3.2.3 दहेज प्रथा 3.2.4 वेश्यावृत्ति 3.2.5 परिवार संबंधित समस्याएँ 3.2.6 बाल विवाह	
4. सुभद्रा कुमारी चौहान के कहानियों में चित्रित स्त्री	4.1 कहानियों का कथानक 4.1.1 भग्नावशेष 4.1.2 होली 4.1.3 मँझली रानी 4.1.4 परिवर्तन 4.1.5 दृष्टिकोण 4.1.6 कदम्ब के फूल 4.1.7 किस्मत 4.1.8 मछुए की बेटी 4.1.9 एकादशी 4.1.10 आहुति 4.1.11 थाती 4.1.12 अनुरोध	

	4.1.13 ग्रामीणा 4.1.14 उन्मादिनी 4.1.15 असमंजस 4.1.16 अभियुक्ता 4.1.17 सोने की कंठी 4.1.18 नारी हृदय 4.1.19 पवित्र ईर्ष्या 4.1.20 अँगूठी की खोज 4.1.21 वेश्या की लड़की 4.1.22 रूपा 4.1.23 कल्याणी 4.1.24 कैलाशी नानी 4.1.25 राही 4.1.26 दो साथी 4.1.27 बिआहा 4.1.28 प्रोफेसर मित्रा 4.1.29 दुराचारी 4.1.30 मंगला 4.1.31 जम्बक की डिबिया 4.1.32 तीन बच्चे 4.1.33 बड़े घर की बात 4.1.34 कान के बुंदे 4.1.35 दो सखियाँ 4.1.36 देवदासी 4.1.37 एक्सीडेण्ट 4.1.38 दुनिया 4.1.39 पापी पेट 4.1.40 अमराई	

	4.1.41 चढ़ा दिमाग 4.1.42 गौरी 4.1.43 तांगेवाला 4.1.44 हींगवाला 4.1.45 गुलाब सिंह 4.1.46 सुभागी 4.2 स्त्री संघर्ष से जुडी कहानियों का विश्लेषण 4.2.1 दहेज प्रथा की समस्या 4.2.2 पति द्वारा किया गया शोषण 4.2.3 नारी के चरित्र पर संदेह 4.2.4 वैवाहिक जीवन की समस्याएँ 4.2.5 अन्तर्जातीय विवाह 4.2.6 अनमेल विवाह 4.2.7 विवाह – विच्छेद 4.2.8 विधवा समस्या 4.2.9 नारी द्वारा नारी का शोषण	
5. निष्कर्ष	निष्कर्ष	
	संदर्भ	

कृतज्ञता

'सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानियों में चित्रित स्त्री' विषय पर संपन्न यह लघु शोध प्रबंध पूरा करना संभव नहीं था यदि मुझे किसी का उत्तम मार्गदर्शन नहीं मिला होता। प्रस्तुत शोध कार्य मेरे शोध निर्देशक सहायक प्राध्यापक ममता वेर्लेकर जी के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ। उन्होंने समय-समय पर शोध कार्य के संबंध में मेरा पथ प्रदर्शन किया एवं मेरे ज्ञान में श्रीवद्धि की। उन्होंने विषय चयन से लेकर शोध कार्य संपन्न होने तक मेरी सहायता की, मुझे जिन-जिन किताबों की आवश्यकता थी उन सभी किताबों के बारे में उन्होंने मुझे जानकारी दी। उन्होंने मुझे अपना बहुमूल्य समय दिया एवं लेखन कार्य में आने वाली बधाओ को परे किया। उनके पूरे सहयोग के लिए में उनकी सदैव आभारी रहूँगी।

शैणे गोयेंबाब भाषा एवं साहित्य महाशाला गोवा विश्वविद्यालय हिंदी विभाग की मैं आभारी हूँ कि उन्होंने हमें यह लघु शोध प्रबंध करने का मौका देकर अपने विचारों को व्यक्त करने का अवसर दिया। हिंदी विभाग के सभी अध्यापकों के प्रति में मेरी कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ। मेरे परिवार वालों ने भी क़दम-क़दम पर मेरा पथ-प्रदर्शन किया, उनको सिर्फ़ धन्यवाद कहना काफ़ी नहीं होगा। मैं उन सब की ऋणी बनी रहूँगी। मेरी शोध समूह सदस्य श्रद्धा, अमीषा, पूजा, दर्शना, पवित्रा ने भी मेरी बहुत मदद की।

इसके अतिरिक्त गोवा विश्वविद्यालय ग्रंथालय, केंद्रीय पुस्तकालय पणजी, वहाँ के कर्मचारियों ने मेरे विषय से संबंधित किताबें ढूंढने में मेरी मदद की है। मैं सदैव उनके ऋणी रहूँगी। प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से जिसने भी मेरे लघु शोध प्रबंध में सहायता प्रदान की है, मैं उन सबके प्रति अपना आभार ज्ञापित करती हूँ।

प्रथम अध्याय

प्रस्तावना

प्रस्तावना

सुभद्रा कुमारी चौहान हिंदी की सुप्रसिद्ध कवयित्री और लेखिका हैं। वे राष्ट्रीय चेतना की एक सजग कवयित्री रही हैं। स्वाधीनता संग्राम में अनेक बार जेल यातनाएँ सहने के पश्चात् उन्होंने अपनी अनुभूतियों को अपनी कहानियों के माध्यम से व्यक्त किया। गांधीजी के असहयोग आंदोलन में भाग लेने वाली वे प्रथम महिला थी। वे एक रचनाकार होने के साथ-साथ स्वाधीनता संग्राम की सेनानी भी थी।

अपने छोटे से जीवन में समाज को बदलने के लिए वे आजीवन धारा के विरुद्ध जूझती रहीं। हिंदी साहित्य की दुनिया में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। सुभद्रा कुमारी चौहान को 'झाँसी की रानी' कविता के लिए भी जाना जाता है। मात्र नौ साल की उम्र में सुभद्रा कुमारी ने अंग्रेजों के खिलाफ अपनी पहली कविता लिखी । सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपनी कविताओं से स्वतंत्रता की लड़ाई में देशवासियों का मनोबल बढ़ाया और जाति, रंग भेद और नस्लभेद के खिलाफ़ आवाज उठाई।

स्त्रियों के सुख-दुख को व्यक्त करने के लिए उन्होंने कल्पना का सहारा नहीं लिया उन्होंने वास्तविकता को सबके सामने खोल कर रख दिया और स्त्री की स्थिति सुधारने के लिए स्त्री स्वातन्त्र्य और स्त्री अधिकारों का प्रबल समर्थन किया। सुभद्रा कुमारी चौहान ने स्त्री की निजी स्वाधीनता और उससे जुड़े यथार्थ को अभिव्यक्ति देने के लिए अपनी कविताओं और कहानियों में छायावादी भाषा के माध्यम से विद्रोह किया । उनका गद्य ही नहीं उनकी जीवन प्रक्रिया भी जिंदगी के सहज और जरूरी सरोकारों से जुड़ी हुई थी। सुभद्रा जी के साहित्य में इसलिए जमीन

का वह स्पर्श हमें दिखाई देता है जो हिंदी के पहले बड़े कथाकार प्रेमचंद में है। सुभद्रा कुमारी चौहान ने देश की स्वाधीनता और नारी की स्वतन्त्रता के लिए अनेक प्रयास किए। उन्होंने बेडियो में जकड़ी भारतमाता और भारतीय स्त्री को मुक्त करने के लिए शक्तिशाली ब्रिटिश सत्ता और रुढिवादी समाज का निर्भीकता से सामना किया। शासन और समाज के विरुद्ध आवाज़ उठाने पर उन्हें जीवन में निरंतर संघर्षों का सामना करना पड़ा लेकिन उन्होंने अपने कदम पीछे नहीं हटाए और दृढ़ निश्चय तथा धैर्य शक्ति का परिचय देते हुए देश और स्त्री की उनके अधिकार दिलाए। कहा जाता है कि भारत और भारतीय नारियों को अपना जन्मसिद्ध अधिकार दिलाने में सुभद्राजी की लेखनी का गौरवपूर्ण योगदान हैं।

वे समाज और देश की हर घटना पर नज़र रखती थीं। उनकी कहानियों में भारतीय नारी की पीड़ा, दहेज प्रथा, बाल विवाह, अनमेल विवाह, वेश्या प्रश्न, देवदासी आदि विषयों पर कहानियाँ लिखी गई हैं। उन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से स्त्री-शिक्षा, स्त्री-स्वतंत्रता और स्त्री अधिकारों की मांग उठाई।

अपने शोध कार्य के लिए इस विषय को चुनने का मुख्य कारण यह है कि मुझे उनकी कविताएँ पढ़ना बहुत अच्छा लगता है। मुझे इनकी कहानियों के बारे में ज्ञात नहीं था। उन्होंने काव्य के साथ कहानियाँ भी लिखी है। तभी मैंने जाना कि उनकी कहानियों पर किसी ने भी शोध नहीं किया है। इसलिए मैंने उन्हें और उनके साहित्य को और गहराई से जानने के लिए इस विषय को चुना है। उनकी कविताओं की ही अत्यधिक चर्चा की जाती है। वे कविताओं के लिए प्रसिद्ध थी ही। परंतु इस शोध कार्य के माध्यम से उनके कहानियों में स्त्री के संघर्ष को पाठको के सामने

लाना भी एक मुख्य उदेश्य है। जिस तरह उनकी कविताओं में संवेदना गहराई से दिखाई देती है उसी तरह उनकी कहानियों में भी सामाजिक मुद्दों को मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानियों को पढ़ने के बाद मुझे काफ़ी अच्छा लगा, ऐसा लगा जैसे यह कोई पुरानी कहानी नहीं है इसे तो हम रोज़ अपने आस-पास घटित होता हुआ महसूस कर सकते हैं। उनके पात्रों की जो भी समस्याएँ हैं, दुःख हैं, उनका मैं खुद पढ़ते वक्त अनुभव करने लगी थी। यह कहानी चाहे किसी भी समय की हो वह एक समाज में घटित यथार्थ के रूप में आज भी प्रासंगिक हैं। सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा लिखित सभी कहानियाँ प्रासंगिकता और यथार्थ से भरी हुई है। उनकी कहानियाँ मानव जीवन की हर समस्याओं का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करती हैं।

सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानियों के स्त्री पात्र, इस विषय को मेरे शोध विषय के रूप में चुनने के पीछे मेरा उद्देश्य यही है कि सालों से, समाज में महिलाओं पर अनेक तरह के अत्याचार होते चले आ रहे हैं आज भी यह विषय गंभीर होता चला जा रहा है, उनकी कहानियों के स्त्री पात्र अकेलापन, अंतद्वंद्व, पितृसत्ता आदि परिस्थितियों से संघर्ष करते दिखाई देते हैं। जिनका यथार्थ चित्रण सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा हुआ हैं। सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं पर ज्यादा शोध हुआ हैं। लेकिन उनकी कहानियों पर ज्यादा शोध नहीं हुआ हैं। उनकी कहानियों में चित्रित स्त्री पात्र पर कम सामग्री उपलब्ध है| इसलिए इस विषय पर गहराई से काम करना इस शोध कार्य का हेतु है|

सुभद्रा कुमारी चौहान ने कुल ४६ कहानियाँ लिखी हैं। सभी कहानियों में स्त्री पात्र है, पर हर कहानी में स्त्री की समस्या का विषय नहीं है। उनकी ४६ कहानियों में से ग्यारह कहानियाँ ऐसी हैं जिनका मुख्य विषय महिला पात्र और उनकी समस्याएँ हैं। इन सभी कहानियों में से मुख्य रूप में जिन कहानियों पर विशेष रूप से शोध किया जाएगा वे निम्नलिखित है:- भग्नावशेष, होली, मॅझली रानी, दृष्टिकोण, कदम्ब के फूल, किस्मत, मछुए की बेटी, आहुति, थाती, अनुरोध, ग्रामीण|

1.1 शोध समस्या

निम्नलिखित शोध समस्याओं पर विचार किया जाएगा कि सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानियों में स्त्री का जीवन कैसा है| उसी के साथ उनकी कहानियों में स्त्रियों की कौन-कौन सी समस्याओं को दिखाया गया है। स्त्री के प्रति सुभद्रा कुमारी चौहान का दृष्टिकोण कैसा है? तथा सुभद्रा कुमारी चौहान के कहानियों में स्त्रियों के कौन से संघर्षों को दिखाया गया है?

1.2 प्रस्तावित अनुसंधान की प्रासंगिकता और आवश्यकता

सदियों से हम देखते आए हैं कि पुरुष स्त्रियों पर अनेक प्रकार के अत्याचार करते हैं। स्त्री को एक खिलौने की तरह समझा जाता है। फिर एक शिक्षित स्त्री हो या फिर अशिक्षित| स्त्रियों के अस्तित्व की लड़ाई की पुकार साहित्य में सुनाई देती है। तभी साहित्य में भी स्त्री विमर्श उभर कर आया है। दुनिया भर में स्त्री होने के कारण यह विषय एक देश तक सीमित नहीं रहा है। विश्व स्तर पर कई साहित्यकार अपनी ओर से योगदान दे रहे हैं। इसमें स्त्रियों तथा अनेक पुरुष लेखकों ने

नारी समस्या को उठाया हैं। स्त्रियों पर अनेक रचनाएँ रची गई है। हिंदी कहानियों में प्रमुख रूप से उषा प्रियंवदा, मन्नू भंडारी, प्रभा खेतान, सुधा अरोड़ा आदि ने अपना योगदान दिया हैं। स्त्रियों पर लिखने का काम बहुत से लेखक और लेखिकाओं ने किया है जिसकी वजह से हमें पता चलता है कि स्त्रियों की कैसी स्थिति है। सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपनी रचनाओं के माध्यम से महिलाओं के मुद्दों पर गंभीर विचार किया हैं। सुभद्रा कुमारी चौहान ने ऐसे ही काल्पनिक ढंग से कहानियाँ नहीं लिखी हैं, उन्होंने अपनी आँखो से जो देखा है जो अनुभव किया है उसी को आधार बनाकर यह कहानियाँ लिखी है।

आज भी यह विषय प्रासंगिक है, आज भी हम देखते हैं कि स्त्रियों पर अत्याचार होते हैं। पहले की स्त्रियाँ आवाज नहीं उठाती थी वे यह सोचती है कि अगर हमने आवाज उठाई तो समाज के लोग हमारे बारे में क्या सोचेंगे। वे डरकर चुपचाप सब कुछ सहन करती थीं। आज भी कुछ ऐसी स्त्रिया हैं जो अत्याचार सहन करती हैं। कुछ ऐसी भी स्त्रियाँ हैं जो आवाज़ उठाती हैं। वे अपने हक के लिए लड़ती हैं। उनके कहानियों में सभी समस्याएँ यथार्थ रूप में चित्रित हैं। सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपनी अधिकतर कहानियों में किसी न किसी स्त्री समस्या को उठाया है। कुछ पुरुषप्रधान दृष्टि वाले पुरुष स्त्री को आगे जाती हुई नहीं देख सकते है। शिक्षित होने के बावजूद स्त्रियों को चूल्हा- चौका करने के लिए घर की चार दिवारों में कैद कर के रखा जाता था। आज भी एक स्त्री किसी अन्य पुरुष के साथ बातचीत करें तो उसे अलग नजरे से देखा जाता है। सब कुछ बदल गया है लेकिन लोगों की सोच वैसी की वैसी ही है। आज भी उन्हें लगता है कि स्त्रियों को पुरुषों के विरोध में नहीं बोलना चाहिए। पुरुष जो भी कहे वह चुपचाप सहन कर लेना

चाहिए। इसप्रकार की कहानियों को पढ़ने के बाद पाठक स्त्रियों को समझ पाएगा। साहित्य के क्षेत्र में ऐसी रचनाएँ बहुत महत्वपूर्ण हैं|

1.3 प्रस्तावित शोध के उद्देश्य

1. सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानियों का अध्ययन करना 1

2. उनकी कहानियों में उभरी प्रमुख स्त्री समस्याओं का विश्लेषण करना|

3.उनकी कहानियों में स्त्री संघर्ष का विश्लेषण करना 1

4.सुभद्रा कुमारी चौहान की स्त्री के प्रति दृष्टि को समझना ।

1.4 साहित्यिक पुनर्विश्लेषण

सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपने जीवन में जो अनुभव किया, अपनी आँखो से जो देखा, वहीं अपने साहित्य में लिखा है। बाल साहित्य पर डॉ. प्रतीक मिश्र ने कहा है कि "सुभद्रा कुमारी चौहान ने अधिक बाल साहित्य नहीं रचा। लेकिन उन्होंने जो कुछ रचा, उसमें बाल- मनोविज्ञान का भरपूर प्रयोग है, उसमें माँ का हृदय झांकता है, एक सजग युग चेता साहित्यकार की दृष्टि बच्चों से 'मिट्ठी' करती दिखाई देती है। सरल भाषा, स्पष्ट अभिव्यक्ति तथा वर्ण्य विषयों की प्रस्तुति का ताजापन सुभद्रा जी को एक श्रेष्ठ बाल-साहित्यकार की कोटि में स्थापित करने के लिए पर्याप्त है। उन्होंने ऐसे समय में हिन्दी को ये बाल कविताएं दीं जब हिन्दी के पास स्तरीय और बालक के समग्र विकास में सहयोगी बनने वाले बाल साहित्य का नितांत अभाव था।" [1]

डा. रामकुमार वर्मा ने कहाँ है कि "सुभद्राजी की कविता में हमें हृदय की परिस्थितियों के जितने चित्र मिलते हैं, उन सबों में स्वाभाविकता, सरलता और सौन्दर्य है। ऐसे स्थलों में भावना हमें उसी प्रकार थपकी देती है, जिस प्रकार सरिता की लहर अपने तट को उस धपकी से एक ध्वनि उठती है। उससे हृदय में एक प्रकार की अशांति होती है, पर होती है वह सुखदायिनी।" [2]

डॉक्टर दुर्गेश नंदिनी के अनुसार :- "सुभद्राजी हिंदी की कवयित्रियों में अपना विशिष्ट स्थान रखती हैं। उनकी रचनाओं में स्त्री-प्रकृति और मातृ-हृदय का अच्छा चित्रण मिलता है। उनके काव्य में एक ओर नारी की सहज भावुकता एवं कोमलता दिखाई देती है तो दूसरी ओर क्षत्राणियों का तेज भी इलकता है|" [3]

महादेवी वर्मा ने भी लिखा है-"उनकी कहानियाँ प्रमाणित करती हैं कि उन्होंने जीवन और समाज की अनेक समस्याओं पर विचार किया और कभी अपने निष्कर्ष के साथ और कभी दूसरों के निष्कर्ष के लिए उन्हें बड़े चमत्कारिक ढंग से उपस्थित किया। जब स्त्री का व्यक्तित्व उसके पति से स्वतंत्र नहीं माना जाता था तब वे कहती हैं- 'मनुष्य की आत्मा स्वतंत्र है। फिर चाहे वह स्त्री शरीर के अंदर निवास करती हो – चाहे पुरुष शरीर के अंदर । इसी से पुरुष और स्त्री का अपना-अपना व्यक्तित्व अलग-अलग रहता है।' जब समाज और परिवार की सत्ता के विरुद्ध कुछ कहना अधर्म माना जाता था तब वे कहती हैं, 'समाज और परिवार व्यक्ति को बंधन में बाँधकर रहते हैं। ये बंधन देशकालानुसार बदलते रहते हैं और उन्हें बदलते रहना चाहिए वरना वे व्यक्तित्व के विकास में सहायता करने के बदले बाधा पहुँचाने लगते हैं। बंधन मिलने ही अच्छे

उद्देश्य से क्यों न निवत किये गए हों, हैं बंधन ही, और वहाँ बंधन है वहाँ असंतोष है तथा क्रांति है।" [4]

केशव प्रसाद के अनुसार "कुमारी जी ने अपने स्त्री पात्रों के चरित्र चित्रण में नारी- हृदय के उन रहस्यपूर्ण, निभृत स्थलों पर प्रकाश डाला है, जो एक पुरुष लेखक के लिए यदि अगम नहीं तो दुर्गम अवश्य कहे जा सकते हैं। लेखिका की बोध-वृति अपने आपको इन कहानियों में प्रधानतः उन मनोभावों, मनोवेगों, भावनाओं और चित्त चेष्टाओं के विश्लेषण तथा प्रकटीकरण में संलग्न रखती है, जिनका संबंध विशेषतः नारी से है जो पूर्णतया स्त्रैण ही हैं।" [5]

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार "सुभद्रा की कहानियों में से अधिकांश बहुओं बरे, - विशेषकर शिक्षित बहुओं के दुःखपूर्ण जीवन को लेकर लिखी गयी हैं। निस्संदेह वे इसकी अधिकारिणी हैं। उन्होंने किताबी ज्ञान के आधार पर या सुनी सुनायी बातों का आश्रय करके कहानियाँ नहीं लिखीं वरन् अपने अनुभवों को ही कहानियों में रूपांतरित किया है। निस्संदेह उनके स्त्री चरित्रों का चित्रण अत्यंत मार्मिक और स्वाभाविक हुआ है।"[6]

सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपने जीवन में जो अनुभव किया वही अपने साहित्य में लिखा है| उन्होंने अधिक साहित्य नहीं रचा लेकिन जो कुछ भी लिखा वह प्रभावशाली था | सुभद्रा की कहानियों में अधिकांश शिक्षित बहूओं के दुखी जीवन पर कहानियाँ लिखी गई है| साथ ही उन्होंने किताबी ज्ञान का आधार या सुनी सुनाई बातों का आश्रय न लेकर जो अनुभव किया जो सहा है वही आधार लेकर कहानियाँ लिखी है| सुभद्रा जी ने हिंदी साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान बनाकर रखा है| उनके साहित्य में स्त्री प्रकृति तथा मातृ हृदय का अच्छा चित्रण देखने के

लिए मिलता है| उनकी कविताओं में सौंदर्य, सरलता, स्वाभाविकता देखने के लिए मिलती है| सुभद्रा कुमारी चौहान के कहानियों में स्त्री के उसे दिल के कोने की मन की बात अपने कहानियों में बताई है| जहाँ पर कोई भी पहूँच नहीं सकता वहाँ पर वे पहूँचती है|

1.5 प्रस्तावित अनुसंधान के लिए अनुसंधान पद्धति

इस शोध कार्य के लिए सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानियाँ ली जो सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली इस पुस्तक में संग्रहित है। सुभद्रा कुमारी चौहान ने कुल ४६ कहानियाँ लिखी हैं। उनकी ४६ कहानियों में से ग्यारह कहानियाँ ऐसी है जिनका मुख्य विषय स्त्री पात्र और उनकी समस्याएँ हैं। इन सभी कहानियों में से मुख्य रूप में जिन कहानियों पर शोध किया जाएगा वे निम्नलिखित है :- भग्नावशेष, होली, मंझली रानी, दृष्टिकोण, कदम्ब के फूल, किस्मत, मछुए की बेटी, आहुति, थाती, अनुरोध, ग्रामीण। इस शोध प्रबंध के लिए मैंने पाठ विश्लेषण पद्धति का आधार लिया है| अंतरजाल पर कई आलेख तथा वीडियो रूप में उपलब्ध सामग्री का आधार भी लिया गया है। पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों की भी सहायता ली गई है| आलोचनात्मक सामग्री का आधार लिया गया है।

1.6 अनुक्रमणिका

यह शोध प्रबंध कुल पाँच अध्यायों में विभाजित किया गया हैं। प्रथम अध्याय में शोध कार्य की ‘प्रस्तावना’ है। इसमें सम्पूर्ण शोध कार्य का परिचय संक्षिप्त में दिया गया है। द्वितीय अध्याय का शीर्षक ‘सुभद्रा कुमारी चौहान: सामान्य परिचय’ है। इसके अंतर्गत सुभद्रा कुमारी

चौहान का प्रतिभाशाली बचपन, शिक्षा, साहित्यकार सुभद्रा, समाज सुधारक सुभद्रा, देशभक्ति सुभद्रा, पुरस्कार, इत्यादि का विवरण दिया गया है| तृतीय अध्याय का शीर्षक‘ भारतीय समाज और स्त्री संघर्ष’ है। इसमें विभिन्न युगों में स्त्रियों का संघर्ष, वैदिक काल से नवजागरण काल तक है| स्त्रियों की समस्याएँ जैसे पर्दा-प्रथा, शिक्षा संबंधित समस्याएँ ,दहेज प्रथा, वेश्यावृत्ति,बाल विवाह इत्यादि पर चर्चा की गई है। चतुर्थ अध्याय में ‘सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानियों में स्त्री संघर्ष’| कहानियों का विश्लेषण किया गया है| पंचम अध्याय का शीर्षक ‘निष्कर्ष’ है। शोध का निष्कर्ष प्रस्तुत करके शोध संभावनाओं पर चर्चा की गई है|

आधार ग्रंथ

1. रूपा गुप्ता (संपादक) सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली भूषण तथा कहानियाँ, स्वराज प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण 2015 ।

संदर्भ ग्रंथ

1. आरती श्रीवास्तव, हिंदी की राष्ट्रीय साहित्य परंपरा के संदर्भ में सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य का अनुशीलन, हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय 2010। पृ.31

2. वही, पृ.33

3. वही, पृ.83

4. वही, पृ.161

5. वही, पृ.162

6. एम.आई. राजस्वी, राष्ट्रभक्त कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान, ज्ञान विज्ञान एजूकेयर, संस्करण 2022। पृ.104

सहायक ग्रंथ

1.वर्मा (संपादक) पथ के साथी, लोक भारती प्रकाशन, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद, संस्करण 1994।

2.डॉ.(श्रीमती) अजित गुप्ता, मधुमती, राजस्थान साहित्य अकादमी की मासिक पत्रिका, संस्करण 2007 l

3. डॉ.manjushree Menon, International Journal of creative Research Thoughts, volume 6, 2018

4. राकेश, स्वाधीनता आंदोलन और सुभद्रा कुमारी चौहान का साहित्य, यूनिवर्सिटी ऑफ़ दिल्ली, 2010 l

अंतरजाल

1. https://tau.id/if0t9

2. http://surl.li/mgeun

7.https://rb.gy/10tsq

द्वितीय अध्याय

सुभद्रा कुमारी चौहान : सामान्य परिचय

सुभद्रा कुमारी चौहान : सामान्य परिचय

2.1 प्रस्तावना

छायावाद युग में राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा के विकास में जिन कवियों ने उल्लेखनीय योग दिया, उनमें श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान का नाम अग्रगण्य है। अपने समूचे जीवन एवं साहित्य में उन्होंने न केवल अपने युग की विषम सामाजिक-राजनीतिक चुनौतियों का सामना किया बल्कि स्वाधीनता के लिए संघर्षरत तत्कालीन समाज में अपनी प्रखर काव्याभिव्यक्ति से नये प्राण फूंके। स्वाधीनता आंदोलन के इतिहास में यदि उनकी सक्रिय उपस्थिति है तो तत्कालीन हिन्दी काव्य को राष्ट्रीय स्वर देना भी उनकी विशिष्ट उपलब्धि है।

2.2 जन्म एवं परिवार

भारतीय स्वाधीनता आंदोलन की पहली महिला सत्याग्रही सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म 16 अगस्त 1904 ई. (श्रावण शुक्ल नागपंचमी संवत् 1961) को इलाहाबाद के पास निहालपुर गाँव में हुआ था। उनके पितामह ठाकुर महिपाल सिंह मानिकपुर के पास लोहदा गाँव के जमींदार थे। सन् 1857 की क्रांति के बाद जींदारी छिनने और आर्थिक स्थिति ठीक न रहने के कारण उन्हें मजबूरन निहालपुर आना पड़ा और वहाँ छोटे-छोटे कार्य करके अपनी रोजी-रोटी कमानी पड़ी। उनके पिता ठाकुर रामनाथ सिंह भगवद्भक्त और काव्य-रसिक थे। माता का नाम धिराज कुंवर था। सुभद्रा अपने माता-पिता की छठीं संतान थीं।

2.3 बचपन

सुभद्रा उस रूढ़िवादी मध्यमवर्गीय क्षत्रिय परिवार में जन्मी थीं, जहाँ छुआछूत का बोलबाला था और नौ-दस वर्ष की लड़की से परदा करवाया जाता था। परिवार में संध्या के समय नियमित रूप से भजन- कीर्तन हुआ करते थे, सुभद्रा उन्हें अत्यंत प्रेम व ध्यान से सुना करती थीं। 'जब वे मात्र तीन वर्ष की थीं तभी से लोग इनके निर्भीक किन्तु स्पष्ट उत्तरों के कारण इन्हें घण्टों छेड़ा करते थे। वे बचपन से ही बहुत चंचल, तीव्र-बुद्धि, सरल स्वभाव और मृदुभाषिणी थीं। पारिवारिक बंधनों के कारण स्त्रियों को घर से बाहर निकलने की मनाही थी, ऐसे में सुभद्रा चिल्ला-चिल्लाकर कहतीं कि हम घर के अंदर नहीं रहेंगे, हम पर्दे में नहीं रहेंगे, हम भी बाहर खेलेंगे, नीम पर झूला झूलेंगे। जब घर के आदमी अपने-अपने काम पर बाहर गये होते, तब चोरी से डरते-डरते वे झूला झूल लेतीं और धमा-चौकड़ी मचातीं।

दोनों बड़े भाइयों की प्रेरणा से इनकी शिक्षा का आरंभ, बड़े-बूढ़ों के विरोध के बावजूद, घर में ही हुआ। फिर धीरे-धीरे स्कूल जाने की भी शुरुआत हो गई। वे, उनकी बहनें व सहेलियाँ खेल-खेल में तुकबंदियाँ करती थीं। लोगों को सुभद्रा का यह गुण सबसे पहले मालूम हुआ। एक बार भाई राजबहादुर ने चारों बहनों को बुलाकर कहा कि घर के सामने जो नीम का पेड़ है उस पर तुम लोग कविता लिखो। सुभद्रा ने नीम के परोपकारी और गुणकारी रूप का वर्णन करते हुए जो कविता लिखी उसकी अंतिम पंक्तियाँ थीं –

तू रोगमुक्त अनेक जन को सर्वदा करती रहै ।

इस भांति से उपकार तू हर एक का करती रहै।

प्रार्थना हरि से करूँ हिय में सदा यह आस हो ।

जब तक रहे नभ-चन्द्र-तारे सूर्य का परकास हो।

तब तक हमारे देश में तुम सर्वदा फूलो-फलो ।

निज वायु शीतल से पथिक जन का हृदय शीतल करो।

नौ बरस की उम्र में लिखी सुभद्रा की यह कविता सन् 1913 में प्रयाग से निकलने वाली प्रसिद्ध पत्रिका 'मर्यादा' में छपी थी। सुभद्रा का हृदय प्रेम, स्नेह, दया तथा करुणा का अथाह भंडार था। बचपन से ही उनके मन में गरीबों के प्रति करुणा एवं सहानुभूति थी। वे सखी सहेलियों से प्रेम-भाव, नौकर-नौकरानियों से सदा स्नेह और दयालुता का व्यवहार करती थीं। जाड़े के दिन कड़ी सर्दी पड़ रही थी, नौकरानी की लड़की सुभद्रा की चारपाई के पास जमीन पर लेट गई। सुभद्रा ने उसे ठंड से ठिठुरते देखा तो उन्होंने अपनी रजाई उसे ओढ़ा दी। दरवाजे पर आये भिखारी को कुछ न कुछ देना वे अपना परम कर्तव्य समझती थीं।वे अपनी बात मनवाने के लिए खाना-पीना तक छोड़ देती थीं। क्षत्रियोचित दर्प उनकी रग-रग में भरा था। 'एक बार प्रयाग में हिन्दू-मुस्लिम दंगा हो गया। सारा मुहल्ला डर के मारे घर में छिपा बैठा था। किन्तु सुभद्रा सारी रात जागती रहीं और अपने छोटे-छोटे हाथों में बड़ी-सी तलवार लेकर बरामदे में यह कहती घूमती रहीं कि जो कोई आवेगा मैं इसी तलवार से मार डालूँगी।"

2.4 शिक्षा

सुभद्रा के बौद्धिक विकास का श्रेय उनके भाइयों को जाता है। उस युग में, जबकि स्त्रियाँ घर से बाहर नहीं निकलती थीं, रज्जू भैया अपनी बहनों को सुबह क्रास्थवेट तक छोड़ने जाते थे और शाम को स्कूल बंद होने के समय फाटक पर खड़े रहते थे कि फिर बहनों के साथ-साथ घर तक आयें। सुभद्रा की पढ़ाई क्रास्थवेट गवर्नमेंट स्कूल, प्रयाग में हाई स्कूल की आरंभिक कक्षाओं तक हुई थी। विनम्र व हंसमुख स्वभाव तथा कुशाग्र बुद्धि के कारण वे अपनी समस्त अध्यापिकाओं और सहपाठिनों के बीच अत्यंत लोकप्रिय हो गई थीं। वे अपनी क्लास में सबसे अव्वल रहती थीं।

पढ़ाई के अलावा सुभद्रा कुशल वक्ता भी थीं। वाद-विवाद प्रतियोगिता में अक्सर अपने स्कूल का प्रतिनिधित्व करती थीं। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के सिनेट हॉल में आयोजित दीक्षांत समारोह में स्कूल की ओर से जिन दो लोगों का भाषण हुआ, उनमें एक स्कूल की प्रिंसिपल मिस मानकर और दूसरा सुभद्रा का था।

विवाहोपरान्त सुभद्रा वाराणसी के थियोसॉफिकल स्कूल में पढ़ने गयीं, पर तभी असहयोग आंदोलन छिड़ गया और उन्होंने पढ़ाई छोड़ दी। इस प्रकार सुभद्रा की शिक्षा का क्रम थोड़े ही समय तक चल पाया। पर सबसे बड़ी शिक्षा तो मन के संस्कारों की हुई जिसमें दया, करुणा, उदारता और बंधुत्व की भावना विकसित हुई। यह शिक्षण अक्षर-ज्ञान के बिना भी संभव हुआ क्योकि जीवन के विद्यालय में अनेक संघर्षों और तरह-तरह के अनुभवों से अनजाने ही उनका सामना आजीवन होता रहा। इस दृष्टि सुभद्रा का जीवन बहुत सम्पन्न रहा।

सुभद्रा कुमारी चौहान की साहित्य-सर्जन में अभिरुचि पाँच-छह वर्ष की अवस्था में दृष्टिगत होने लगी थी और नौ वर्षीय सुभद्रा कुमारी चौहान की ‘नीम’ नामक प्रथम कविता उस समय की प्रसिद्ध पत्रिका ‘मर्यादा’ में प्रकाशित हो गई थी। वे जन्मजात कवयित्री थीं। उनकी कविताएँ उस समय की प्रसिद्ध पत्र-पत्रिकाओं ‘प्रभा’, ‘प्रताप’ आदि में प्रकाशित होने लगीं। इन कविताओं से वे साहित्य-जगत् में राष्ट्रीय कवयित्री के रूप में प्रतिष्ठित हो चुकी थीं और सन् 1930 में इन कविताओं के संग्रह ‘मुकुल’ पर उन्हें हिन्दी साहित्य सम्मेलन की ओर से लेखिकाओं को मिलने वाला सेकसरिया पुरस्कार मिला जिससे वे देशभर में राष्ट्रीय कवयित्री के रूप में प्रसिद्ध हो गई। ‘मुकुल’ की कविताएँ राष्ट्रप्रेम, दाम्पत्य-प्रेम और मातृत्व से ओतप्रोत हैं। ‘मुकुल’ में उनकी भावनाओं की उन्मुक्त अभिव्यक्ति को देखकर डॉ. रामकुमार वर्मा ने उन्हें ‘हिन्दी-साहित्य की कोकिला’ नाम से विभूषित किया है, “जो भावना की ऊँची डाल पर बैठकर गाती हैं।”

सुभद्रा कुमारी चौहान अपनी राष्ट्रीय कविताओं से देशभर में प्रसिद्धि प्राप्त कर चुकी थीं। उनकी राष्ट्रीय कविताओं और स्वाधीनता आंदोलन में उनके सक्रिय सहयोग ने उन्हें समस्त देशवासियों के लिए श्रद्धा और सम्मान का पात्र बना दिया था। सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपनी राष्ट्रीय कविताओं में अपनी राष्ट्रीय भावना को उड़ेल कर रख दिया है। राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत तथा तेज और ओज से युक्त ‘झाँसी की रानी’ से राष्ट्रीय काव्य का शुभारम्भ करते हुए सुभद्रा कुमारी चौहान ने ‘जलियाँवाला बाग में बसन्त’, ‘राखी’, ‘राखी की चुनौती’, ‘विजयादशमी’, ‘व्यथित हृदय’, ‘वे कुंजें’ आदि एक से बढ़कर एक आग्नेय राष्ट्रीय कविताओं की सृष्टि की।

कविता के बाद उन्होंने कहानी लिखना आरम्भ किया। कहानी लिखने का एक अन्य कारण यह भी था कि “उस समय कोई भी सम्पादक कविताओं पर पारिश्रमिक नहीं देता था। उन्होंने अपनी कहानियों से भी हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया।

सुभद्रा कुमारी चौहान स्पष्टवक्ता थीं। उन्हें देश और समाज में जहाँ जो अनुचित लगा उसके विरुद्ध आवाज उठाई। शक्तिशाली विदेशी सत्ता और रूढ़िग्रस्त भारतीय समाज की निरंकुशता और अमानवीयता का उन्होंने पुरजोर विरोध किया। मानव-स्वातन्त्र्य की चिर अभिलाषी सुभद्रा कुमारी चौहान ने आजीवन निःस्वार्थ भाव से देश और समाज के सुखद जीवन के लिए सराहनीय कार्य किए, उनकी कविताओं और कहानियों में जो निश्छलता एवं सरलता मिलती है वही उनका व्यक्तित्व था। सीधी बात को सीधी तरह से, सीधे सादे शब्दों में कहकर सबके मन के आंतरिक कोने तक पहुँच जाना ही उनकी विशेषता थी।

सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म एक परम्परावादी हिन्दू परिवार में हुआ था जिसमें रूढ़ियाँ, कुरीतियाँ दैनिक जीवन का अंग बन चुकी थीं। सुभद्रा कुमारी चौहान का रूढ़ियों और बंधनों से बचपन से नाता रहा था। उस समय पाँच-छह वर्ष की लड़कियाँ भी घर से बाहर निकलकर खेल-कूद नहीं सकती थीं, ऐसा करने पर उन्हें सजा मिलती थी। उन्होंने बचपन से ही रूढ़ियाँ और अनावश्यक बंधन देखे थे और कई बार झेले भी थे इसलिए इन रूढ़ियों और बंधनों के प्रति उनमें विद्रोह की भावना ने भी जन्म लेना आरम्भ कर दिया था। बचपन के उनके खेलों में रूढ़ियों के प्रति विद्रोह की भावना स्पष्ट देखी जा सकती है|

सुभद्रा कुमारी चौहान ने दूसरों के लिए रास्ता सुगम बनाने के प्रयास में अनेक कष्ट झेले थे लेकिन इससे उनके प्रयास में कभी कोई कमी नहीं आई अपितु वे अपने लक्ष्य-पथ पर निर्विकार भाव से आगे बढ़ती गईं। उनका लक्ष्य था देश की स्वाधीनता। इसके लिए स्त्रियों के सहयोग की भी आवश्यकता थी और स्त्रियाँ देश की स्वाधीनता में संपूर्ण सहयोग कर सकें इसके लिए यह अत्यावश्यक था कि उन्हें रूढ़ियों से मुक्त किया जाए। पर्दा प्रथा उस समय स्त्रियों के लिए एक बड़ी बाधा थी जिसके कारण वे मुखर होकर अंग्रेजी साम्राज्य का विरोध नहीं कर सकती थीं इसलिए सुभद्रा कुमारी चौहान ने पर्दे का अत्यधिक विरोध किया, "गोरखपुर का अखिल भारतीय कवि सम्मेलन था। इस सम्मेलन में संभ्रांत घरों की महिलाएं चिकों की ओट में बैठकर कविता सुन रही थीं। सुभद्राजी जब काव्य-पाठ करने मंच पर आयीं तो उन्होंने एक शर्त रखी। शर्त थी 'मैं देख रही हूं, कुछ माताएं और बहिनें चिकों के भीतर बदिनी बनी बैठी हैं। पर्दे में रहकर वे कैसे लक्ष्मीबाई और दुर्गावती बनेंगी? स्वाधीनता संग्राम केवल पुरुषों के बल बूते पर नहीं जीता जा सकता, स्त्रियों को भी आगे जाकर फिरगियों से जूझना पड़ेगा। जब तक ये चिके नहीं हटेंगी, तब तक मैं कविता नहीं पढ़ूंगी। देखते ही देखते स्वयं पर्देवालियों ने अपने हाथों से चिके हटा दीं।

यद्यपि सुभद्रा कुमारी चौहान किसी समाज-सुधारक संस्था की सदस्या नहीं थीं तथापि उन्होंने समाज-सुधार और विशेष रूप से स्त्री-सुधार के क्षेत्र में अनेक कार्य किए। उन्होंने रूढ़िग्रस्त हिन्दू समाज में स्त्रियों की दुर्दशा को देखा था और वे इस तथ्य से भलीभाँति परिचित थीं कि कानून बनाए बिना स्त्रियों की दशा में सुधार होना असंभव है इसलिए उन्होंने विधान सभा में

बहुपत्नीत्व के विरोध में और किन्हीं परिस्थितियों में स्त्री को तलाक मिल सके, इसके पक्ष में एक बिल पेश किया था।

सुभद्रा कुमारी चौहान ने रूढ़ियों के साथ-साथ जातिवाद के विरोध में भी आवाज उठाई थी। यद्यपि सुभद्रा कुमारी चौहान बाल्यकाल से ही जाति-भेदभाव की प्रबल विरोधी थीं तथापि गाँधी जी के अछूतोद्धार कार्यक्रम से भी वे अत्यधिक प्रभावित हुई थीं। गाँधी जी के आदर्शों का मनसा वाचा-कर्मणा निर्वाह करने वाली सुभद्रा कुमारी चौहान ने उनके अछूतोद्धार कार्यक्रम को हृदय से अपनाया था।

मानव मात्र के कल्याण की चिंता से उत्प्रेरित सुभद्रा कुमारी चौहान स्त्री के स्वतन्त्र व्यक्तित्व की प्रबल समर्थक थीं। उन्होंने रूढ़ियों, कुरीतियों और अनावश्यक बंधनों के विरोध में आवाज उठाई और पितृसत्तात्मक व्यवस्था को चुनौती देते हुए स्त्रियों के साथ हो रहे भेदभाव का पुरजोर विरोध किया। उन्होंने घोषणा की, ‘‘मनुष्य की आत्मा स्वतंत्र है। फिर चाहे वह स्त्री शरीर के अन्दर निवास करती हो चाहे पुरुष शरीर के अन्दर। इसी से स्त्री और पुरुष का अपना-अपना व्यक्तित्व अलग-अलग रहता है।‘‘ उन्होंने समाज में रूढ़ियों, कुरीतियों की भेंट चढ़ती स्त्री को विवशता, पीड़ा और शोषण को बहुत निकट से देखा था।

सुभद्राजी कवयित्री थीं| कहानी-लेखिका थीं, देश-सेविका थीं और समाज सेविका भी। किन्तु वे सबसे पहले मानवी थीं- पूर्णरूपेण मानवी। मानवता के सम्पूर्ण अंगों का उनमें चरम विकास देखने को मिलता था। मानव मात्र के लिए उनके हृदय में अपार करुणा, सहानुभूति और ममता थी।

कुमारी चौहान की बाल्यकाल की कविताओं में देशप्रेम और देशभक्ति का स्वर उनकी प्रतिभा का द्योतक था। इसके अतिरिक्त उनमें भाषण देने और त्वरित गति से काव्य-सर्जन की अद्भुत क्षमता थी। सुभद्रा कुमारी चौहान देशभर में राष्ट्रीय कवयित्री और स्वाधीनता सेनानी के रूप में प्रसिद्ध थीं। इसके अतिरिक्त वे समाज-सेविका, जनहितैषी कार्यकर्ता और जनप्रतिबद्ध नेत्री भी थीं। सम्पूर्ण देशवासियों की भाँति जबलपुर के जन-जन में उनके लिए अपार स्नेह और श्रद्धा थी|

नागपुर 'झण्डा सत्याग्रह' में भाग लेकर सुभद्रा कुमारी चौहान ने भारत के स्वाधीनता आंदोलन को शक्ति प्रदान करके आंदोलन में अपना अपूर्व योगदान दिया था। उन्होंने देश की स्वाधीनता के लिए भारत की स्त्री-शक्ति को नई दिशा देने का महत्त्वपूर्ण कार्य निष्पादित करके उस समय के बड़े-बड़े राजनीतिज्ञों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया था।

सुभद्रा कुमारी चौहान अपनी तेज और ओज से युक्त 'झाँसी की रानी' कविता द्वारा देशभर में राष्ट्रीय कवयित्री के रूप में प्रसिद्ध हुई थीं। अतः इस कविता से हिन्दी साहित्य में सुभद्रा कुमारी चौहान और 'झाँसी की रानी' में एक अभिन्न सम्बन्ध स्थापित हो गया है।

सुभद्रा कुमारी चौहान में देशप्रेम की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी। उनका जीवन देशप्रेम से संचालित था। देश की स्वाधीनता उनके जीवन का एकमात्र लक्ष्य था| स्वाधीनता सेनानी सुभद्रा कुमारी चौहान निडरता और साहस का साक्षात् प्रतिरूप थीं। स्वाधीनता आंदोलन में भाग लेने पर उन्हें अनेक बार जेल यात्राएँ करनी पड़ीं थीं किन्तु बार-बार की जेल यात्राएँ भी

उनमें अंग्रेजी शासन का भय उत्पन्न करने में विफल रही थीं। वे हर स्तर पर और हर जगह अंग्रेजों के विरुद्ध प्रचार करने में सबसे आगे रहती थीं|

सुभद्रा कुमारी चौहान ने जहाँ एक ओर अपने बच्चों में देशप्रेम और देशभक्ति की भावना जाग्रत करने के लिए समय-समय पर उन्हें ऐतिहासिक वीर चरित्रों की जीवनियों और कहानियों से सम्बन्धित पुस्तकें पढ़ने के लिए दीं वहीं दूसरी ओर उन्होंने उन्हें अन्याय-अत्याचार के विरुद्ध आवाज उठाने, शत्रु को कभी भी पीठ न दिखाने और देशहित में सदैव आगे रहने के लिए प्रेरित किया|

राष्ट्रीय कवयित्री और स्वाधीनता सेनानी सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपनी तेज और ओज से युक्त राष्ट्रीय कविताओं तथा स्वाधीनता आंदोलन में अपनी सक्रिय भागीदारी द्वारा देश के जन-जन में स्वाधीनता की चेतना जाग्रत करके स्वाधीनता आंदोलन में अविस्मरणीय योगदान दिया। उन्होंने अपने साहित्य को मानव-स्वाधीनता का शस्त्र बनाया और उसे अपने जीवन में आत्मसात् करके कथनी और करनी के भेद को जड़ से मिटा दिया। उनका प्रेरणादायी व्यक्तित्व भारत के जन-जन के लिए युगों-युगों तक स्मरणीय रहेगा।

1.वीर रस की प्रधानता- इनकी कविताओं में वीर रस और देशभक्ति का निरूपण हुआ है। इनकी कविताओं में उत्साह और ओज प्रकट होता है।

2. देशभक्ति – इनकी कविता में राष्ट्रीय चेतना, देशप्रेम, बलिदान की भावना प्रकट हुई है।

3. अनुभूतिपरकता- इनकी कविता में मुक्त अनुभूतियों का सहजता से प्रयोग हुआ है। नारी सुलभ मातृभाव की अनुभूति भी दिखाई देती है।

4. भाषा- इनकी भाषा सरस, सरल हिन्दी खड़ी बोली है। गीत और लोकगीतों की गायन शैली में अपने भावों को स्वर देने में ये सफल हुई हैं।

5. शैली- इनकी शैली ओजपूर्ण और सुकुमार है। गीत और लोकगीतों को गायन शैली में प्रस्तुत किया गया है।

6. अलंकार योजना- इनकी कविताओं में अलंकारों और प्रतीकों का अभाव है।

सुभद्राकुमारी चौहान अपनी सीधी-सरल, सुस्पष्ट और आडम्बरहीन खड़ी बोली में सशक्त भावों की अभिव्यक्ति के लिए जानी जाती हैं। इन्होंने कविता- कहानियों के साथ अपने साहसी व्यक्तित्व और कृतित्व से लोगों में स्वाधीनता के लिए राष्ट्रीय आन्दोलन की भावना को प्रबल किया। उन्हें जानने वाले बताते थे कि उनका स्वभाव बचपन से ही दबंग, बहादुर और विद्रोही था, जो उनकी लेखनी में भी दिखाई पड़ता है। राष्ट्रीय आंदोलन के साथ ही सुभद्राकुमारी चौहान स्त्रियों की स्वाधीनता की पुरजोर समर्थक रही हैं। वे तत्कालीन नारीवादी विमर्श के लिए प्रसिद्ध रही हैं। किन्तु उनका नारीवाद, वर्तमान नारीवाद की धारा जैसा बिल्कुल भी नहीं है। वातावरण चित्रण-प्रधान शैली की भाषा सरल तथा काव्यात्मक है, इस कारण इनकी रचना की सादगी हृदयग्राही है।

वास्तव में उक्त कथन को चरितार्थ करते हुए उनकी कहानियाँ आज भी प्रासंगिक हैं। वे उद्देश्यपूर्ण तो हैं ही, उनमें तत्कालीन समाज का यथार्थ चित्रण और राष्ट्रीय चेतना की प्रखर अभिव्यक्ति भी हुई है। नारी के प्रति सहानुभूति और उसके उत्थान की भावना की झलक उनकी कहानियों में दृष्टिगोचर होती है। जाति, धर्म और आचार-विचार संबंधी सामाजिक कुरीतियों का उद्घाटन व उनके निवारण की चेष्टा उनकी कहानियों का लक्ष्य है। इन विशेषताओं के कारण यदि उन्हें प्रेमचंद परंपरा की कहानी लेखिका कहा जाये तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।

2.5 पुरस्कार और सम्मान

• इन्हें 'मुकुल' तथा 'बिखरे मोती' पर अलग-अलग सेकसरिया पुरस्कार मिले।

• भारतीय तटरक्षक सेना ने 28 अप्रैल 2006 को सुभद्रा कुमारी चौहान को सम्मानित करते हुए नवीन नियुक्त तटरक्षक जहाज़ को उन का नाम दिया है।

• भारतीय डाक तार विभाग ने 6 अगस्त 1976 को सुभद्रा कुमारी चौहान के सम्मान में 25 पैसे का एक डाक टिकट जारी किया था।

जबलपुर के निवासियों ने चंदा इकट्ठा करके नगरपालिका प्रांगण में सुभद्रा जी की आदमकद प्रतिमा लगवाई जिसका अनावरण 27 नवंबर 1949 को कवयित्री और उनकी बचपन की सहेली महादेवी वर्मा ने किया। प्रतिमा अनावरण के समय भदन्त आनन्द कौसल्यायन, हरिवंशराय बच्चन जी, डॉ. रामकुमार वर्मा और इलाचंद्र जोशी भी उपस्थित थे। महादेवी जी ने इस अवसर पर कहा, नदियों का कोई स्मारक नहीं होता। दीपक की लौ को सोने से मढ़ दीजिए

पर इससे क्या होगा? हम सुभद्रा के संदेश को दूर-दूर तर फैलाएँ और आचरण में उसके महत्व को मानें- यही असल स्मारक है।

2.6 निधन

14 फरवरी को उन्हें नागपुर में शिक्षा विभाग की मीटिंग में भाग लेने जाना था। डॉक्टर ने उन्हें रेल से न जाकर कार से जाने की सलाह दी। 15 फरवरी 1948 को दोपहर के समय वे जबलपुर के लिए वापस लौट रहीं थीं। उनका पुत्र कार चला रहा था। सुभद्रा ने देखा कि बीच सड़क पर तीन-चार मुर्गी के बच्चे आ गये थे। उन्होंने अचकचाकर पुत्र से मुर्गी के बच्चों को बचाने के लिए कहा। एकदम तेज़ी से काटने के कारण कार सड़क किनारे के पेड़ से टकरा गई। सुभद्रा जी ने 'बेटा' कहा और वह बेहोश हो गई। अस्पताल के सिविल सर्जन ने उन्हें मृत घोषित किया। उनका चेहरा शांत और निर्विकार था मानों गहरी नींद सो गई हों। 16 अगस्त 1904 को जन्मी सुभद्रा कुमारी चौहान का देहांत 15 फरवरी 1948 को 44 वर्ष की आयु में ही हो गया। एक संभावनापूर्ण जीवन का अंत हो गया।

उनकी मृत्यु पर माखनलाल चतुर्वेदी ने लिखा कि सुभद्रा जी का आज चल बसना प्रकृति के पृष्ठ पर ऐसा लगता है मानो नर्मदा की धारा के बिना तट के पुण्य तीर्थों के सारे घाट अपना अर्थ और उपयोग खो बैठे हों। सुभद्रा जी का जाना ऐसा मालूम होता है मानो 'झाँसी वाली रानी' की गायिका, झाँसी की रानी से कहने गई हो कि लो, फिरंगी खदेड़ दिया गया और मातृभूमि आज़ाद हो गई। सुभद्रा जी का जाना ऐसा लगता है मानो अपने मातृत्व के दुग्ध, स्वर और

आँसुओं से उन्होंने अपने नन्हे पुत्र को कठोर उत्तरदायित्व सौंपा हो। प्रभु करे, सुभद्रा जी को अपनी प्रेरणा से हमारे बीच अमर करके रखने का बल इस पीढ़ी में हो।

2.7 कृतित्व

'बिखरे मोती' उनका पहला कहानी संग्रह है। इसमें भग्नावशेष, होली, पापीपेट, मंछलीरानी, परिवर्तन, दृष्टिकोण, कदम्ब के फूल, किस्मत, मछुये की बेटी, एकादशी, आहुति, थाती, अमराई, अनुरोध, व ग्रामीणा कुल १५ कहानियां हैं| उन्मादिनी दूसरा कहानी संग्रह है जिसमें उन्मादिनी, असमंजस, अभियुक्त, सोने की कंठी, नारी हृदय, पवित्र ईर्ष्या, अंगूठी की खोज, चढ़ा दिमाग, व वेश्या की लड़की कुल ९ कहानियां हैं।'सीधे साधे चित्र' सुभद्रा कुमारी चौहान का तीसरा व अंतिम कथा संग्रह है। इसमें कुल १४ कहानियां हैं। रूपा, कैलाशी नानी, बिआल्हा, कल्याणी, दो साथी, प्रोफेसर मित्रा, दुराचारी, मंगला हींगवाला, राही, तांगे वाला, एवं गुलाबसिंह आदि| सुभद्रा कुमारी चौहान ने कुल ४६ कहानियां लिखी और अपनी व्यापक कथा दृष्टि से वे एक अति लोकप्रिय कथाकार के रूप में हिन्दी साहित्य जगत में सुप्रतिष्ठित हैं।

कहानी संग्रह :-बिखरे मोती (1932), उन्मादिनी (1934), सीधे-साधे चित्र (1947) कविता संग्रह मुकुल, त्रिधारा | बाल-साहित्य:-झाँसी की रानी, कदम्ब का पेड़, सभा का खेल |

सुभद्रा जी की अधिकांश कहानियाँ किसी न किसी सत्य घटना पर आधारित है| सुभद्रा कुमारी चौहान ने जितना साहित्य रचा, वह उनके साहित्यिक व्यक्तित्व को चरितार्थ करता है, साथ ही इस संभावना की ओर ध्यानाकर्षित करता है कि यदि वे कुछ और समय सृजनरत रहतीं

तो हिन्दी साहित्य कुछ और समृद्ध होता। अंतत : हम कह सकते हैं कि सुभद्रा जी ने अपने साहित्यिक योगदान से हिंदी जगत में अपना एक निश्चित स्थान निर्माण किया है।

संदर्भ

1.रूपा गुप्ता, (संकलन व संपादन) सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली (भाषण तथा कहानियाँ) स्वराज प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण 2015 ।

2.महादेवी वर्म, (पथ के साथी) लोक भारती प्रकाशन १५ए महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद, संस्करण 1994 |

3.आनंद प्रकाश, (संपादन) सुभद्रा कुमारी चौहान की श्रेष्ठ कहानियां, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन,वसंत कुंज, नई दिल्ली, संस्करण 2005|

4.डॉ. मधु शर्मा, (सम्पादन) सुभद्रा कुमारी चौहान की सम्पूर्ण कहानियाँ, राजपाल एण्ड सन्ज़, मदरसा रोड, कश्मीरी गेट-दिल्ली, संस्करण 2012 |

अंतरजाल

1.https://imvashi.com/subhadra-kumari-chauhan-biography-hindi/

2.https://shorturl.at/bequE

3.https://nibandhbharti.com/subhadra-kumari-chauhan-par-nibandh/

4.https://shorturl.at/ILM46

5.https://shorturl.at/sH349

6.https://shorturl.at/moqGQ

<u>तृतीय अध्याय</u>

<u>भारतीय समाज और स्त्री संघर्ष</u>

भारतीय समाज और स्त्री संघर्ष

भारत में महिलाओं की स्थिति एक समान नहीं है बल्कि प्राचीन काल से आधुनिक काल यानी वर्तमान समय तक परिवर्तनशील रही है। भारतीय समाज में स्त्रियों की जो दुर्दशा हो रही है, वह अन्य किसी भी देश की स्त्रियों की न हुई है। उनके जीवन में काफी उतार- चढ़ाव आए हैं। उनके अधिकारों में भी बदलाव दिखाई पड़ रहा है। आज हमारे यहां स्त्री होना ही पाप माना जाता है। सदियों पहले से ही स्त्रियों की भारतीय समाज में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। जब एक घर में ईश्वर की कृपा से एक लड़की का जन्म होता है, उसके मां-बाप को नाना प्रकार की चिताओं से गुजरना पड़ता है। और जब घर में पुत्र का जन्म होता है तो खुशियाँ मनाई जाती है। और लड़की पैदा होने पर दुख मनाया जाता है। यदि इस जीवन में लड़कियां ना हो तो यह सृष्टि ही न चले। भारतीय समाज में स्त्री को एक तरफ से शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित क्या है तो दूसरी ओर से उसे 'बेचारी अबला' भी कहा जाता हैं।

प्राचीन काल से हमारा समाज आज भी आधुनिक युग तक पुरुष प्रधान ही रहा है। पुरुष समाज ने स्त्री समाज को अपना गुलाम बना लिया है। जितने भी जटिल- से- जटिल नियम किसी के लिए बन सकते थे, स्त्री समाज के लिए बनाए गए हैं। स्त्री के सारे अधिकार छीन ले गए हैं। यहां तक कि उन्हें संतान उत्पन्न करने की मशीन ही मानी जाने लगी।

भारतीय समाज में आज भी स्थिति वैसी की वैसी है जिसे लोग महिलाओं को एक वस्तु की तरह मानते हैं। आज की स्त्री शिक्षित है और हर एक क्षेत्र में अपनी भूमिका अच्छी तरह से निभा रही है, तो आवश्यकता इस बात की है कि वास्तव में उन्हें आर्थिक, सामाजिक और

राजनीतिक न्याय प्रदान किया जा रहा है। जैसे कि समय-समय पर नियम और कानून बनाए गए हैं लेकिन आज की सच्चाई यह है कि नियम और कानून मुख्य रूप से उच्च वर्ग की महिलाओं तक ही सीमित है। उनसे सारे अधिकार छीन ले गए, वे केवल घर की साधारण दासी बन गई है। आज भी महिलाओं का शोषण किया जा रहा है। जैसे कि उनका एक पैर घर की रसोई की चौखट के अंदर होती है तो दूसरा पैर घर से बाहर होता है। स्त्री का जीवन घर, परिवार तक ही सीमित है घर की जो लक्ष्मण रेखा है उसे आज भी घेरे हुए हैं।

हमारे यहाँ स्त्री के लिए समाज में कोई भी हक नहीं है। जैसे पैदा होने पर पिता के युवावस्था में पति और वृध्दावस्था में पति के अभाव में पुत्र या पिता, भाई आदि के आश्रय में ही उन्हें रहने का आदेश यहाँ के धर्म-शास्त्रों ने दिया है। स्त्रियों के पास या उनका अपना कोई भी वास्तविक सम्मान नहीं है। स्त्रियों की किस्मत ही ऐसी है कि 'उपयोग करो और फेंक दो' ।

इस समाज में स्त्री और पुरुष दोनों ही एक गाड़ी के दो पहिए के समान होते हैं। यदि एक पहिया बिल्कुल कमजोर हो गया है और दूसरा मजबूत है, तो कभी वहां गाड़ी ठीक– ठीक चल ही नहीं सकती। स्त्री जाति ही एक ऐसी है जो पति के लात, गाली- गलौज आदि सहते हुए भी देसी सरलमना बनी रहती है। कभी भी पति के प्रति तिरस्कार नहीं करती। इसका कारण यही है कि वे निष्कपट प्रेम करने वाली होती है। वे अपने को सदैव नीचे गिरी हुई मानती है। ऐसा माना जाता है कि जहाँ स्त्री की पूजा होती है वहीं पर ईश्वर स्थान करते हैं। और यह भी कहां गया है कि पत्नी पुरुष का आधा भाग होती है, पर आज की स्थिति एकदम भिन्न हो चुकी है।

3.1 विभिन्न युगों में स्त्रियों का संघर्ष

3.1.1 वैदिक काल –

वैदिक काल में स्त्रियों की स्थिति अत्यंत उन्नत अवस्था में थी। स्त्रियों को शिक्षा प्राप्त करने में कोई प्रतिबंध नहीं था। साथी स्त्रियों को परिवार और समाज में विशेष स्थान था। लड़की को अपने जीवन– साथी चुनने की पूर्ण स्वतंत्रता थी। चाहे वह कुंती हो, सीता हो, या फिर अन्य कोई कन्या हो। उसी के साथ अपने पिता के संपत्ति में भी बराबरी का हक़ था। इस काल में उनका व्यक्तित्व एकदम सुरक्षित था। 17-18 वर्षा की आयु से पूर्व लड़कियों के विवाह नहीं होते थे। बाल विवाह की प्रथम नहीं थी। विधवाओं के पुनर्विवाह पर कोई प्रतिबंध नहीं था। बल्कि स्त्रियों को नियोग का भी अधिकार था। इस तरह सामाजिक और धार्मिक सभाओं में भी उनका प्रमुख स्थान था। इस काल में स्त्री धार्मिक जीवन में पति की सहयोगिनी थी। बिना स्त्री के कोई भी कार्य या धार्मिक कार्य को अधूरा माना जाता था। पुरुष स्त्री के बिना अर्थ, काम पुरुषार्थ धर्म, मोक्ष, की प्राप्ति या कल्पना कभी भी नहीं कर सकता था, क्योंकि स्त्री के बिना पुरुष अधूरा था। इसलिए इस युग में उन्हें सम्मान दिया जाता था। तथा स्त्री को ‘गृहलक्ष्मी’ माना जाता था। इसलिए इस वैदिक युग को भारतीय समाज का ‘स्वर्ण युग’ माना जाता हैं।

3.1.2 उत्तर वैदिक काल –

उत्तर वैदिक काल में स्त्रियों की स्थिति कायम न रह सकी जैसे वैदिक काल में कायम थी। इस काल में स्त्रियों की स्थिति में बदलाव होने लगा। जैसे कि उनकी शक्ति, प्रतिभा, स्वतंत्रता के विकास पर प्रतिबंध लगने लगे। स्त्रियाँ खेती देखने का काम, कपड़े बुनने, आदि कामों के साथ घर- ग्रहस्थी की देखभाल में समय बिताती थी। बाल-विवाह का प्रचार नहीं था। विधवा का पुनर्विवाह पर पूरी तरह से निषेध किया गया और 'बाल- विवाह' का आरंभ हो गया। उनकी शिक्षा में बाधा आने लगी साथ ही उनकी स्वतंत्रता को, उनकी शक्ति को सीमित कर दिया गया। अर्थात स्त्रियों को घर में ही चार दीवारों में कैद किया जाने लगा, वे उन्हें सम्मान या अधिकार प्राप्त नहीं था । स्थिति यहाँ तक आ गई की लड़की का पैदा होना अभिशाप माना जाने लगा।

3.1.3 मध्ययुगीन काल –

इस युग में स्त्रियों की स्थिति में और गिरावट आई । स्त्री शिक्षा एकदम समाप्त हो गई। लड़कियों के अपहरण की घटनाएँ बढ़ी तो हिंदुओं में छोटी-छोटी बच्चियों का विवाह किया जाने लगा। उसी के साथ पर्दा-प्रथा भी प्रारंभ हो गई। लड़की जरा सयानी होने पर उसका घर से बाहर निकलना बंद किया जाने लगा। स्त्रियों का जीवन का दायरा घर की चार दिवारी तक ही सीमित हो गया। उसी के साथ सती- प्रथा चरम सीमा तक पहुँच गई। स्त्रियों के अधिकार छीन लिए गए। मुग़ल राज्य होने से स्त्रियों की स्थिति और भी जटिल होती गई। इस युग में स्त्रियों को उपभोग की वस्तु बनाया गया।

3.1.4 नवजागरण काल–

इस काल में भारतीय समाज की स्त्रियों की स्थिति को दो उपशीर्षको के अंतर्गत किया जाता हैं। i) स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व और ii) स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद|

स्त्रियों का जीवन आजादी से पूर्व एकदम संघर्षमय था, जैसे आर्थिक, पारिवारिक, सामाजिक समस्याओं से झुजती रही। जैसे कि स्त्रियों को अशिक्षा, बाल विवाह, आर्थिक पराधीनता, विधवा पुनर्विवाह निषेध, दहेज, बहुपत्नी प्रथा और मुसलमान के आक्रमणों का शिकार बनना पड़ा । और जैसे-जैसे अंग्रेजो का शासन काल में स्त्रियों के जीवन में सुधार होता गया । भारत की आजादी के बाद स्त्रियों की स्थिति- तथा परिस्थिति में सुधार होता रहा । आज भारतीय स्त्री को अपना जीवन साथी चुनने का पुरा हक़ हैं। स्थिति इतनी बदल चुकी है कि आज किसी भी क्षेत्र में वे स्त्री पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है। उन्हें पारिवारिक संपत्ति में भी पुरा अधिकार है।

महात्मा गांधी, राजा राम मोहन रॉय, महात्मा फुले जैसे सुधारकों का ध्यान समाज- सुधार और स्त्री – शिक्षा, साथी ही स्त्रियों के सम्मान के लिए बेहद प्रयत्न किये और बाल विवाह, सती प्रथा पर प्रतिबंध विधवा-विवाह की स्वीकृति, स्त्रियों के संपत्ति- अधिकार जैसे कानून बनाकर उन्हें सामाजिक अन्याय से मुक्त किया। स्वतंत्रता मिलने के बाद स्त्री के जीवन में अत्यंत बदलाव आ गया । ज्ञान, विज्ञान, शासन कार्य, चिकित्सा और सैनिक भी बनाकर देश की रक्षा के लिए साहस के साथ खड़ी रहने लगी । लेकिन स्त्रियों पर जो अत्याचार, अन्याय हो रहा है उसके

खिलाफ आवाज उठाये l ज्यादातर स्त्रियाँ अपने घर परिवार और समाज के खिलाफ कदम उठाने का साहस नहीं जुटा पाती हैंl

आज भी स्त्रियाँ हर जगह असुरक्षित ही हैl सबको यहां डर लगा रहता है कि सुबह घर से कम पर निकलने वाली महिलाएँ शाम को सुरक्षित घर पहुँचे l देखा जाए तो आज भी समझ में स्त्रियों को अपनी इज्जत की भीख मांगनी पड़ रही हैl हमारा समाज शिक्षित होकर भी स्त्रियों को सम्मान नहीं देता हैl आज भी स्त्रियों को लड़के अपने जाल में फसाते हैंl

3.2 स्त्रियों की समस्याएँ

3.2.1 पर्दा-प्रथा :-

प्राचीन काल से यह परंपरा चलती आ रही है। आज भी कहीं गांव में पर्दा प्रथा को माना जाता है। पर्दा प्रथा एक ऐसी प्रथा है जहां पर महिलाओं को खुले आम बात करना मना है सिर्फ वे घूँघट में ही रहना पड़ता है। दूसरे पुरुषों से दूर रहकर बातें करना, खुले मुंह से ना बोलना आदि, पुरुषों को चेहरा नहीं दिखना चाहिए। यह समस्या शादी के बाद स्त्रियों को झेलनी पड़ती है। वे मुक्त रूप से नहीं घूम सकती है। स्त्रियों के व्यक्तित्व में विकास नहीं होता है।

3.2.2 शिक्षा संबंधित समस्याएँ :-

उत्तर भारत जैसे राज्य में युपी, बिहार में ज्यादातर स्त्रियाँ अशिक्षित होती है। शेरों से ज्यादा गांव की महिलाएँ अशिक्षित है लेकिन आज के समय में काफी विकास हो गया है कि ग्रामीण लड़कियाँ डॉक्टर, इंजीनियरिंग तक शिक्षा प्राप्त की है। लेकिन ऐसे कारण है जिसकी वजह से लड़कियां शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाती है जैसे की चार दिवारी के अंदर ही रहना पड़ता है, पर्दा प्रथा और साथ ही गरीब होने के कारण शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकते हैं। स्त्रियों को पढ़ना नहीं चाहिए ऐसे उनकी सोच होती है। इस वजह से वह आगे नहीं बढ़ पाती है। इस वजह से स्त्रियों को पति पर ही निर्भर रहना पड़ता है।

3.2.3 दहेज प्रथा:-

दहेज प्रथा भारतीय समाज की सबसे प्रमुख समस्याओं में से एक हैं। 'दहेज' देना और लेना एक अभिशाप माना जाता है। सदियों से चली आ रही यह प्रथा आज भी जैसे कि वैसे ही है। स्त्री गरीब परिवार से होने के कारण दहेज नहीं दे पाती है। इस वजह से उसका विवाह टूट जाता है। दहेज के नाम पर वे घर कपड़ा, मकान, सोना, गाड़ी, पैसे आदि मांगते हैं।

3.2.4 वेश्यावृत्ति :-

यह सामाजिक बुराई मानी जाती है, जो प्राचीन काल से चलती आ रही है। आज भी स्त्रियाँ यह व्यापार करती है। विधवा विवाह, बाल विवाह, गरीब आर्थिक स्थिति के कारण, दुखी वैवाहिक जीवन आदि ये ऐसे कारणों के वजह से यह व्यवहार करते हैं । ऐसी स्त्रियों को समझ नहीं अपनाते हैं। वे उन्हें अलग नजरों से देखा जाता है। आज भी अनेक स्त्रियों है जो ऐसा व्यवहार करके अपना पेट पालते हैं। वे एक प्रकार से अपने जीवन पर शारीरिक रूप से अत्याचार सहन करते हैं।

3.2.5 परिवार संबंधित समस्याएँ :-

भारत में संयुक्त परिवार ही पाया जाता है। जहां पर पुरुष घर का मुखिया होता है। वे खुद ही घर का सारा फैसला लेता है। महिलाओं को कोई भी अधिकार नहीं होता है वह उन्हें एक दासी की तरह अपना जीवन बिताना होता है। उनका पूरा जीवन परिवार की देखभाल करने में ही जाता है। जैसे कि बच्चों को जन्म देना, सेवा करना, खाना बनाना आदि । वे अपने सपनों का

त्याग करना पड़ता है। और समाज में आगे नहीं बढ़ पाती है। दूसरों के लिए जीना पड़ता है खुद के लिए कुछ भी नहीं कर सकती है ।

3.2.6 बाल विवाह :-

कम उम्र में ही स्त्रियों का विवाह किया जाता है। वे माता-पिता अपनी बेटी को बोझ समझती हैं इस वजह से उसके हाथ जल्द ही पीले किए जाते हैं वे खुद मुक्त हो जाते हैंले इस वजह से स्त्रियों की पूरी जिंदगी बर्बाद हो जाती हैले वे अपने बच्चों के सपनों को मारते हैं। जिस उम्र में शिक्षा देने के बजाय उनका विवाह किया जाता है और वह घर और बच्चों को संभलने तक ही उनका जीवन बितता है। गांव में ज्यादातर यह स्थिति देखने को मिलती है। स्त्री अपने हक के लिए लेट भी नहीं सकती है। वे चुपचाप सब सहन करती है।

सदियों से स्त्री अनेक विडम्बनाओं, विसंगतियों के बीच जी रही है। स्त्रियों के जीवन में कई सारे उतार-चढ़ाव आए हैं | लेकिन आज वर्तमान में वे कमर कसकर हर कार्य में भाग लेकर समाज में बराबरी का हिस्सा पा रही है। वे पुरुषों से कंधे से कंधा मिलकर आगे बढ़कर अपने जीवन की राह पर चल रही है। स्त्रियों को बचपन से ही शिक्षा देनी चाहिए| उन्हें अपने पैर पर खड़ा होना चाहिए| अगर उनके साथ कुछ गलत हो रहा है तो आवाज उठानी चाहिए| तभी हमारा डर मिट जाएगा और हम समस्याओं से मुक्त हो जाएँगे| आज की स्त्री किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं है। और यही है आज की 'भारतीय स्त्री' ।

संदर्भ

1.डा. सुभी धुसिया, भारतीय समाज में महिलाएं, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, संस्करण 2009 |

2.डॉ. संजय गर्ग, (संपादक) स्त्री विमर्श का कालजयी इतिहास, सामयिक प्रकाशन, जटवाड़ा, नेताजी सुभाष मार्ग दरियागंज, नई दिल्ली, संस्करण 2012 l

3.आशारानी व्होरा, औरत : कल, आज और कल, कल्याणी शिक्षा परिषद् प्रकाशन, जटवाड़ा, दरियागंज, नई दिल्ली, संस्करण 2011 l

4.डॉ. सौ. मंगल कप्पीकेरे, साठोत्तरी हिन्दी लेखिकाओं की कहानियों में नारी,विकास प्रकाशन, 311 सी. विश्व बैंक, बर्रा, कानपुर, संस्करण 2002|

5.शान्ति कुमार स्याल, भारतीय नारी और पश्चिमीकरण, आर्य प्रकाशन मंडल, सरस्वती भंडार, गांधीनगर दिल्ली,संस्करण 2013 l

6.मोजम्मिल हसन 'आरज़ू', भारतीय महिला एवं आधुनिकीकरण, प्रकाशन अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, संस्करण 2017 l

7.डॉ० प्रभावती जड़िया, हिन्दू नारी कार्यशीलता के बदलते आयाम,अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, संस्करण 2003 l

चतुर्थ अध्याय

सुभद्रा कुमारी चौहान के कहानियों में चित्रित स्त्री

सुभद्रा कुमारी चौहान के कहानियों में चित्रित स्त्री

4.1 कहानियों का कथानक

4.1.1 भग्नावशेष :-

इस कहानी की मुख्य पात्र लेखिका है| एक दिन एक काव्य प्रेमी रेलवे जंक्शन से बाहर कवि सम्मेलन के पोस्टर देखता है और वह खुद उस शहर में रुक कर रात में कवि सम्मेलन का आनंद लेता है| वहाँ एक श्रीमती कविता पढ़ती है वह श्रोता उनकी कविता सुनकर प्रभावित होता है और उस कवयित्री के घर पहुंच कर उनसे भेंट कर आता है| कुछ दिन बाद वह पुन: उसके काम से उसी नगर में जाता है और कवयित्री से मिलने की चेष्टा करता है तो पता चलता है कि कवयित्री के पिता का देहांत हो चुका है और उसके मामा उसको अपने घर लेकर चले जाते है| 10 वर्ष बाद उसे वहां कवियत्री दिखाई देती है| उसका चेहरा सुंदर पर मुरझाया हुआ था आँखें बड़ी-बड़ी, किंतु दृष्टि बड़ी ही कमजोर थी| कपड़े साधारण और कुछ मैले से थे | गोद में एक साल भर का बच्चा था आसपास दो-तीन बच्चे थे| कवयित्री रुँधे कंठ से कहती है- ‘लिखने-पढ़ने की बात अब आप मुझसे कुछ न पूछें।‘तभी एक अधेड़ व्यक्ति उनके पास आता है। वह अपने पूर्व परिचित का अपने अधेड़ पति से परिचय कराने का प्रयत्न करती है, किन्तु वह अधेड़ व्यक्ति कड़क कर बोलता है ‘चलो भी, परिचय फिर हो लेगा’ और वह करुणा, कातरता और विवशता भरी दृष्टि से एक बार परिचित को निहार कर पति के पीछे चल देती है।

4.1.2 होली :-

यह कहानी एक शराबी व्यक्ति की पत्नी के दुखद जीवन की कहानी है। नरेश होली खेलने की इच्छा जताता है, किन्तु उसके जीवन में होली खेलने का सुख नहीं है| तभी करुणा का पति जगत प्रसाद नशे में धुत घर में प्रवेश करता है। जगत प्रसाद आज जुए में 1500 रुपये जीत कर लाता है। वह करुणा से रुपये रखने को कहता है किन्तु कर्मठ और ईमानदार स्वभाव वाली करुणा रुपये की ओर देखती भी नहीं है। करुणा के इस तिरस्कारपूर्ण व्यवहार से जगत प्रसाद क्रोध से तिलमिला उठता है। वह बड़बड़ाता हुआ घर से बाहर निकलने लगता है| करुणा उसे रोकने के लिए दौड़ती है। जगत प्रसाद उसे ठोंकर देता है तो वह पत्थर से टकराकर गिर जाती है| जिसकी वजह से उसका सर फूट जाता है और खून की धारा बहती है।

नर्तकी पर पैसों की बौछार करने वालों में जगत प्रसाद सबसे आगे था। 'इधर करुणा भूखी-प्यासी, छटपटाती हुई चारपाई पर करवटें बदल रही थी।' तभी नरेश पिचकारी लिए करुणा के घर पहुँचा किन्तु खून से लथपथ करुणा को देख उसके हाथ की पिचकारी छूट गयी। उसने आश्चर्य से पूछा- 'भाभी, यह क्या ?' करुणा की आँखे छलछला आयीं। उसने रुँधे कंठ से कहा 'यही तो मेरी होली है भैया !' वास्तव में 'होली' एक शराबी वेश्यागामी, जुआरी की सद्गृहिणी की करुण कथा है जिसे होली जैसे आनंदपर्व के दिन भी शारीरिक एवं मानसिक आघात सहने पड़े तथा भूख की पीड़ा भोगनी पड़ी।

4.1.3 मँझली रानी :-

यह तारा नाम की लड़की की कहानी है, जिसका पिता गरीब है। पिता कुलीनता और समृद्धि के मोह में अपनी पढ़ी-लिखी बेटी का विवाह एक ताल्लुकेदार के लम्पट बेटे से कर देता है। राजा साहब को तारा अपने मंझले बेटे के लिये पसन्द आ जाती है और उसकी शादी तय हो जाती है| तारा के भाइयों को राजा साहब का मंझला और कम पढ़ा-लिखा बेटा पसन्द नही था| किन्तु पिताजी कहता है की 'मेरी तारा तो रानी बनकर रहेगी|

जिठानी को छोटी बहु पसन्द नही थीं| वह उससे नफरत करती है| ससुराल में पाँच दिन उसे पाँच वर्ष की तरह लगने लगे । इसके बाद वह मायके आ गई, वह अपने साथ हारमोनियम और थोड़ी-सी किताबें भी लेकर गयी थीं। महल में तारा के पास नौकर-चाकर थे। मंझले राजा चार-छै दिन में केवल घंटे-आध घंटे के लिए ही कमरे में आते थे। घर में एक मास्टर साहब आते थे। इधर मास्टर साहब अच्छी-अच्छी किताबें मैझली रानी तारा को लाकर देने लगे। एक दिन मास्टर साहब मँझली रानी को उसके कक्ष में एक पुस्तक देने घुसे ही थे कि ताक में खड़ी बड़ी रानी ने कमरे का दरवाजा बाहर से बंद कर दिया और बड़े राजा को बुलाकर तारा को चरित्र भ्रष्ट सिद्ध कर दिया। मास्टर साहब का घर से निष्कासन हो गया। मैझली रानी को मायके भेज दिया गयी। लेकिन मायके में भी उसे घुसने न दिया गया।

एक दिन बुढ़िया का मोटर से दुर्घटना होती है साथी उसे बचाने में तारा भी घायल होती है| दोनों को अस्पताल में भर्ती किया जाता है| बुढ़िया तो मर जाती है| घायल तारा को देखने के लिए मास्टर बाबू आए है| मास्टर बाबू तारा को अपने साथ ले जाते हैं| तारा सोचती है की 'वे मेरे कौन हैं? वे मुझ पर माता की तरह ममता और पिता की तरह प्यार करते हैं, भाई की तरह सहायता और मित्र की तरह नेक सलाह देते हैं, पति की तरह रक्षा और पुत्र की तरह आदर करते हैं। कुछ न होते हुए भी वे मेरे सब कुछ हैं। और सब कुछ होते हुए भी वे मेरे कुछ नहीं हैं।'"

4.1.4 परिवर्तन :-

इस कहानी में ठाकुर खेतसिंह नाम के एक इलाकेदार है। 'ठाकुर साहब का नाम इलाके भर में छाया हुआ है। उनकी नादिरशाही को कौन नहीं जानता था? किसी की सुन्दर बहू-बेटी ठाकुर साहब के नज़र तले पड़ भर जाए, और उनकी तबीयत आ जाए, तो फिर चाहे आकाश-पाताल एक ही क्यों न करना पड़े, किसी न किसी तरह वह ठाकुर साहब के पास पहुँच ही जाती है।

ठाकुर साहब का एक चचेरा भाई था 'हेतसिंह'। वह उनके पास ही रहता था। वह पढ़ा-लिखा, नेक और सच्चरित्र युवक था। उससे यह सब न देखा जाता था। एक दिन ठाकुर साहब के यहाँ की नवविवाहिता सुन्दर बहू उड़ाकर लायी गयी थी। यह जानकर उसमें प्रतिहिंसा का भाव जाग गया। वह रिवाल्वर लेकर ठाकुर साहब के पास पहुँचा और बोला- 'भैया क्या मनका कुम्हार की बहू घर में है? यदि हो तो आप उसे वापस पहुँचवा दीजिए।' खेतसिंह ने उसकी एक न सुनी

और अपने काम से काम रखने की कठोर चेतावनी दी। हेतसिंह यह व्यवहार सह न सका। उसने जेब से रिवाल्वर निकाली और लगातार तीन फायर कर दिये। ठाकुर साहब साफ बच गये |

एक बार वह अपनी बुआ की लड़की चम्पा के विवाह में थे। चम्पा निडर और स्पष्टवादी थी। उसने ठाकुर खेतसिंह से कहा ‘दादा, अब आप इन आदतों को छोड़ दें तो अच्छा हो। कुछ दिनों बाद चम्पा के पति नवल किशोर के मित्र संतोष ने उसे सपरिवार घर आने का निमंत्रण दिया। अलीगढ़ स्टेशन पर वे ट्रेन से उतरे। चम्पा सामान के पास अकेली बैठी थी। मौका देख ठाकुर साहब ने चम्पा को बेवकूफ बनाकर गाड़ी में उठाकर हवेली ले गये। वहाँ चम्पा को रेशमी वस्त्र व दिव्य भोजन देने की चेष्टा की गयी। पर वह भूखी प्यासी बैठी रही। रोते-रोते उसे नींद आ गयी। सुबह हुई तो देखा कि एक महिला उसकी कंघी चोटी करने को आयी है। चम्पा ने उसे झटक कर दूर कर दिया। तभी वहाँ किसी के आने की आहट हुई। चम्पा ने पीछे की ओर मुड़कर, देखा वह सहसा चिल्ला उठी दादा! ठाकुर खेत सिंह के मुँह से निकल गया- बेटी। उस दिन से उस गाँव में किसी स्त्री पर कोई कुदृष्टि न डाल सका।

4.1.5 दृष्टिकोण :-

बाल-विधवा, दोहरे चरित्र तथा भारतीय समाज में नारी की दीन-हीन स्थिति को लेकर लिखी गयी इस कहानी में विश्व प्रेम की उपासिका निर्मला के चरित्र का अंकन है। निर्मला साधारण पढ़ी-लिखी किन्तु साहित्य-प्रेमी महिला है। निर्मला के पति प्रोफेसर रमाकान्त उसके स्वभाव के एकदम विपरीत हैं। रमाकान्त और निर्मला का जोड़ा बड़ा सफल था, परन्तु भीतर से दोनों में मतभेद रहता था। निर्मला सुबह-शाम घूमने के बहाने घर से निकलती और सामाजिक कार्य करती

है। निर्मला की सास को उसका घूमना-फिरना पसंद नहीं था , एक दिन कालेज से लौटने पर प्रोफेसर रमाकान्त ने कहा कि बाल विधवा बिटूटन के चार-पाँच माह का गर्भ है। उसे घर से निकाल दिया गया। बिट्टन की इस दशा पर निर्मला को दया आ गई। उसने कहा- 'ऐसे में बेचारी कहाँ जाएगी?' थोड़ी देर में निर्मला ने कहा कोई व्यवस्था न होगी तो वह उसे घर लाएगी। रमाकान्त उसकी इस बात से घबरा गए। उन्होंने कहा तब तो उन्हें ही लोग बदनाम कर देंगे| निर्मला ने दयार्द्र भाव से कहा अरे !तो इतनी छोटी-छोटी सी बातों से क्यों डरते हो? इस तरह की बातें सुनकर उसकी सास तिलमिला उठीं। विवाद बढ़ता गया और रमाकान्त कहता है कि – ' तुम उसके लिए मरी जा रही हो तो जाओ उसे लेकर किसी धर्मशाले में रहो। मेरे घर में तो उसके लिए जगह नहीं है।

निर्मला को भी क्रोध आ गया। उसने रमाकान्त से घर पर अपने अधिकार की बात की जितना इस घर में आपका अधिकार है, उतना ही मेरा भी है । यदि आप अपने किसी चरित्रहीन पुरुष मित्र को आदर और सम्मान के साथ ठहरा सकते हैं तो मैं भी किसी असहाय अबला को कम-से-कम आश्रय तो दे ही सकती हूँ। बातचीत इतनी बढ़ी कि रमाकान्त ने निर्मला को दो-तीन तमाचे जड़ दिये। इस घर पर मेरा भी कुछ अधिकार होता तो मैं तुम्हें इस कष्ट के समय कहीं भी न जाने देती।' निर्मला ने बिटन को दस रुपये दिये और कहा, 'सुबह होने पर मेरे भाई ललित मोहन के पास जाना। उन्हें मेरा पत्र देना वे तुम्हारा प्रबन्ध कर देंगे।

निर्मला ने सुबह उठकर घर का काम-धाम प्रारंभ कर दिया। वह न रोयी न, चिल्लायी । रमाकान्त को पश्चाताप हुआ। वे चाहते थे कि पश्चाताप के आंसुओं से निर्मला के पैर धो डालें,

किन्तु निर्मला ने ऐसा कोई अवसर न आने दिया। वह रमाकान्त से दूरी बनाये बच-बच कर घर का सब काम करती रही। इसमें स्त्री और पुरुष के प्रति समाज के भेदभावपूर्ण दृष्टिकोण पर प्रहार किया गया है।

4.1.6 कदम्ब के फूल :-

भारतीय घरों में सास द्वारा बहुओं पर किये जाने वाले अत्याचारों तथा पुत्रों को बहुओं के विरुद्ध भड़काने जैसी घटनाओं को आधार बनाकर इस कहानी का ताना-बाना बुना गया है। बहू 'भामा' को पूजा के लिए कदम्ब के फूलों की आवश्यकता थी। उसने मोहल्ले के एक लड़के मोहन से फूल लाने को कहा। वह दोने में ढक कर फूल ले आया। सास ने मोहन को कुछ दोने में लिये हुए घर के भीतर जाते देखा था। अतः फूल देकर जब वह घर से निकला तो सास ने सवाल किया मोहन दोने में क्या लाया था? बहू ने कहा-मिठाई। क्रोध से भरी सास बहू को मारने दौड़ी। बहू ने कहा 'देखें कैसे मारती हो? मुझे वह बहू न समझ लेना जो सास की मार चुपचाप सह लेती है।' बहू पर अपमान करने का आरोप लगाते हुए सास ने जोर- जोर से रोना शुरू कर दिया।

सास के रोने पर आसपास की दूसरी औरतें भी इकट्ठी हो गयीं। पड़ोस की एक बुढ़ियाँ बोली- 'राम राम ! यही पढ़ी-लिखी होशियार हैं। पढ़ी-लिखी हैं तो क्या हुआ, अक्ल तो कौड़ी के बराबर नहीं है।' सास बोली 'अपना ही माल खोटा हो तो परखने वाले का क्या दोष, बहिन !

भामा के पति गंगाप्रसाद गाँव के प्राइमरी स्कूल में सत्रह रुपये की नौकरी के लिए प्रयत्नशील थे। बेरोजगारी में भामा के जेवर गिरवी रखके घर का काम चल रहा था और भामा खुद साग या दाल का पानी पीकर कम खर्च में काम चला रही थी। गंगाप्रसाद हारे-थके घर आये।

उन्होंने माँ से उदासी का कारण पूछा। पहले तो माँ ने कुछ न कहा किन्तु फिर फूट-फूट कर रोने लगीं। माँ ने घर से अलग होकर भीख माँग कर गुजारा करने की बात की और कहा किन्तु वे बहू की मार न खाएगी।' फिर उन्होने रोज-रोज बहू के मिठाई मंगाने और खाने की बात कही। माँ को मारने की बात सुनकर गंगाप्रसाद आपे से बाहर हो गये, बोले- 'वह तुझे मारेगी माँ ! मैं ही न उसके हाथ पैर तोड़ कर डाल दूँगा।' वे लकड़ी उठाकर भामा की तरफ लपके और डॉट कर पूछा – क्या मँगाया था तुमने मोहन से ? तभी मोहन ने घर में प्रवेश किया। उसने कहा 'कदम्ब के फूल थे भैया। तब तक भामा फूलों का दोना गंगाप्रसाद की ओर बढ़ा चुकी थी। दोने में लड्डू के आकार के आठ-दस पीले फूल देखकर गंगाप्रसाद को हँसी आ गयी।

4.1.7 किस्मत :-

यह कहानी एक बाल विधवा के जीवन पर आधारित है। वकील रामकिशोर की पहली पत्नी के एकमात्र पुत्र चन्दन के विवाह के कुछ दिन बाद ही मृत्यु हो गयी थी। उसकी विधवा किशोरी को घर में क्या- क्या कष्ट झेलने पड़े, उसकी सास ने उसके साथ कैसा कैसा अमानवीय व्यवहार किया – यह सब कुछ इस छोटी सी कथा में चित्रित है। रामकिशोर की एक सात साल की बेटी है जिसका नाम मुन्नी है|

किशोरी खाना बना रही थी। खाना तैयार होने में आधा घंटे की देर थी। माँ (सास) गरजीं – 'दस- साढ़े दस बज रहे हैं, अभी तक खाना भी नहीं बना ! बच्चे क्या भूखे ही स्कूल चले जाएंगे? बाप रे बाप ! मैं तो इस कुलच्छनी से हैरान आ गयी।' किशोरी ने डरते-डरते कहा अभी

तो नौ भी नहीं बजे हैं। सास ने चिमटा खींच कर उसे मारा चल हट, निकल चौके से।' किशोरी रोती हुई चौके से निकल गयी। खाना बन गया। बच्चे आधा घंटे पहले स्कूल पहुँच गये।

रामकिशोर अपने मुवक्किलों से छुट्टी पाकर घर आये, तो सन्नाटा था। उन्होने पूछा अभी साढ़े नौ ही बजे हैं, बच्चे कहाँ गये ? माँ (सास) ने कहा- जरूर तुम ने किशोरी की बात सुन ली है तभी साढ़े नौ का समय बता रहे हो। रामकिशोर, किशोरी के प्रति अत्यधिक स्नेह भाव रखते थे। वे आज की घटना भी जान गये थे। वे समझ रहे थे कि आज भी किशोरी को भूखा प्यासा रहना पड़ेगा। चलते-चलते उन्होंने कहा – 'भूखी न रहना बेटी! रोटी जरूर खा लेना नहीं तो मुझे बड़ा दुःख होगा।' मुन्नी की माँ ने यह सब सुना और मन ही मन सोचा 'इस चुड़ैल पर इतना प्रेम।' उसने अपने सब बच्चों को खाना खिलाया और बचा खाना कहारिन को दे दिया।

आज रामकिशोर जल्दी आ गये। वे सीधे बहू के कमरे में गये। उससे पूछा 'खाना खा लिया?' बहू के मुँह से पहले 'नहीं' निकला। फिर उसने 'हाँ' कहा। रामकिशोर को बहू के झूठ बोलने से दुख हुआ। इस पर बहू किशोरी ने कहा कि वह झूठ नहीं बोल रही, जो कुछ चौके में था, उसने वह खा लिया। रामकिशोर ने कहारिन को बुलाकर पूछा कि किशोरी ने खाना खाया या नहीं। कहारिन ने बताया बहू खाती भी क्या, माँ जी ने पहले ही चौका उठा दिया था। यह सुनकर उन्हें पत्नी की नीचता पर अत्यधिक क्रोध आया और किशोरी के प्रति उनका हृदय द्रवित हो गया। वे उसके कमरे में गये और उसे खर्च के लिए दस रुपये देने लगे। तभी मुन्नी की माँ तेजी से आयीं और रामकिशोर पर तरह-तरह के पाप मढ़ते हुए उनके हाथ से रुपये छीन लिये। वे बाहर जाकर बैठक में लेट गये और रोने लगे। तभी मुन्नी आयी और पिता से पूछा – 'क्यों रोते हो बाबू

?' रामकिशोर ने विरक्त भाव से कहा 'अपनी किस्मत के लिए बेटी।' मुन्नी ने सबेरे भौजी के मुँह से भी किस्मत का नाम सुना था। उसने किस्मत के विषय में पिता से पूछा 'किस्मत कहाँ रहती है बाबू ? क्या वह अम्मा की कोई लगती है?' पिता ने कहा 'हाँ, वह तुम्हारी माँ की बहिन है।' मुन्नी ने कहा- 'तभी तो वह तुम्हें और भौजी को रुलाती है|

4.1.8 मछुए की बेटी :-

इस कहानी में लेखिका ने भाग्य के खेल और संयोग को आधार बनाकर तिन्नी के जीवन की कथा कही है। तिन्नी, चौधरी और चौधराइन की अल्हड़ बेटी है। चौधरी को अभी उसके योग्य वर अपनी जाति में नहीं मिल पाया है। अचानक मनोहर नाम का एक युवा नाव चालक उससे विवाह का प्रस्ताव करता है। इसी बीच समीपवर्ती क्षेत्र के राजा कई दिन शिकार खेलने के लिए आते हैं। उनके दल को तिन्नी और मनोहर अपनी नाव से पार कराते हैं। राजा का पुत्र कृष्णदेव तिन्नी की गतिविधियों और अल्हड़पन पर रीझ जाता है। शिकार का क्रम समाप्त होता है। कृष्णदेव तिन्नी पर आसक्त हो चुका है। उसकी रातों की नींद उड़ चुकी है। धीरे-धीरे उसका स्वास्थ्य खराब होने लगा। राजा, कृष्णदेव की विरह व्यथा को जानता है। वे कृष्णदेव के कक्ष में उसे देखने जाते हैं और पाते हैं कि कृष्णदेव सूख कर काँटा जैसा हो गया है| तत्काल ही उन्होंने कृष्णदेव का तिन्नी से विवाह करने का निर्णय लेता है|

तिन्नी और उसके पिता चौधरी को राजा साहब ने बुलावा भेजा और चौधरी से कहा 'हम तुम्हारी इस कन्या को राजकुमार के लिए चाहते हैं।' इस पर चौधरी ने बताया कि तिन्नी उसकी बेटी न होकर उसकी पालित पुत्री है। वह उसे बाढ़ में मिली थी। उस समय उसके गले में एक

ताबीज था। ताबीज और बाढ़ की बात आते ही राजा को बाढ़ में अपनी बेटी के बह जाने की घटना याद हो आयी। राजा ने ताबीज भी पहचान लिया। इस तरह तिन्नी अपने बिछुड़े माता-पिता और भाई-बहनों से मिल जाती है| कृष्णदेव को पत्नी के रूप में सही बहिन के रूप में तिन्नी मिलती है|

4.1.9 एकादशी :-

यह कहानी भारतीय हिन्दू समाज में विधवाओं की स्थिति को धर्मान्तरण से जोड़कर रची गयी है। डाक्टर मिश्रा शहर के प्रमुख चिकित्सक थे। उन्हें बच्चों से बड़ा प्रेम था। एक दिन वे बच्चों को मिठाई बाँट रहे थे। एक दस वर्ष की लड़की भी वहाँ थी। उसने डाक्टर साहब से मिठाई नहीं ली तो उन्हें आश्चर्य हुआ। जब डाक्टर साहब ने मिठाई न लेने का कारण पूछा तो उसने कहा 'आज एकादशी है। आज भी कोई मिठाई खाता है?' डाक्टर साहब को बाद में पता चला कि वह किसी मंदिर के पुजारी की लड़की थी और विवाह के मात्र छः माह के अन्दर ही विधवा हो गयी थी। घर में दो विधवाएँ थीं। एक तो यह लड़की और दूसरी पुजारी की माँ। इस घटना को दस वर्ष बीत गये। डाक्टर साहब किसी दूसरे शहर में प्रेक्टिस करने लगे। वहाँ रहमान नाम का एक व्यक्ति अपनी बीमार पत्नी को दिखाने डाक्टर साहब को अपने घर ले गया। डाक्टर साहब ने उसका स्वास्थ्य परीक्षण किया, और शोरबा पीने की सलाह दी किन्तु उसने इनकार कर दिया | उसने डाक्टर साहब से कहा कि वह शोरबा नहीं पी सकेगी। डाक्टर को उसका स्वर कुछ परिचित सा लगा। उन्होने उससे जोर देकर पूछा कि वह शोरबा क्यों नहीं पिएगी ? छलकती आँखों से स्त्री ने जवाब दिया – 'आज एकादशी है।' उत्तर सुनकर डाक्टर साहब चौंक पड़े।

इस कहानी में लेखिका ने यह बताने का प्रयास किया है कि धर्म परिवर्तन की घटनाओं के पीछे प्रायः धार्मिक कट्टरता और रूढ़ियों से उपजे दबाव हैं जो विवश लोगों को किसी अन्य धर्म का अवलम्ब ग्रहण करने को विवश करते हैं।

4.1.10 आहुति :-

इस कहानी के केन्द्र में दहेज समस्या के साथ ही विधुरों की समस्या भी चित्रित है। राधेश्याम एडवोकेट की पत्नी का अस्पताल में निधन हो गया। उसी अस्पताल में कुन्तला की माँ ने सातवें बच्चे के रूप में लड़की को जन्म दिया है। पत्नी के मरने पर राधेश्याम नवजात शिशु को लेकर अपने घर आए और विवाह न करने का निश्चय कर लेता है। राधेश्याम के मन में परोपकार का विशेष भाव जगा और अपने मुवक्किलों से मात्र आधी फीस लेने लगे। उन्होंने गरीबों और बेसहारों को निःशुल्क कानूनी सेवा देना प्रारंभ किया।

एक दिन राधेश्याम की बैठक के सामने जाते हुए तांगे का पर सवार सात-आठ साल का बच्चा ताँगे से गिर पड़ा और उसकी बड़ी बहिन गिरते-गिरते बची। राधेश्याम व उनके मित्र जगमोहन ने उनकी सहायता की। कुन्तला को देखते ही पण्डित राधेश्याम की सोई हुई स्मृति जाग गयी। बाद में एक दिन उन्होंने जगमोहन से कुन्तला के बारे में पूछा तो उन्होंने बताया कि वह पण्डित नन्दकिशोर तिवारी की कन्या है।

पढ़ी-लिखी, गृह कार्य में दक्ष है। तिवारी जी 50 रुपये माहवार की नौकरी करते हैं। बड़ा परिवार है। धन की समस्या के कारण लड़की का विवाह नहीं हो पा रहा। बातचीत में जगमोहन ने राधेश्याम के मन की हलचल को पढ़ लिया। उसने उन्हें समझाया कि अभी उसकी उम्र पैंतीस-

छत्तीस की ही होगी। ऐसे में जीवन भर तपस्या उचित नहीं। राधेश्याम के बाद उनका विवाह कुन्तला से हो गया। अब कुन्तला राधेश्याम के पुत्र हरिहर की देखभाल करने लगी। वे कहते हैं ढलती उमर का विवाह और विशेषकर दूसरे विवाह की सुन्दर स्त्री मनुष्य को पागल बना देती है। था भी कुछ ऐसा ही। कुन्तला अपने जीवन से कुछ बेजार-सी हो रही थी। किन्तु वह राधेश्याम को किसी प्रकार रोक न सकती थी ? क्योंकि वह उनकी विवाहिता पत्नी ठहरी। सात भाँवरें फिर लेने के बाद राधेश्याम को तो उसके शरीर की पूरी मोनॉपली-सी मिल चुकी थी |

अब समाज में नारी चेतना का भाव जाग रहा था। स्त्री-समाज की स्थापना हुई। कुन्तला भी उसमें बुलाई जाने लगी। उसने एक लेख भी लिखा, वह छपा भी। कुन्तला की शैली एवं सामयिक ज्ञान की खूब प्रशंसा हुई। राधेश्याम को भी यह सब देख अच्छा लगा। एक दिन वे अपने एक साहित्य-सेवी मित्र अखिलेश्वर को घर लाये। अखिलेश्वर अब कुन्तला के लेख आदि ठीक करने लगे। उन्होने कुन्तला को शैली, टेनीसन, कीट्स व शेक्सपीयर का साहित्य पढ़ने को दिया और कविताएँ लिखने की प्रेरणा दी। धीरे- धीरे राधेश्याम को कुन्तला के पास अखिलेश्वर का अधिक बैठना खलने लगा और उसके मन में अखिलेश्वर के प्रति ईर्ष्या का भाव जागने लगा। यद्यपि अखिलेश्वर शुद्ध मन से ही कुन्तला को साहित्य सृजन की शिक्षा दे रहा था, तथापि राधेश्याम की शंकाएँ बढ़ती ही गयीं।

इसी बीच अखिलेश्वर बीमार पड़े और उन्होंने राधेश्याम के घर आना बंद कर दिया। काफी दिन हो जाने पर कुन्तला अखिलेश्वर का हाल-चाल लेने उसके घर गयी। संयोग से उसी समय राधेश्याम भी हालचाल लेने वहाँ पहुँच गये, किन्तु कुन्तला को वहाँ देख राधेश्याम पर गंभीर

प्रतिक्रिया हुई। पति राधेश्याम ने कुन्तला के लेख, कविताएँ, पेन, पेंसिल, कापियाँ आदि सब में आग लगा दी।

4.1.11 थाती:-

यह शहर से ब्याह कर गाँव गयी एक ऐसी लड़की की कहानी है जिसके अल्हड़पन को देखकर गाँव के एक धनवान व्यक्ति का नेक दिल बेटा मुग्ध हो जाता है। लड़की शहर से गाँव की बहू बनकर गयी थी। एक दिन सास उसे पानी भरवाने कुएँ पर ले गयी। उसी समय वह नेक, दयालु और उदार प्रकृति के व्यक्ति आ गये और हँसकर बोले – 'क्या पानी भरने की शिक्षा दे रही हो, माँजी? आपने ऐसी अल्हड़ लड़की ब्याही ही क्यों, जिसे पानी भरना भी नहीं आता ?' यह बात सुनकर बहू घूँघट के भीतर से मुस्करा दी। सास के अनुसार बहू को रोटी बनाने के अतिरिक्त ग्रामीण परिवार योग्य कोई काम न आता था।

कुँआ घर से काफ़ी दूर था। दूसरे दिन बहू अकेली पानी भरने गयी। उसने किसी तरह पानी भरा घड़ा आधा खींचा ही था, तब तक वे दयालु पुरुष आते दिखायी दिये। घूँघट ठीक करने की हड़बड़ी में रस्सी हाथ से छूट गयी। उन्होंने अपने नौकरों से रस्सी व घड़ा निकलवाया, और मुस्कुराते हुए बोले – 'किन्तु आपने यह साबित कर दिया कि आप शहर की एक अल्हड़ लड़की हैं।' बहू पानी लेकर घर आयी। पर यह क्या रस्सी छुड़ाने में उसके एक हाथ का सोने का कड़ा कुएँ पर ही गिर गया। वह घड़ा रखकर उल्टे पैर भागी। रास्ते में वह सज्जन पुरुष मिल गये। उन्होंने उसे कंगन देते हुए कहा कि 'यह तुम्हारे अल्हड़पन की दूसरी निशानी है।

घर आकर देखा तो उसके पतिदेव स्कूल से लौटे थे। माँ ने इस घटना का जिक्र बेटे से किया। पति गुस्से में लाल-पीला हुआ और उससे पूछा क्या है तुम्हारी जेब में बतलाओ तो? बहू ने कंगन दिखाते हुए पूरी घटना सच-सच बता दी। बहु कुएँ से पानी रोज भरने के लिए जाती थी। उस धनवान व्यक्ति से आमना-सामना हो ही जाता था। लोग यह देखते और बातों को तिल का ताड़ बनाते। परिणामतः बहू पर घर में अत्याचार होने लगे। किसी तरह उस व्यक्ति को इन अत्याचारों की भनक लग गयी। एक दिन वे बहू के सामने कुछ कहने को खड़े हो गये 'मेरे ही कारण तुम पर इतने अत्याचार हो रहे हैं। आज से मैं तुम पर हो रहे अत्याचार से मुक्त करता हूँ| आऊंगा, नहीं तो आज ही सदा के लिए विदा होता हूँ।" और यह कहकर वे हमेशा के लिए कहीं चले गये। तब से उसकी हालत पागल जैसी है। वह चाहती है कि यदि कोई सहृदय उनका पता बता दे, तो वह पीड़ा और उन्माद की उनकी 'थाती' उन्हीं को सौंप देना चाहती है|

4.1.12 अनुरोध :-

यह मुख्यतः वीणा और निरंजन की कथा है। निरंजन किसी दूसरे नगर में 'वीणा' नामक एक साहित्यानुरागी महिला को उमर खैयाम की रुबाइयों के अनुवाद में सहयोग करने के लिए गया है। निरन्तर निकटता के कारण वीणा के मन में निरंजन के प्रति आकर्षण उत्पन्न हो जाता है| एक दिन निरंजन की पत्नी का पत्र आया, जिसमें पत्नी ने अपनी व्यथा इस प्रकार कही थी "मेरे प्राण.... एक महीना पहिले तुम्हारा पत्र आया था। तुमने लिखा था कि यहाँ का काम एक-दो दिन में निपटाकर रविवार तक घर अवश्य आ जाऊँगा। इसके बाद सोचो तो कितने रविवार निकल गये... जब दो पक्षियों को भी एक साथ देखती हूँ तो हृदय में हूक-सी उठती है। क्या यह लिख

सकोगे कि कब तक मुझे प्रतीक्षा करनी पड़ेगी? वैसे तुम्हारी इच्छा, जब आना चाहो। पर मेरा तो जी यही कहता है कि पत्र के उत्तर में स्वयं ही चले आओ।" निरंजन ने यह पत्र वीणा को पढ़ने के लिए दिया किन्तु वह किसी अन्य का पत्र पढ़ने में उदासीनता दिखाती है और कहती है 'पत्र लेखक मेरा कोई दुश्मन ही होगा जो इस प्रकार अनायास ही आपको मुझसे दूर खींच ले जाना चाहता है।' निरंजन ने इस पर हँस कर कहा – पत्र पढ़ने पर हो सकता है आप उसे अपना दुश्मन न समझें। वीणा ने निरंजन के आग्रह पर पत्र पढ़ा और उसे अपने प्रति ग्लानि व अपराध बोध हुआ। उसने पूरी रात जागकर अनुवाद पूरा किया। पूरा अनुवाद देखकर निरंजन को आश्चर्य हुआ। वीणा ने कहा- आपको आज जाना भी तो है। अब आप इन्हें देख लीजिए। दो – तीन घंटे का काम है, बस।' निरंजन ने कहा 'क्यों आप मुझसे नाराज हो गयीं क्या ? वीणा ने कहा – 'निरंजन जी! मैं नाराज होऊंगी आप से? क्या आपका हृदय इस पर विश्वास कर सकता है ?' और वीणा ने निरंजन से रात की गाड़ी से घर जाने का आग्रह किया।

4.1.13 ग्रामीणा :-

इस कहानी में लेखिका ने परिवेश परिवर्तन से उत्पन्न समस्या को रेखांकित किया है। गाँव के रहन-सहन और शहर के रहन-सहन में पर्याप्त अन्तर है। यह अन्तर ऐसी विषम स्थिति उत्पन्न करता है कि ग्रामीण परिवेश से शहर बहू बनकर आयी सोना आत्महत्या करने को विवश हो जाती है। सोना, रामधन तिवारी की पुत्री थी। यद्यपि गाँव में भी अच्छे लड़के थे, किन्तु रामधन तिवारी की बहन गाँव में ब्याहने के कुछ दिन बाद शहर चली गयी थी और शहर में रहने के बाद

जब वह अपने मैके जाती थी तो उसका रहन-सहन सबको आकृष्ट करता था। इसी आकर्षण में सोना की माँ नन्दो ने मन ही मन अपनी सोना का विवाह शहर में करने का निश्चय कर लिया था।

नारायण के सहयोग से रामधन अपनी प्रिय बेटी सोना का विवाह प्रेस में काम करने वाले एक सुन्दर, स्वस्थ, चरित्रवान नवयुवक विश्वमोहन से करने में सफल हो गये। विश्वमोहन पर्दे के बड़े पक्षपाती और पुरानी रूढ़ियों के कायल थे। सोना का विवाह हो गया। एक दिन उसने कोठरी से बाहर निकल आँगन में आकर चिक हटाई और जरा-सा बाहर झाँका ही था कि एक बुढ़िया ने उसे देख लिया और आकर विश्वमोहन की माँ से कहा – 'बिस्सू की अम्मा ! तुम्हारी इतनी उमर हो गयी, आज तक किसी ने परछाईं तक न देखी और तुम्हारी बहू के ये लच्छन। कलजुग इसी को कहते हैं।' उस दिन सोना को बड़ी डांट पड़ी। कुछ दिन बाद सोना मायके गई| ससुराल में किसी काम से सोना की सास गाँव गयी। घर की जिम्मेदारी सोना पर आ गयी किन्तु वह किसी तरह घर का काम निपटाती है और पति के आफिस जाने पर स्वच्छन्द हिरनी जैसी घूमती है। यह सब खबरें विश्वमोहन को भी मिलतीं, इसलिए उस पर नियंत्रण हेतु वे माँ को गाँव से बुलाया जाता है|

एक दिन विश्वमोहन को कहीं बाहर जाना था। वे स्टेशन रवाना हुए तभी एक ठेलेवाले ने बाहर आवाज लगाई – 'हर माल दो पैसे।' सोना बाहर की तरफ दौड़ी तब तक ठेलेवाला दूर निकल गया। इस बीच पड़ोसी बनिये का लड़का फैजू दौड़ा हुआ आया और बोला- 'भौजी ! सुई-तागा हो तो जरा मेरे कुर्ते में बटन टाँक दो, मैं कुश्ती देखने जाता हूँ।' सोना बटन टाँकने लगी। तभी गाड़ी तीन घंटे लेट होने की वजह से विश्वमोहन घर वापस आ गये। घर में फैजू को देख

उनका पारा चढ़ गया। सोना ने पति का क्रोध देख अपना सिर पति के पैरों पर रखकर माफी माँगी और आज्ञानुसार काम करने का वादा किया।

विश्वमोहन थोड़ी देर में चले गये, किन्तु सोना ने स्वयं को बहुत अपमानित अनुभव किया | किन्तु जब विश्वमोहन वापस आये तो उन्होने देखा कि घर बाहर के बाहर चबूतरे पर बैठा फैजू तीतर चुगा रहा था। वे दूसरे शहर से सोना के लिए साड़ी, स्लीपर और हेयर क्लिप आदि लाये थे। किन्तु फैजू को देखते ही उनका पारा चढ़ गया और वे बिना भोजन किये ही आफिस चले गये। सोना से यह उपेक्षा सही न गयी। वह विश्वमोहन के जाने के बाद घर की खिड़की तक भी नहीं गयी थी तिस पर भी विश्वमोहन का यह व्यवहार। उसके हृदय के घाव गहरे हो गये। वह तिलमिला उठी और अपने जीवन का अंत करने लिए आँगन में लगे धतूरे के पेड़ से दो तीन फल तोड़ लिये और पीस कर पी गयी। थोड़ी देर में ही पैर अकड़ने लगे, जुबान ऐंठने लगी, चेहरा काला पड़ गया। तभी उसके पिता उसे विदा कराने आ गये। वह पिता को देख बहुत रोयी और रोते-रोते प्राण त्याग दिये। घर में कोहराम मच गया। विश्वमोहन शाम छ: बजे आफिस से घर लौटे तो तिवारी जी, बेटी सोना की लाश को गोद में लिये धाड़े मार-मार कर रो रहे थे। सोना का अंतिम संस्कार किया गया। अंतिम संस्कार करने के बाद विश्वमोहन जब घर वापस आये तो देखा मेज पर सोना का एक पत्र लिखा रखा था, जिसका आशय था कि वह निर्दोष है, किन्तु छल-कपटपूर्ण दुनिया में या तो वह दुनिया के योग्य नहीं है या दुनिया उसके योग्य नहीं। वातावरण के अनुकूल वह स्वयं को ढाल नहीं पायी। उसने लिखा ‘अपने मरने का मुझे कोई अफसोस नहीं, दुःख है तो केवल इतना कि मैं आपको कभी सुखी न रख सकी।

4.1.14 उन्मादिनी :-

यह हीना रानी और कुन्दन की असफल प्रेम कहानी है। कुन्दन और हीना बाल-सखा थे। हीना गोरी थी, कुन्दन साँवला। कुन्दन बाँसुरी भी बजाता था। इसलिए 'हीना' 'कुन्दन' को अपना कृष्ण समझने लगी थी। हीना की शादी इंग्लैण्ड में एक इंजीनियर से हो गयी। जिस दिन उसका विवाह था उस दिन कुन्दन बी. ए. की परीक्षा दे रहा था, और वह परीक्षा भवन में बेहोश हो गया था। विवाह के समय हीना की दृष्टि कुन्दन को खोज रही थी किन्तु वह न आ सका। पता चला कि वह कई दिनों से बीमार चल रहा है। उसे तेज बुखार है। बारात ट्रेन से वापस हो रही थी। तभी कुन्दन आता दिखाई दिया। हीना के मुँह से अचानक निकल गया – 'कुन्दन इतनी देर बाद।' पास बैठी नाईन ने हीना का मुँह दबा दिया, गाड़ी चल दी।

इंजीनियर साहब बंगले में रहते थे। उसे तो कुन्दन के साथ बिताये पिछले दिनों की याद आती रहती थी। हीना की सास सामान खरीदने की बड़ी शौकीन थीं। एक दिन हीना ने देखा कि कुन्दन साड़ी की फेरी लगाता उसके बंगले आ गया। सास ने साड़ियाँ खरीदीं। हीना भी इस बहाने कुन्दन से मिल सकी। उसने देखा कुन्दन का चेहरा कांतिहीन हो रहा था। इस घटना के बाद कुन्दन कुछ दिन तक न दिखाई दिया।

जेठ का महीना था। बगीचे का एक माली छुट्टी पर गया था। हीना गर्मी के कारण अपनी सास के साथ बगीचे चली गयी। तभी बूढ़ा माली दस रुपये माहवार पर एक माली लाया। यह कुन्दन था। वह कुन्दन जो एक सम्पन्न परिवार का होनहार युवक था। कुन्दन ने काम प्रारंभ कर दिया। अब हीना सुबह- शाम की जगह दोपहर को बाग जाने लगी, किन्तु वह कुन्दन से बात न

करती। एक दिन भीषण लू-लपट में हीना घर से निकल बगीचे पहुँची और कुन्दन से इस तरह शरीर न तपाने को कहा। तभी वहाँ बूढ़ा माली आ गया और कुन्दन ने फिर कुदाल उठा काम करना शुरू कर दिया। इंजीनियर साहब नौकर-चाकरों को मिट्टी के ठीकरों से भी गया बीता समझते थे। यह बात जब उन्हें पता चली तो उन्होंने सख्त भाषा में हीना को हिदायत दी। इधर हीना भी व्यथित थी। उसका स्वास्थ्य खराब रहने लगा। लोगों को उसे टी. बी. होने का संदेह हुआ। इंजीनियर साहब ने हीना पर जितनी रोक लगाई, उसका मन उतना ही कुन्दन से मिलने को बेचैन रहने लगा।

गर्मी की रात थी। हीना बगीचे पहुँची। वह उद्विग्न-सी बगीचे में घूम रही थी। तभी उसे कुन्दन की कोठरी से कराहने की आवाज सुनाई दी। उस समय वह यह भूल ही गयी कि वह किसी इंजीनियर की पत्नी है। वह कोठरी में घुसी और बत्ती जला दी। कुन्दन का शरीर जल रहा। उसने एक गिलास पानी माँगा। हीना ने उसे पानी पिलाया। उसके सिर पर हाथ फेरा। उसने अपने गर्म हाथों से हीना के पैर छुए और कहा 'हीना रानी, घर जाओ। तुम्हें कोई यहाँ देख लेगा तो नाहक ही तुम पर कोई विपत्ति न आ जाय? कहीं मेरा यह सुख भी न छिन जाय ? तुम्हारे समीप इस हालत में भी रहकर मैं एक प्रकार का सुख ही पाता हूँ। ठीक उसी समय इंजीनियर साहब आ गये। उनकी आँखों में आग बरस रही थी। वे बड़बड़ा रहे थे, किन्तु हीना कुन्दन के माथे पर हाथ रखे बैठी रही। वह सोचती रही कि क्या किसी बीमार की सेवा-शुश्रूषा करना भी कोई अपराध है? यदि किसी ने बीमार बाल-सखा को एक गिलास पानी पिला ही दिया तो इसमें अनुचित क्या है?

दूसरे ही क्षण इंजीनियर साहब ने हीना को कोठरी छोड़ने को विवश कर दिया गया। घटना के दूसरे दिन हीना ने बंगले के बिजली के खम्भे के पास एक सफेद-सी आकृति देखी। वह किसी अज्ञात आशंका से भर गयी। वह तत्काल चौकीदारों से फाटक खुलवाकर बाग में कुन्दन की कोठरी पहुँची। उसे देखते ही कुन्दन ने एक गिलास पानी माँगा और सदा के लिए आँखें बन्द कर लीं। हीना रानी कहती है – 'वह मेरा कौन था? यह तो मैं भी नहीं कह सकती, पर कोई था अवश्य, और ऐसा था, मेरे इतने निकट था कि आज वह समाधि में सोया है और मैं बावली की तरह उसके आस-पास फेरी देती हूँ।' लोग कहते हैं कि वह उन्मादिनी है।

4.1.15 असमंजस :-

कुसुम और बसंत की इस प्रेम-कथा में प्रेम प्रकट न हो पाने के कारण प्रेमी युगल सदैव के लिए वियोगी रह जाते हैं। बसंत एक मेधावी छात्र है। वह अपने मित्र केशव के माध्यम से कुसुम से मिलता है। केशव इलाहाबाद में कुसुम का पड़ोसी है और बी. ए. का छात्र है। केशव व बसन्त मित्र हैं। बसन्त इन्टर- यूनिवर्सिटी-डिबेट में बनारस से अपने कॉलेज के लिये शील्ड ला चुका है। प्रथम भेंट में ही कुसुम, बसन्त को घर आमंत्रित करती है। वह अद्वितीय सुन्दरी है। कुसुम ने बसंत से अंग्रेजी पढ़ाने का आग्रह किया। इस अध्यापन में ही कहीं बसंत के मन में कुसुम के प्रति क्रोध आता है। किन्तु उसने कभी उसे प्रकट न किया।

कुसुम मैट्रिक पास हो गयी और बसन्त ने बी.ए. किया था। वह कभी-कभी कुसुम के घर आता है। एक दिन उसे पता चला कि कुसुम का विवाह मई माह में होना है। कुसुम बड़े घर की लड़की थी, इसलिए उसके लिए आकाश-कुसुम थी। एक दिन वह कुसुम के घर गया। कुसुम घर

पर न थी। वह कमरे में रखा एक एलबम देखने लगा। एलबम की एक फोटो पर उसकी निगाह टिक गयी और फोटो पर उसके दो आँसू टपक गये। उसने जल्दी से रूमाल से फोटो पोंछी। तब तक कुसुम आ चुकी थी। वह बसंत के पीछे खड़ी थी। उसने बैठते हुए कहा- बसंत बाबू, अब तो बहुत देरी हो चुकी है।

कुसुम की शादी एक धनी-मानी जमींदार के यहाँ हो गयी। बसंत लाहौर में प्रोफेसर हो गया। उसने विवाह न किया था। एक बार वह अपने विद्यार्थियों के साथ टाटा नगर पहुँचा। वहाँ से लौटते हुए इलाहाबाद में रुका। वहाँ कुछ पुराने मित्रों से मिला और फिर जार्ज टाउन स्थित कुसुम के घर चल दिया।

विवाह के दो वर्ष बाद ही कुसुम विधवा हो गयी थी। कुछ दिन पूर्व उसके पिता का भी निधन हो गया था। कुसुम को श्वेत वस्त्रों में देख बसंत चौंक पड़ा। बसंत उस रात कुसुम के घर पर ही रुका। कुसुम ने उससे कहा वह जब भी इधर आये इलाहाबाद अवश्य रुके। कुसुम बसंत का हृदय उसकी आँखों में देख रही थी – उसे विश्वास था कि बसंत अवश्य आयेगा।

बसन्त का स्वास्थ्य दिनोंदिन गिरता जा रहा था। वह छुट्टी लेकर मसूरी गया, पर अधिक दिन वहाँ न रह सका। वह इलाहाबाद आया। कुसुम से मिला। एक दिन बगीचे में टहलते हुए उसने कुसुम से कहा- 'क्या तुम अपना सारा जीवन इसी प्रकार, तपस्विनी की तरह बिता दोगी?' कुसुम का उत्तर था 'क्या करूँ ईश्वर की ऐसी ही इच्छा है।' फिर धड़कते दिल से बसन्त ने कुसुम की सखी मालती का उदाहरण पेश करते हुए उससे पुनर्विवाह का प्रस्ताव किया, किन्तु कुसुम ने दृढ़ता से कहा 'लेकिन बसन्त बाबू मुझसे तो यह कभी न हो सकेगा।' बसन्त हताश हो गया।

कुसुम ने आगे कहा ‘तुम भी मुझे पहले से चाहते थे यह बात मुझसे छिपी न थी ... इतना सब होते हुए भी, बसन्त मैंने निश्चय किया है कि में कभी पुनर्विवाह न करूँगी, अपने माता-पिता और अपने स्वामी की स्मृति पर कलंक न लगाऊँगी। तुम्हारा और मेरा शुद्ध प्रेम है, उसमें वासना और स्वार्थ की गन्ध नहीं है। कुसुम ने फिर कहाँ, कहानियों की तरह क्या प्रेम का अन्त विवाह में ही होना चाहिए, बसन्त ? बसन्त कोई उत्तर न दे सका। उसने देखा कुसुम प्रेम की होड़ में भी उससे बहुत आगे निकल गयी है।“ इस कहानी के माध्यम से लेखिका ने सच्चे प्रेम और वासनात्मक आकर्षण के बीच भेदक रेखा खींच कर समाज को एक महत्वपूर्ण संदेश दिया है।

4.1.16 अभियुक्ता :-

यह कहानी समाज के सफेदपोश दरिन्दों की करतूतों को उजागर करती है। एक बीस वर्षीय अनाथ युवती को शहर के प्रख्यात बैरिस्टर गुप्ता जी दया कर अपने घर शरण देते हैं, किन्तु धीरे-धीरे उनकी नियत स्वयं खराब हो जाती है। एक रात वे उस पर झपटते हैं। लड़की जान बचाकर भागती है। पुलिस उसे पकड़ लेती है। बैरिस्टर उस पर चेन चुराने का आरोप लगाते हैं। मजिस्ट्रेट मिश्रा की अदालत में मुकदमा चलता है। पुलिस कहती है चेन लड़की के पास से बरामद हुई है। अदालत में लड़की दृढ़ता से कहती है कि माँ के निधन के बाद वह बेसहारा हो गई । गुप्ता जी गुंडों से बचाकर उसे घर अवश्य लाए, किन्तु कुछ दिन बाद उनकी नियत डोल गयी और उसने अपनी पूरी कहानी कह दी। उसने अदालत में यह भी बताया कि चेन उसने चुराई नहीं बल्कि उसी की है, जो उसकी माँ ने मरते समय दी थी। मजिस्ट्रेट ने उससे पूछा, क्या प्रमाण है कि चैन तुम्हारी है। उसने कहा मेरी चेन ही मेरा प्रमाण है। चेन मुझे दीजिए मैं आपको बतला दूँगी। लड़की

ने चेन हाथ में ली और उसके लाकेट को खोल दिया। उसमें लगभग बीस वर्ष के युवक का एक चित्र था। लड़की ने कहा यही मेरे पिता का चित्र है।

मजिस्ट्रेट मिश्रा की आँखों के आगे अतीत नाच गया। बीस वर्ष पूर्व जब वे बी. ए. फाइनल में पढ़ते थे। मेस में काम करने वाली बुढ़िया की नातिन से उन्हें प्रेम हो गया था। कॉलेज से विदा होते समय रोती हुई प्रेयसी को उन्होने यह लाकेट लगी चेन स्मृति के रूप में दी थी। उन्होने सोचा 'तो क्या यह मेरी ही. और उनके हाथ से लॉकेट छूट गया। मजिस्ट्रेट ने सिर नीचा करते हुए कहा, 'अभियुक्ता निर्दोष है, उसे जाने दो।' और वे तुरन्त कुर्सी से उठ गये, जैसे न्यायाधीश की कुर्सी ने उन्हें काट खाया है।

4.1.17 सोने की कंठी :-

यह गरीबों की आकांक्षा से खिलवाड़ व धोखा और उनके यौन शोषण की मार्मिक कथा है। बिन्दो पोस्टमैन की बेटी है। पोस्टमैन अपने सजातीय एक रायसाहब निर्मलचन्द की कोठी में किराये पर रहता है। बिन्दो बहुत सुंदर है पर उसके माँ-बाप गरीब हैं। रायसाहब की बेटियाँ सुन्दर नहीं हैं पर वे धनवान की बेटी हैं। बिन्दो सदैव अच्छे जेवर और कपड़ों के लिए तरसती है। उसे आशा है कि विवाह में वह भी अच्छे कपड़े-जेवर प्राप्त कर सकेगी, परन्तु गरीब की बेटी गरीब घर ही ब्याही जाती है। उसकी ससुराल में थोड़ी खेती है, पति पहलवान है। पर सभी कम आय में भी प्रसन्न हैं। बिन्दो पढ़ी-लिखी होने के कारण रामायण सुनाती है। समझदारी की बातें करती है, जिससे उसका समुचित आदर-सम्मान है।

एक बार बिन्दो की माँ बीमार हुई। वह माँ की सेवा करने मायके आई। यहाँ घर के मालिक राय साहब एक दवाखाना भी चलवाते थे। दवाखाने का रास्ता उनकी बैठक से जाता था। रायसाहब चालीस की उम्र पार कर चुके थे, परन्तु उनकी इच्छाएँ अतृप्त थीं। एक दिन जब बिन्दो माँ की दवा लेने रायसाहब की बैठक से दवाखाने की ओर जा रही थी तो उसने देखा कि एक सुनार बड़ी सुन्दर-सुन्दर कंठियाँ रायसाहब को दिखा रहा है। बिन्दो भी उन्हें देखने लगी। राय साहब ने बिन्दो की लालच भरी दृष्टि को ताड़कर उससे पूछा कि क्या वह भी कंठी लेगी। बिन्दो ने कहा गरीबों के भाग्य में ऐसी कंठी कहाँ ? किन्तु राय साहब बोले यदि वह चाहे तो एक क्या ऐसी हजार कंठी उस पर निछावर हो सकती हैं। पहले वह समझ रही थी कि राय साहब उसे बेटी समझ कंठी देने की बात कर रहे हैं, किन्तु राय साहब की बातों से वह सचेत हुई और दवा लेकर अपनी कोठरी की ओर चली गयी। उसने सोचा कि अगले दिन वह दवा लेने न जाएगी, किन्तु मजबूरी में उसे जाना पड़ा। बैठक में राय साहब चार कंठियाँ लिये बैठे थे। उन्होंने बिन्दो को भी आग्रह पूर्वक बैठा लिया और सुनार को उनमें से एक कंठी के 250 रुपए देकर विदा किया। बिन्दो बोली, मुझ दवा दिलवा दीजिए मैं जाऊँ? तब तक राय साहब ने उसके गले में वह कंठी पहना दी और शीशे के सम्मुख उसे खड़ा करके सतृष्ण नेत्रों से कहा ‘अब अपनी सुन्दरता देखो।‘ और पल मात्र में ही उन्होंने अपने बड़े-बड़े दाँत उसके ओठों पर गड़ा दिये| दोपहर के सन्नाटे में बेचारी बिन्दो अपना सब कुछ गँवा बैठी।

वह ससुराल लौटी। वहाँ उसने बताया कि कंठी माँ ने दी है। परन्तु वह कंठी कभी न पहनती। जैसे वह उसे काटने दौड़ती। धीरे-धीरे घर में बंटवारा हो गया। उसके पहलवान पति के

कोई काम न करने से बिन्दो के घर भुखमरी जैसी स्थिति रहने लगी। एक दिन ऐसी ही हालत में बिन्दो ने अपनी कंठी बेचने के लिए पति जवाहर को दी। किन्तु उस समय उस पर मानो वज्रपात हो गया जब उसके निराश पति ने बताया कि कंठी तो मुलम्मे की है। कहानी में लोभ के कुफल और धनिकों की धूर्तता का चित्रण है।

4.1.18 नारी हृदय :-

यह कहानी नारी हृदय की कोमलता, समर्पण, त्याग, तथा पुरुषों की कठोरता को प्रस्तुत करती है। शहर में प्लेग फैला है। लोग शहर से बाहर झोपड़े बनाकर रह रहे हैं। एक वकील साहब की पत्नी भी उन पर शहर से दूर किसी बैंगले में रहने का दबाव डाल रही हैं। हालाँकि उन्होंने पूरे परिवार को प्लेग के टीके लगवा दिये हैं। घर बदलने के लिये वकील साहब अपने पुराने कागज देखते रहे हैं। कागजों से एक लिफाफा गिरता है। वकील साहब उसे जेब में रख लेते हैं। दिन-भर लिफाफे की याद आती है। वे उसे सावधानी से खोलते हैं। लिफाफे में किसी स्त्री के लिखे कुछ पत्र हैं। वे एक-एक पत्र पढ़ते हैं। पत्र में उस नारी ने बड़ी विनम्रता से अपनी पीड़ा व्यक्त की है। प्रमीला नाम की इस नारी ने शांति सरोवर से ये पत्र लिखा हैं। पत्र जिसे सम्बोधित है वह उसका 'देवता', और 'स्वामी' है, किन्तु पुरुष एक भी पत्र का उत्तर नहीं देता है। अन्तिम पत्र में प्रमीला कहती है... और कृपा कर मेरे पत्र का उत्तर भी न देना। क्योंकि अब आपका पत्र पढ़ने के लिए, शायद मैं संसार में भी न रहूँ।

पत्रों को पढ़कर वह ठंडी साँस लेते हुए करवट बदलता है तो देखता है कि पत्नी सुशीला सिरहाने खड़ी है। उसने भी सभी पत्र पढ़ लिये हैं। वह जाना चाहती है, किन्तु वकील उसे जबर्दस्ती

अपने पास बैठा लेता है। पति कहता है ये पत्र मेरे लिये नहीं हैं। आज इसी कोठरी में रद्दी कागजों में मिले हैं। यह कहते हुए वह लिफाफा सुशीला के सामने रख देता है। सुशीला लिफाफे को देखते हुए कहती है- 'तुम्हीं क्या पुरुष मात्र ही कठोर होते हैं।' सचमुच पुरुष प्रधान स्वार्थी समाज का यही रूप है।

4.1.19 पवित्र ईर्ष्या :-

यह नौ बरस की अबोध बालिका विमला की कहानी है। दो मित्रों के बीच ग़लतफ़हमी से उपजे ईर्ष्या-भाव को आधार बनाकर इस लम्बी कहानी की रचना हुई है। विमला और अखिलेश बाल सखा हैं। दोनों में एक दूसरे से बढ़-चढ़कर अपने को दिखाने की होड़ चलती रहती थी। राखी के दिन विमला अपनी सहेलियों को पूजा करने मंदिर जाते देख माँ के पास गयी और स्वयं भी पूजा करके भाई को राखी बाँधने की इच्छा व्यक्त की। विमला के कोई भाई नहीं था। इसलिए दुखी माँ ने कहा- 'राखी का नाम लेकर जला मत बेटी ! चुप रह।' इतने में विमला को चिढ़ाने के उद्देश्य से अखिलेश आया और अपनी राखियाँ दिखाने लगा। उसने कहा- 'मुझसे भी राखी बंधवा लो अखिल भैया !' वह राखी बंधवाने को तैयार हो गया। इस तरह अखिलेश उसका भाई बन गया और प्रतिवर्ष उससे राखी बंधवाने लगा। अखिलेश पढ़ने के लिए विदेश चला गया। एक दिन माँ-बेटी गंगा नहाने गयीं और तेज धार में बह गयीं। गंगा पुल से कॉलेज के लड़कों ने उन्हें बहते देखा। तो विनोद नाम का एक लड़का नदी में कूद पड़ा और दोनों की जान बचाया। विनोद रोज ही बीमार विमला का हाल पूछने उसके घर जाने लगा। वह बसन्तपुर का निवासी था। एम. ए. फाइनल का छात्र। उसके पिता डिप्टी कलेक्टर थे और बसन्तपुर के प्रसिद्ध रईस भी। अनन्तराम

विनोद के शिष्टाचार से प्रभावित थे। उन्हें घर बैठे अच्छा लड़का मिल गया। उन्होंने विमला से उसकी शादी कर दी। विनोद एक क्षण को भी विमला का वियोग न बर्दाश्त कर पाता था। संयोग से विनोद के पिता का स्थानान्तरण भी उसी शहर में हो गया। इसलिए विमला को मायके का सान्निध्य भी मिलने लगा और ससुराल में तो सुख था ही।

एक दिन विमला विनोद के साथ अपने मायके आयी। तभी विमला के नाम विदेश से अखिलेश का एक पत्र आया। पत्र पढ़कर विनोद स्तम्भित हो गया। वह अखिलेश का मित्र था। वह शंकाओं से भर गया। विमला स्थिति को भाँप गयी। विमला ने अब अखिलेश को अपना भाई बना लेने की पूरी घटना विनोद को बताई। किन्तु विनोद को विमला का यह स्नेह भाव कहीं बहुत गहरे अखिलेश के प्रति ईर्ष्या से भर गया।

अखिलेश विदेश से लौटा किन्तु विनोद ने स्टेशन जाने से मना कर दिया। विमला भी स्टेशन नहीं गयी। अखिलेश को जब विमला की अस्वस्थता का पता चला तो वह स्टेशन से सीधे विमला के घर आया। विमला और अखिलेश गुलमिल कर बात करने लगे। विनोद और अधिक ईर्ष्या से भर गया। यद्यपि विमला के प्रति विनोद का संदेह निर्मूल था। इस कारण वह मर्मान्तक पीड़ा का अनुभव कर रही थी। अखिलेश का विमला के घर आना विनोद को बहुत खला। ऐसे में एक दिन विनोद ने अपने मन की पीड़ा अपने मित्र से कह ही दी – 'अखिलेश, मुझे ऐसा जान पड़ने लगता है कि तुम्हारे स्नेह के सामने विमला के हृदय में मेरे स्नेह का दूसरा स्थान हो जाता है। तुम्हारा मूल्य उसकी आँखों में मुझसे कहीं ज्यादा हो जाता है।" इस पर अखिलेश ने मुस्करा कर कहा 'क्योकि मैं उसका भाई हूँ।'

अखिलेश, विनोद के मन के भाव समझ गया और उसने स्वयं भी विमला के घर जाना कम कर दिया। राखी का त्यौहार आया। विमला अपने भ्रातृ प्रेम को रोक न सकी। विनोद से उसने अखिलेश के घर चलने को कहा, किन्तु विनोद बेहद नाराज हो गया। विमला सिहर उठी और बोली 'अखिल भैया से ही क्या, तुम न चाहोगे तो मैं अम्मा और बाबूजी से भी न मिलूँगी।' कुछ देर बाद विनोद के एक मित्र की बहन अंतो विनोद को राखी बाँधने आयी। दुखी विमला ने विनोद और अंतो के साथ भोजन नहीं किया। वह अखिलेश के घर राखी बांधने नहीं गयी। इसी बीच विमला की मां आ पहुंची और दोनों माँ-बेटी लिपट कर खूब रोयीं। इस बीच विनोद अकेले ही अखिलेश के घर चले गये। उन्हें अकेला आया देख, अखिलेश को बड़ा आत्म क्लेश हुआ। और उन्होंने दूसरे दिन दो पत्र लिखे। एक प्रिंसिपल के नाम अपने इस्तीफे का, दूसरा विनोद के नाम। यह पत्र पढ़ते ही विनोद प्रिंसिपल के पास दौड़े और अखिलेश का इस्तीफा वापस ले लिया व अखिलेश को अपने घर ले गये।

4.1.20 अँगूठी की खोज :-

इस कहानी में अपराध भावना एवं उसके गंभीर परिणामों को वर्ण्य विषय बनाया गया है। योगेश नामक एक विद्यानुरागी, स्वाभिमानी, भावुक और अल्पभाषी युवक का विवाह नितान्त मूर्ख लड़की यशोदा से हो जाता है। धीरे धीरे युवक पर ऐसी प्रतिक्रिया होती है कि वह अपना अधिकतर समय घर से दूर कम्पनी बाग में व्यतीत करता है। एक दिन चैती पूर्णिमा की शाम जब वह कम्पनी बाग में एक कोने में हरी दूब पर पड़ा था तो कुछ स्त्रियों का दल वहाँ पर आया था। वे उसके पास ही एक बेंच पर बैठने लगीं तभी वृजांगना की अँगूठी गिर गयी। वे अँगूठी खोजने

लगीं। योगेश भी उनकी सहायता करने लगा। किन्तु अँगूठी न मिली। अँधेरा बढ़ रहा था। योगेश ने कहा कोई आदमी यहां आयेगा नहीं और मैं रात भर यहीं रहूँगा। यदि मुझ पर विश्वास हो तो आप अपना पता बताकर घर जायें, मैं सुबह अँगूठी खोजकर आपके घर पहुंचा दूँगा। दूसरे दिन तड़के ही योगेश अँगूठी खोजकर वृजांगना के घर पहुँच गया। वृजांगना व उसके पति पण्डित नवल किशोर ने उससे चाय पीकर जाने का आग्रह किया तथा कहा कि जब समय हो तब वह घर आ जाया करे।

योगेश वृजांगना के घर जाने लगा। वह नवल किशोर को भैया और वृजांगना को भाभी कहता था। किन्तु धीरे-धीरे वह वृजांगना के रूप पर आसक्त हो गया और उसके भीतर का राक्षस जाग गया। उसने अपने मन पर काबू करने की बहुत कोशिश भी की, पर निष्फल रहा। पुनः चैती पूर्णिमा का दिन आया। आज वह बहुत उद्विग्न था। वह कम्पनी बाग में उसी जगह लेटा था। मन पर काबू करने के लिए वह शहर ही छोड़ देना चाहता है। नवल किशोर उस दिन बाहर गये थे और योगेश से घर देखने को कह गये थे। योगेश ने सोचा शहर छोड़ने से पहले वह क्यों न वृजांगना से भी एक बार मिल ले। वह रात को वृजांगना के घर गया। वह लेटी थी। कुछ ही देर में उसे नींद आ गयी। उसके मुख मण्डल की कांति पूर्णिमा के चाँद-सी थी। योगेश अपने पर काबू न रख सका। वृजांगना फूट-फूट कर रो पड़ी। योगेश अपने घर चला गया और सुबह होते-होते दूसरे शहर भागने की सोचने लगा। वह घर से निकला और कुछ कदम ही चल पाया था कि नवल किशोर का नौकर तेजी से आता दिखाई दिया। योगेश अज्ञात आशंका से काँप उठा। नौकर ने दु: ख मिश्रित आवाज में कहा 'ठहरो भैया ! कहाँ जाते हो? तुम्हें बाबूजी ने जल्दी बुलाया है।' बूढ़ा

नौकर वृजांगना का हाल बताते बताते रो पड़ा। योगेश को भी चक्कर-सा आने लगा। वह विक्षिप्तों की तरह नवल किशोर के घर की ओर चल पड़ा। किन्तु जब तक वह वहाँ पहुंचा तब तक सब कुछ समाप्त हो चुका था। नवल किशोर बच्चों की तरह फूट-फूट कर रो रहा था। योगेश सोच रहा था नवल किशोर की गृहस्थी में आग लगाने वाला नर पिशाच तो वह ही है। योगेश ने वह नगर छोड़ दिया और वृजांगना की राख रखकर उसकी समाधि बना ली, किन्तु उसका पश्चाताप पूरा नहीं हुआ।

4.1.21 वेश्या की लड़की :-

यह एक कुलीन ब्राह्मण परिवार के लड़के और एक वेश्या की लड़की की प्रेम कथा है। वेश्या की लड़की किसी कुलीन परिवार की बेटी के ही समान सच्चरित्र, सज्जन और सौम्य है तथापि समाज उसके प्रति असहिष्णु रहता है। इस कहानी में पवित्र प्रेम भी कालांतर में आशंकाओं की भेंट चढ़ जाता है।

छाया और प्रमोद सहपाठी थे। छाया की माँ राजरानी मंदिर की प्रधान नर्तकी थी। वह अन्यत्र कहीं गाने नहीं जाती थी। वह बहुत समृद्ध थी। छाया पढ़ते-पढ़ते कॉलेज तक पहुँच गयी थी। प्रमोद से कॉलेज में ही उसकी मित्रता हुई। आर्य समाज मंदिर में दोनों ने विवाह भी कर लिया। छाया चाहती तो माता के घर की सारी सुख-सुविधाएँ मिल जातीं, किन्तु वह उसे दुराशा मात्र समझती थी। प्रमोद के माता-पिता इस विवाह से बहुत दुखी हुए और उन्होने प्रमोद से नाता तोड़ लिया। समाज में प्रमोद की मान-प्रतिष्ठा घट गयी। यद्यपि छाया अनन्य निष्ठा से अपने पति की सेवा कर रही थी, किन्तु आक्षेपों से त्रस्त प्रमोद का व्यवहार छाया के प्रति निरन्तर बदल रहा था।

इधर चन्द्रभूषण और सुमित्रा, बहू-बेटे के लिए व्याकुल थे। एक दिन सुमित्रा ने बेटे की बीमारी की खबर पाकर नौकर के हाथ कुछ पैसे भिजवाये और बुलवा भेजा। उसने पैसे तो ले लिये किन्तु घर न गया। अब सुमित्रा चन्द्रभूषण से आग्रह करने लगी कि वे स्वयं जाकर प्रमोद को बुलाकर लायें। चन्द्रभूषण ने भी मुँह दिखाई के लिये एक जोड़ी कंगन खरीदे तभी प्रमोद सामने से आता दिखाई दिया। उसने पिता के पैर छुए। चन्द्रभूषण ने उससे घर लौटने को कहा। वह पिता के साथ घर चला गया। इधर छाया भूखी-प्यासी ही सो जाती है। सुबह उठने पर प्रमोद ने सारा हाल छाया को सुनाया। अब प्रमोद सुबह उठते ही अपनी माँ के पास चले जाए और रात देर से आते। इधर छाया को प्रमोद की निकटता न मिलना बहुत खलता।

प्रमोद और छाया के विवाह की वर्षगाँठ का दिन आया। प्रमोद पिता के घर जा रहा था। छाया ने कहा – विवाह की वर्षगाँठ है शाम को जल्दी आ जाना। अति विलम्ब होने पर छाया प्रमोद के घर गयी। वहाँ चन्द्रभूषण ने उसे स्नेह से बैठाया। उनके इस सद्व्यवहार की उसे आशा न थी। उसने साहस बटोर कर प्रमोद के विषय में पूछा। चन्द्रभूषण ने उसे बुलाने को नौकर बुलाया तो छाया ने कहा मुझे ही पहुँचवा दीजिये। इधर माँ दरवाजे के पीछे से बहू को निहार रही थी और उसके रूप व सद्व्यवहार पर निछावर थी। छाया के चले जाने पर प्रमोद की माँ ने अपने पति को उसे घर के भीतर न बुलाने का उलाहना दिया। किन्तु वे बोले कि उन्होंने तो उनके भय से ही घर में नहीं बुलाया।

प्रमोद मिस्टर अग्रवाल के घर गया था। छाया भी वहाँ पहुँच गयी। मिस्टर अग्रवाल की पुत्री शान्ता प्रमोद की बाल सहेली थी। प्रमोद को छाया का इस तरह उसे खोजते हुए आना अच्छा न

लगा। उसने घर पहुँच कर छाया को खूब खरी-खोटी सुनायी। क्रोध में उसने यहाँ तक कह दिया – 'तुम अपने परिवार की चाल क्यों छोड़ सकोगी, गली-गली घूमोगी। नहीं तो काम कैसे चलेगा ? तुम तो मालूम होता है, वही करोगी जो तुम्हारी माँ आज तक कर रही है।" छाया कुछ न बोली वरन ऐसी भूल पुनः न करने का वचन देते हुए माफी माँगी। किन्तु प्रमोद स्वयं को शांत न कर सका। वह छाया से बोला कि वे मिस्टर अग्रवाल के घर जा रहे हैं। वहाँ शान्ता के पास उन्हें सुख और शान्ति का अनुभव होता है। छाया फूट-फूट कर रोने लगी। छाया की माँ राजरानी को उसकी रोज-रोज की सूचनाएँ मिलती रहती थीं। अपनी दासी को छाया के पास कहला भेजा अभी भी कुछ बिगड़ा नहीं है। छाया चाहे तो आकर मेरे साथ सुख से रह सकती है। छाया ने उत्तर में कहा 'मेरी नसों में सीता और सावित्री का खून दौड़ रहा है।.. पति ही मेरा परमेश्वर है, पति को छोड़कर स्त्री की कहीं दूसरी जगह गति नहीं हो सकती। उनसे कहना कि मेरी माँ तो मर चुकी। मैं उन्हें अपनी मां नहीं समझती; मेरी माँ होती तो मेरी ही तरह पवित्र जीवन बिताती।' दासी छाया के घर से निकल रही थी, तभी प्रमोद ने घर में प्रवेश किया। प्रमोद ने बेकसूर छाया पर सारा क्रोध उतार दिया – 'छाया तुम जाओ, जाओ अपनी माँ के साथ रहो... मुझे इस बन्धन से मुक्त कर दो।' छाया ने हिचकियाँ भरते हुए कहा 'प्रमोद, तुम बंधन से मुक्त होना चाहते हो तो मैं कर दूँगी।' प्रमोद ने उपेक्षा और व्यंग्यपूर्ण हँसी के साथ कहा, जिस दिन वह ऐसा कर देगी उसे बड़ी शान्ति मिलेगी। शाम को प्रमोद घर लौटे तो छाया प्रमोद के अन्तिम दर्शनों के लिए छटपटा रही थी। प्रमोद के आते ही उसने अंतिम हिचकी ली। प्रमोद पागलों की तरह छाया की लाश पर गिर पड़ा। अब प्रमोद एक विचित्र-सी आवाज करते एक पोटली में छाया का चित्र व उसका अन्तिम पत्र कलेजे से लगाये सुनसान स्थानों या खण्डहरों में घूमता रहता है।

4.1.22 रूपा :-

यह सुभद्रा जी के जेल जीवन के किसी अनुभव पर आधारित कहानी है। कहानी की लेखिका जेल में है। उसके साथ उसकी तीन साल की बेटी भी है। जेल में असमय घंटी बज उठती है, जिसे सुनकर बेटी चिल्ला पड़ती है – 'अम्मा उठो चलो ! घंटी बजी है। फाटक खुलेगा। आज तो हम लोग भी छूटने वाले हैं।' किन्तु, यह घंटी जेल से किसी के मुक्त होने की नहीं थी। आज जेल में असिस्टेन्ट जेलर के साथ एक चौबीस- पच्चीस साल की स्त्री अन्दर आयी। जेलर ने जमादारिन को बुलाकर उसके लिए कुछ अलग से निर्देश भी दिये। जमादारिन उसे गाली देती, घसीटती गुनहखाने में ले गयी। स्त्री पर अपनी लड़की की हत्या करने का आरोप था। कहानी की लेखिका को इस आरोप में कहीं-न-कहीं कोई मिथ्यात्व अनुभव हुआ। वह छड़वाले दरवाजे में बन्द थी। उसने अन्न का एक दाना भी न छुआ था। कहानी की लेखिका आँगन पार करके उसकी कोठरी के पास पहुँची और उससे कुछ खाने को कहा, साथ ही यह भी पूछा 'क्या सचमुच तुमने ... पर विश्वास नहीं होता कि कोई माँ अपने बच्चे को मार सकती है।' वह फूट पड़ी 'कोई माँ मारे चाहे न मारे, पर मैंने तो अपनी बच्ची को मार डाला है बहिन जी ! यह बात सच है।' रूपा को फाँसी वाले वार्ड में ले जाया गया।

धीरे-धीरे रूपा कहानी की लेखिका के मन-मस्तिष्क से हट गयी कि एक दिन अखबार में खबर छपी जिसमें रूपा के छः साल की बच्ची सहित कुएँ में कूदने की सूचना थी। कारण अज्ञात बताया गया था। रूपा को आजन्म कारावास हुआ। वह फिर जेल आ गयी। वहाँ वह कथा-वाचन

की बेटी को बहुत प्यार करती। जबकि अन्य लोग बेटी की अस्पष्ट तुतली भाषा के कारण उसकी उपेक्षा करते थे तथा जेल में एक अन्य बच्चे को खूब फल , मिठाई खिलौने देते थे।

बेटी की उपेक्षा से कहानी की वक्ता बेचैन रहती। ऐसे ही एक दिन वह बेचैन थी, उसे नींद न आ रही थी तभी रूपा आयी और बोली- हाथ-पैर दबा दूँ बहन जी? आपको नींद नहीं आती। रूपा पैर दबा रही थी तभी उसने पूछा – 'आज तुम मुझे बताओ कि तुम बच्ची को लेकर कुएँ में क्यों कूदी थी?' रूपा ने बताया कि उसकी गोपा भी उनकी ममता की तरह की थी। उसके मुँह में कुछ समस्या थी। गोपा का बाप कहता था, खूब रुपया कमाकर वह बम्बई में गोपा का आपरेशन करायेगा। रुपया कमाने के लिए वह लड़ाई पर चला गया और फिर न लौटा। वह मेहनत-मजदूरी करने लगी। वहाँ बड़े-बड़े लोग तक गोपा को चिढ़ाते। एक दिन दस-बारह लड़के-लड़कियाँ नन्हीं सी जान को चिढ़ा रहे थे। एक लड़का उसकी चोटी खींच रहा था। उसने लड़के के पीठ पर चपत लगा दी। इस बात पर लोगों से कहा-सुनी हो गयी। जिसकी वजह से उसे मेहनत- मजूरी मिलनी भी बंद हो गयी। इधर लोग थे कि गोपा को चिढ़ाये ही जाते थे। उसने सोचा अभी तो गोपा बच्चा है। जब यह बड़ी होगी और वह कहीं मर गयी तो बेचारी गोपा का क्या होगा। अपने मरने के बाद गोपा की दुर्दशा की कल्पना से वह पागल हो गयी और उस दुर्दशा तक गोपा न पहुंच सके, इसलिए .।' आगे वह कुछ न कह सकी। इधर कहानी की लेखिका ने ममता को छाती से लगा लिया।

4.1.23 कल्याणी :-

यह विवाह के दूसरे दिन ही विधवा हुई एक ऐसी स्त्री की कथा है जो अवसर होते हुए भी पुनर्विवाह नहीं करती कि कहीं उसके कारण किसी दूसरे की गृहस्थी उजड़ न जाय। बैरिस्टर राधारमण की बारात ट्रेन से घर लौट रही थी। रास्ते में रेल दुर्घटना में उनकी मृत्यु हो गयी। मरते समय उन्होंने अपने मित्र जयकृष्ण से कहा कि वह कल्याणी को उसे सौंपता है। उसने यह भी कहा कि ‘यह चाहे तो इसका विवाह भी कर देना। इसे कोई कष्ट न होने पाये।

जयकृष्ण ने घर-परिवार, रिश्तेदार-नातेदार व मोहल्ले वालों के मना करने के बाद भी कल्याणी को अपने घर रख लिया। जयकृष्ण की पत्नी मालती किसी अनिष्ट की आशंका से काँप उठी। मालती की पुत्री उपमा को अपनी यह चाची बहुत अच्छी लगती थी। जबकि जयकृष्ण का जिस दिन सिर दुखता, कल्याणी उस दिन किसी अनहोनी की कल्पना से चिन्तित हो जाती। धीरे-धीरे सात महीने हो गये। एक दिन कल्याणी नहाकर बाल खोले अपने छत पर के कमरे जाने के लिए जीना चढ़ रही थी। उसके अंग-प्रत्यंग से जैसे यौवन फूटा पड़ता था। उस दिन मालती घर में न थी। वह सुशीला बहन जी के घर गयी थी। जयकृष्ण ने उसे उस दिन पहली बार ठीक से देखा। उसने जयकृष्ण को देखते ही अपना सिर ढक लिया। इधर जयकृष्ण का मन बेकाबू हो गया। वे भी उसके पीछे उपर चले गये और बोले ‘मुझे तुमसे कुछ बात करनी है कल्याणी।‘ जयकृष्ण ने भारी किन्तु काँपते स्वर में कहा – ‘कल्याणी ! मृत्यु के समय राधारमण तुम्हे मेरे हाथों सौंप गये हैं। मेरा कर्तव्य तुम्हें सुखी बनाना है, किन्तु सुख का मार्ग तुम्हें ही निश्चित करना पड़ेगा।‘ कल्याणी

जयकृष्ण की दृष्टि देख सिहर उठी। उसने कहा- 'आप जो ठीक समझें करें, मैं कुछ नहीं जानती। अच्छा होता आप बहनजी के आने पर मुझसे बात करते।

मालती ने निश्चय कर लिया था कि वह जयकृष्ण से अब कल्याणी को घर में न रखने के लिए कहेगी। उसने कहा कि लोग कहते हैं कि कल्याणी को कहीं और भेज देना चाहिए। जयकृष्ण की भृकुटी टेढ़ी हो गयी – 'तो जाकर उसे हाथ पकड़कर निकाल दो।' कुछ दिन बाद मालती अपनी भतीजी के व्याह में मायके गयी। कल्याणी को वहाँ वह विधवा होने के कारण न ले जा सकी। इधर एक रात भोजन के बाद जयकृष्ण बहुत देर तक कल्याणी से बात करते रहे। उसके हाथ पर अपना हाथ रख दिया और विवाह का प्रस्ताव किया, किन्तु उसने स्पष्ट मना कर दिया। वह बोली 'न मैं अपना कुछ देखती हूँन आपका। सच यह है कि मैं मालती जीजी के सौभाग्य पर कुठाराघात न कर सकूँगी।' दूसरे ही दिन कल्याणी ने मालती को जल्दी घर आने का पत्र लिख दिया। जयकृष्ण ने मालती से कहा कि वे कल्याणी को पढ़ने के लिये किसी पुत्रीशाला में भेजने की व्यवस्था कर रहे हैं। और उपमा बेटी से कहा कि वह चाची को नीचे बुला लाये। किन्तु वहाँ कल्याणी न थी पर उसके गहनों की पोटली रखी थी और रखा था एक पत्र जिसमें लिखा था 'जाती हूँ ! अपनी उपस्थिति से आप लोगों को जो कष्ट दिया हो, या मुझसे जो अपराध हुए हों, उनके लिए क्षमा कीजियेगा। मेरी खोज न कीजियेगा। व्यर्थ होगी। मेरे ये गहने उपमा के लिए हैं।

4.1.24 कैलाशी नानी :-

यह एक गरीब और वृद्ध महिला की सज्जनता की कहानी है। कैलाशी नानी गाँव वालों के जानवरों को चराती है और उसके बदले में गाँव वाले उसे अनाज देते हैं, जिससे उसकी गुजर-बसर होती है गाँव के बच्चे कैलाशी नानी से हिले मिले हैं। वे उसके साथ जानवर चराने चले जाते हैं। शुरू जाड़े के दिन थे। एक दिन मामा के गाँव से एक आदमी संदेशा लेकर आया कि मामा ने माँ और सब बच्चों को बुलवाया है। माँ और बच्चे मामा के घर चले गये। वहाँ बच्चे कैलाशी नानी से हिल-मिल गये और उसके साथ नदी नहाने और खेलने के लालच में जंगल जाने लगे। शहर से गये बच्चों में दो लड़कियाँ भी थीं। जिनमें एक थोड़ी बड़ी थी।

एक दिन गाँव का जमींदार जंगल आया। उसने कैलाशी नानी से पूछा कि बड़ी लड़की अभी तक क्वांरी क्यों है? क्या उसके कुल में दाग है? कैलाशी नानी कहती है कि पढ़ाई के कारण जल्दी विवाह नहीं हो पाया। उस दिन जमींदार बहुत देर तक दोनों लड़कियों को घूरता रहा। दूसरे दिन छोटी बहिन सोकर न उठ पायी थी। अतएव बड़ी अकेली ही कैलाशी नानी के साथ चली गयी। वहाँ अन्य बच्चों के साथ नदी नहायी और कैलाशी नानी की रोटियों का नाश्ता किया। तब तक जमींदार आ गया। वह फिर उसी तरह उसे घूरता रहा। फिर उसने कैलाशी नानी से कान में कुछ कहा और जबर्दस्ती उसके पल्ले में कुछ बाँध दिया और तेजी से दूसरी तरफ चला गया।

शाम को कैलाशी नानी घर आयीं। उन्होने माँ से कहा कि बिटिया बच्चों को लेकर वे जल्दी से जल्दी गाँव से निकल जाये। फिर उसने माँ को वह रुपया दिखाया जो जमींदार ने उसे इसलिये दिया था कि वह दोनों लड़कियों की माँग भरने में उसकी मदद करे। काम पूरा होने पर

जमींदार ने उसे पचास चांदी के सिक्के और देने का लालच दिया। कैलाशी नानी ने कहा कि जमींदार की बच्चों के मामा से तनातनी है, जिसका बदला वह लड़कियों की माँग भर कर लेना चाहता है, ताकि फिर उनकी कभी शादी न हो सके। माँ के पिता वकील थे और इस तरह की हरकत में वे जमींदार को जेल की हवा खिलवा सकती थी। फिर भी वह कैलाशी नानी के आग्रह पर बच्चों को लेकर गाँव से अपने घर जाती है|

4.1.25 राही :-

यह कहानी 'माँगरोरी' जाति की एक ऐसी स्त्री की कहानी है, जो अपनी जाति के व्यवसाय के अनुसार भीख माँगने का काम करती है और जब भीख नहीं मिलती तो चोरी करके अपना काम चलाती है। किन्तु चोरी करने में उसकी जाति के लोगों को जनता की मार का भी सामना करना पड़ता है और कभी-कभी जेल की हवा भी खानी पड़ती है। राही इसी जाति की एक स्त्री है। पाँच-छः किलो अनाज की चोरी में जेल भेजी गयी है। अनीता उससे पूछती है- तूने चोरी क्यों की। वह बताती है – भीख मिली नहीं। बच्चे भूख से तड़प रहे थे इसलिए मजबूरी में चोरी की। अनीता ने कहा- तुमने यह बात मजिस्ट्रेट को बताई। उसने कहा-हम गरीबों की कोई नहीं सुनता, सरकार ! बच्चे आये थे कचहरी में। मैंने सब कुछ कहा, पर किसी न नहीं सुना।' अनीता ने उससे पूछा 'बच्चों का बाप नहीं है?' उसने बताया उसकी एक सिपाही से कुछ कहा- सुनी हो गई थी, सिपाही ने उसे चोरी में फैसा दिया। जेल में उसकी खूब पिटाई की गयी और वह वहीं अस्पताल में मर गया।

अनीता सत्याग्रह करके जेल गयी थी। वह सोचती रही जेल में हम सब ए क्लास, बी क्लास सुविधाओं के लिए संघर्ष करते हैं। अनीता ने विचार किया 'वास्तव में सच्ची भक्ति तो इन गरीबों के कष्ट निवारण में है।.... मानवोत्थान से बढ़कर कौन-सा मानव धर्म है?.... राही जैसी भोली-भाली किन्तु गुमराह आत्माओं के कल्याण की साधना जीवन की साधना होनी चाहिए। सत्याग्रही की यही प्रथम प्रतिज्ञा क्यों न हो? देशभक्ति का यही मापदण्ड क्यों न बने ? अनीता दिन भर इन्हीं विचारों में डूबी रही। शाम को भी वह इसी प्रकार कुछ सोचते-सोचते सो गयी।

रात में उसने सपना देखा कि जेल से छूटकर वह इन्हीं माँगरोरी लोगों के गाँव में पहुँच गयी है। वहां उसने एक छोटा-छोटा आश्रम खोल दिया है।'' आश्रम में बच्चे पढ़ते हैं। लोग रूई धुनकते हैं, कपड़ा बनाते हैं। वही भीख माँगने और चोरी करनेवाले आदर्श ग्रामवासी हो चले हैं। अनीता यह सपना देख ही रही थी तभी सुबह सात बजे स्त्री जेलर ने उसे आकर जगा दिया और बोली 'आप घर जाने के लिए तैयार हो जाइये। आपके पिता बीमार हैं। आप बिना शर्त छोड़ी जा रही हैं।' अनीता अपने स्वप्न को सच्चाई में परिवर्तित करने की एक मधुर कल्पना ले घर चली गयी।

इस कहानी का संदेश है कि सच्चा सत्याग्रह, सच्चा स्वराज्य तभी प्राप्त होगा जब समाज के गुमराह लोगों को सही रास्ता प्राप्त होगा। कहानी के संबंध में विष्णुकान्त शास्त्री का कथन है – 'राही' में उन देशभक्तों का पर्दाफाश किया गया है जो वस्तुतः सत्ता भक्त हैं और उसी के लिए राष्ट्रीय आंदोलनों में भाग लेते हैं, और जेलों में आकर ऊँची क्लासों के लिए झगड़ते हैं। इसमें उन्होंने गांव की जनता की सेवा करने को ही सच्ची देशभक्ति का नाम दिया। पतित मानवता को

जीवनदान देने की अपेक्षा भी कोई महत्तर पुण्य हो सकता है, ऐसा वे नहीं मानतीं। यह कथन आज भी अपनी सत्यता प्रमाणित कर रहा है।

4.1.26 दो साथी :-

यह आनन्द और विनय नामक दो मित्रों की कहानी है। आनन्द और विनय बचपन के साथी है। दोनों साथ-साथ कॉलेज में आये थे। प्रोफेसर डे की लड़की मैट्रिक की परीक्षा की तैयारी कर रही थी। विनय उसे गणित पढ़ाने लगा। आनन्द के मन में भी इस लड़की को देखने की उत्कंठा जागी। मीरा क्रिश्चियन माँ की पुत्री होते हुए भी भारतीयता की पक्षधर थी और विनय से प्रायः भारतीय धर्म, दर्शन और संस्कृति पर चर्चा करती थी। मिसेज डे लड़की को भी अंग्रेजियत में ढालना चाहती थीं। आनन्द, विनय के साथ प्रोफेसर डे के घर पहुँचा। विनय तो मीरा को पढ़ाने चला गया, किन्तु आनन्द और मिसेज डे घुल-मिलकर बातें करने लगे। आनन्द और मिसेज डे की आत्मीयता धीरे-धीरे बढ़ने लगी। मीरा शादी योग्य हो गयी थी। विनय मीरा को प्यार करने लगा था, किन्तु उसने कभी उसे प्रकट नहीं किया। इधर आनन्द भी मीरा से शादी करना चाहता था। यह बात विनय को पता चली तो उसने प्रोफेसर डे को मीरा के विवाह के लिए आनन्द का नाम सुझाया। विवाह हो गया।

विनय शहर के बाहर चला गया, और एक कॉलेज में गणित का प्रोफेसर हो गया। इधर मीरा और आनन्द के विवाह को पाँच साल बीत गये। इस बीच प्रोफेसर डे का निधन हो गया और मिसेज डे ने पुनर्विवाह कर लिया। आनन्द में दुर्व्यसन बढ़ गये। उसने मीरा के सारे गहने, कपड़े बेव कर शराब पी डाली। विनय के मन में मीरा का हाल-चाल जानने की उत्कंठा हुई। वह

जब डे के बैंगले पहुँचा तो मीरा बगल से कुछ पैसे उधार माँग कर बच्चों को चने खिला रही थी और बच्चे दूध के लिए मचल रहे थे। विनय यह देखकर स्तब्ध था। वह एक डलिया में फल-मिठाई आदि लेकर मीरा के घर पहुँचा तब तक नशे में धुत आनन्द घर आ चुका था। विनय पर चोरी से मीरा से मिलने का आरोप लगाता हुआ वह विनय पर झपटा और उसका गला पकड़ लिया। इस बीच वह मीरा को सिर पर कैंची मार चुका था। विनय उससे कह रहा था पहले बात तो सुनो। किन्तु वह बात क्या सुनता वह तो इतनी जोर-झपटा था कि अपने ही वेग के कारण छज्जे के नीचे जा गिरा। उसे उठाया गया। अब उसका नशा हिरन हो गया था। मीरा ने उसे थोड़ी सी ब्रान्डी पिलायी। फिर भी उसके हाथ-पैर ठण्डे हो रहे थे। विनय उसकी छाती से चिपट कर रोने लगा 'आनन्द तुम मुझे छोड़कर क्यों जा रहे हो। मैं तुम्हारे बिना न जी सकूँगा।' आनन्द की आँखें पथरायी जा रही थीं। वह बुदबुदाया – 'जीना पड़ेगा तुम्हें विनय ! मेरे बच्चों के लिए... मेरी मीरा..।' यह कहानी प्रेम-कथा भी है, वैचारिक भिन्नता जन्य समस्याओं की कथा और मद्यपान करने वालों के घरों की दुर्दशा और दुखद स्त्रियों के जीवन का चित्रण भी करता है|

4.1.27 बिआहा :-

अनाथ किन्तु ब्याहता लड़की की कथा है। कवयित्री जबलपुर से आजमगढ़ एक कवि सम्मेलन में जा रही थी। सतना में एक छोटी बच्ची को कवयित्री ने एक छोटी थाली, कटोरी और गिलास लिए ट्रेन की तरफ दौड़ते देखा। ट्रेन रुकने पर कवयित्री ने देखा कि दो-तीन रेलवे कर्मचारी उस बच्ची के विषय में कुछ बातें कर रहे हैं। तभी जाने क्या सोचकर एक कांस्टेबिल बच्ची को यह कहकर बैठा गया कि बहन जी इस लड़की को इलाहाबाद में उतार देना। ट्रेन चल दी। ट्रेन रात

ग्यारह बजे के लगभग इलाहाबाद पहुँची थी। कवयित्री सोच रही थी कि यदि बच्ची सो गयी तो वह क्या करेगी? क्या कोई वहाँ उसे लेने आयेगा? वह उसे किसे सौंपेगी? कवयित्री ने लड़की से नाम पूछा, उसने रामप्यारी बताया। इलाहाबाद क्यों जा रही है, इसके उत्तर में वह बोली 'अपने बिआहा के पास जाइत लाग है?' माँ-बाप के विषय में पूछने पर उसने बताया 'मरिगे।' बर्तनों के विषय में उसने जानकारी दी 'अपने घर से लायेन है, बिआहा के जाइत लाग है। उनही के घरै लै जाबै।' इलाहाबाद में वह कहाँ जाएगी यह पूछने पर उसने बताया – ' हुंवई इलाहाबाद में रहत है।' शाम को कवयित्री ने स्वयं भी भोजन किया और रामप्यारी को भी कराया। रास्ते में मानिकपुर जंक्शन में तमाम स्त्रियाँ डिब्बे में चढ़ीं। उन्होने रामप्यारी से बहुत से सवाल किये। कवयित्री से पूछा कि क्या बच्ची उसके साथ है। रात होने के कारण कवयित्री को नींद आ रही थी। वह सो गयी। थोड़ी देर बाद कवयित्री शोरगुल सुनकर उठी और ट्रेन के बाहर झाँका तो देखा वहाँ इलाहाबाद जंक्शन लिखा था।

कवयित्री के डिब्बे के सामने ही गेट पर टिकट जाँचने वाली महिला खड़ी थी उसने रामप्यारी से पूछा – छोकरी तू कहाँ जाएगी? कहाँ से आयी है? और रामप्यारी का उत्तर था 'घरे ते आइत लाग है, अपने बिआहा के घर जाब' और वह आगे बढ़ गयी।" कवयित्री को 'ऐसा लगा कि युग-युग से कोई अज्ञात वाणी जिसे सीता और सावित्री कहते हैं, उस बच्ची के कंठ से प्रतिध्वनित हो रही थी।' कवयित्री चाहती थी कि रामप्यारी की अज्ञात 'बियाहा' की खोज में वह भी शामिल हो जाती किन्तु कवि सम्मेलन में जाने की विवशता के कारण यह संभव न हो

सका। पर अब कवयित्री के मन मस्तिष्क में एक ही अनुत्तरित प्रश्न उठ रहा था, उसका बिआहा उसे मिला भी या नहीं ?

4.1.28 प्रोफेसर मित्रा :-

आदर्श पत्नी की खोज में प्रोफेसर मित्रा चालीस के हो गए थे। सेकेण्ड इयर के एक लड़के कान्तिकिरण को वे बहुत चाहते थे। कान्तिकिरण को निर्धनता के कारण सहारे की आवश्यककता थी। प्रोफेसर मित्रा ने उसे अपने बँगले पर रहने की जगह दी और उसका खर्च भी वहन करने लगे। यों भी वे छात्रों की आर्थिक मदद करते रहते थे।

गर्मी की छुट्टियों के बाद मृणाल नाम की एक लड़की कॉलेज में भर्ती हुई। मृणाल की माँ निर्धन थी और विधवा भी। प्रोफेसर मित्रा ने उसकी पढ़ाई की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली। मृणाल की माँ को जब पता चला कि प्रोफेसर अविवाहित हैं तो उसने मृणाल का विवाह मित्रा साहब से करने का मन बनाया। इधर कान्तिकिरण और मृणाल प्रायः मिलने-जुलने लगे। यह भेंट प्रोफेसर मित्रा के बँगले पर भी होती। निरन्तर मिलने से दोनों में प्रेम हो गया। इधर मृणाल को सौम्य, समझदार और कर्मठ देख प्रोफेसर मित्रा ने गंभीरता से उसकी माँ के प्रस्ताव पर विचार किया। विवाह के प्रसंग से प्रोफेसर मित्रा के मन में कोमल भावनाएँ जाग रही थीं।

एक दिन मृणाल प्रोफेसर मित्रा से 'सब्जेक्ट' के विषय में कुछ जानकारी लेने आई। किन्तु आज कॉलेज में उनका मन पढ़ाने में नहीं लगा। वे उसे कुछ पढ़ा नहीं सके, किन्तु वे चाह रहे थे कि मृणाल कुछ देर वहीं बैठी रहे। रात बढ़ रही थी। मृणाल ने पूछा- 'जाऊँ? रात बहुत हो जायेगी तो माँ बहुत घबराएँगी।' प्रोफेसर मित्रा ने गाड़ी निकाली और स्वयं ही मृणाल को उसकी माँ के

पास छोड़ आए। उस दिन रात भर वे सो न सके और अपनी सुखद गृहस्थी को बसाने की कल्पना में ही सबेरा हो गया। कॉलेज जाने का समय हो गया। सोचा कि मृणाल की माँ को विवाह संबंधी अपनी स्वीकृति देते हुए कॉलेज चले जाएंगे। वे कार स्टार्ट कर ही रहे थे कि एक साइकिल सवार उन्हें लिफाफा दे गया। पत्र में आशीर्वाद की आकांक्षा के साथ कान्तिकिरण और मृणाल ने लिखा था कि वे अपने विवाह की रजिस्ट्री कराने कचहरी जाएँगे इसलिए कॉलेज न आ सकेंगे। पत्र पढ़कर प्रोफेसर मित्रा एक फीकी हँसी के साथ कार कॉलेज की तरफ बढ़ा ले गए।

4.1.29 दुराचारी :-

इस कहानी में लेखिका ने ऊपर से सदाचारी दिखाई देने वाले पण्डित जी की एक दुराचारी प्रवृत्ति का पर्दाफाश किया है। पण्डित रामसेवक बड़े धार्मिक हैं। मुंशी दयाशंकर रंगीन मिजाज हैं। एक दिन दयाशंकर के घर से युवती के मधुर गीत सुनाई देते हैं। पण्डित रामसेवक और डाक्टर कामता प्रसाद इस गाने- बजाने के विरोधी हैं। वे मानते हैं कि इससे बच्चे बिगड़े जा रहे हैं किन्तु किशन मानने को तैयार नहीं। डाक्टर साहब कहते हैं – 'रुपया-पैसा है तो जमीन-जायदाद खरीद लो, मंदिर बनवा दो, धर्मशाला बनवा दो, कुछ धरम के नाम पर खरच करो। यह क्या कि सारा पैसा बस नाच-गाने में फूंक दिया जाय।

पण्डित जी की एक बहुत गरीब किरायेदार तेज ठण्ठ से बीमार अपने बच्चे को लेकर उनके पास आयी। वह कोठरी में लगा ताला खोल देने का अनुरोध कर रही थी। पर पण्डित जी किराया न दे पाने के कारण उसे ठोकर मारकर निकलवा देने की धमकी देते थे।

इस घटना के कुछ दिन बाद खेत की ओर जाते हुए पण्डित जी को किशन और जीवन मिले। उन्होंने उनसे घर में हो रही रामायण और भागवत में सम्मिलित होने को कहा। किशन तो चुप रहा परन्तु जीवन बोल पड़ा- 'पण्डित जी रामायण-भागवत और पूजा-पाठ से फायदा ही क्या, अगर हम आदमी को आदमी न समझ सकें।' और उनसे उस महिला और वृद्ध से किये गये दुर्व्यवहार पर क्षोभ व्यक्त किया। पण्डित जी हँस कर बोले मुकदमे की धमकी देने पर वे थोड़ी देर में ही पैसा दे गये। किशन बोला 'वह स्त्री और दीनू पण्डित आपके रुपये दे गया, क्यों?' पण्डित जी सगर्व बोले- 'ये सब साले इसी के लायक है।' जीवन बोला- 'पर पण्डित जी, इन दोनों आफत के मारे गरीबों को उसी दुराचारी दयाशंकर से ही मैने रुपये दिलवा दिये थे और तब कहीं वह कष्ट से छुटकारा पा सके। नहीं तो बेचारे अदालत के चक्कर काट रहे होते। एक दुराचारी ने उन्हें उबार लिया। मेरी राय में तो आप सरीखे सदाचारियों से यह दुराचारी कहीं अच्छा।

4.1.30 मंगला :-

इस कहानी में लेखिका ने लड़की के विवाह के बाद घर के सूने हो जाने का दर्द अभिव्यक्त किया है। जब घर में माँ बेटी ही हों और उसमें भी बेटी की शादी हो जाय तब कितना कष्ट माँ को होगा, इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती है| मंगला की माँ पक्षियों को देखती है कि पक्षियों के बच्चे बड़े होने पर कैसे नये घोसले बना लेते हैं और पुराने घोसले कैसे वीरान हो जाते हैं।

मंगला सयानी हो जाती है। उसकी माँ को मंगला के ब्याह की चिन्ता होती है। मंगला चाहती है, पढ़ने-लिखने के बाद वह अब माँ का सहारा बने। सुदर्शन नाम का एक सौम्य युवक मंगला की शादी के लिए उसकी माँ को मिल जाता है। वह उससे विवाह की बात तय करती है,

और मंगला के विचारों से उसे अवगत कराती है। वह युवक कहता है कि वह बीस वर्ष तक मंगला का इन्तजार करेगा। माँ पुनः मंगला पर विवाह का दबाव बनाती है। माँ के संतोष के लिये मंगला विवाह के लिए तैयार हो जाती है। विवाह हो जाता है। मंगला की माँ को घर का एकान्त जैसे काटने दौड़ता है। वह सोचती है यदि वह चिड़ियाँ होती तो मंगला की खोज में किसी तरफ उड़ जाती।

इस कहानी में उस पीड़ा की गहन अभिव्यक्ति है जो कन्या की विदाई में अनुभव की जाती है और माँ के पास इस पीड़ा के परिहार का कोई उपाय नहीं है। इसमें भारतीय नारी की उस पीड़ा की भी अभिव्यक्ति है जिसमें विवाह के बाद पुरुष पत्नी को अचल सम्पत्ति की तरह समझने लगता है। इस कहानी में नारी को मात्र भोग्या समझने वाले पुरुष वर्ग की क्रूरता, कुटिलता का चित्रण लेखिका के क्रांतिकारी व्यक्तित्व का प्रभाव है। इसीलिए वे लिखती हैं ‘पति चाहे जितना पढ़ा-लिखा विद्वान हो, पब्लिक प्लेटफार्म पर खड़ा होकर स्त्री के समान अधिकार और स्वतंत्रता देने के विषय में चाहे जितनी लंबी-लंबी स्पीचें झाड़े पर घर के अंदर पैर रखते ही पुरुष, पुरुष हो जाता है। स्त्री यदि उसकी इच्छाओं को अपनी इच्छा न बना ले, उसके इशारे पर आंख, कान बंद करके न चले, तो खैर नहीं।

4.1.31 जम्बक की डिबिया :-

एक विश्वासपात्र नौकर पर जम्बक की डिबिया चुराने के बाद संदेह को लेकर यह कहानी रची गई है। प्रोफेसर साहब के घर केठानी नाम का एक पुराना नौकर था, बड़ा मेहनती और ईमानदार प्रोफेसर की बहन के बदन पर लाल-लाल दाने निकलने पर उपचार हेतु यह दवा लाई थी। जम्बक दवा का नाम था। केठानी ने उत्सुकतावश दवा के विषय में पूछ लिया था। उसके बाद दवा की डिबिया कहीं नहीं मिली। केठानी को चोर समझा गया। उसने लाख कहा कि वह चोरी क्यों करेगा? उसे तो माँगने पर यों ही घर से प्रत्येक वस्तु मिल जाती है। पर किसी ने केठानी की एक न सुनी। उसे भला-बुरा कहकर घर से निकाल दिया गया।

अब बूढ़ा केठानी मेहनत-मजूरी करने लगा। कुछ दिनों बाद प्रोफेसर की माँ ने देखा कि केठानी रायसाहब के बैंगले पर गारा-मिट्टी ढो रहा है। एक दिन कालेज जाते हुए प्रोफेसर ने भी वही दृश्य देखा। उन्होंने सोचा यह सब उसकी वजह से ही है। शाम को जब वे घर लौट रहे थे तो रायसाहब की कोठी के पास भीड़ लगी थी, जहाँ पता चला कि केठानी की चाली से गिर कर मृत्यु हो गई है। अब प्रोफेसर का हृदय एक आदमी की हत्या के बोझ तले दबा जा रहा था। वह घर आकर माँ से बोला ‘उसके कफन के लिए कोई नया कपड़ा निकाल दो।‘ माँ ने ज्यों ही कपड़ों की पोटली खोली, जम्बक की डिबिया खट से गिर पड़ी।

4.1.32 तीन बच्चे :-

तीन बच्चों के बाल सुलभ खेलों और झगड़ों के नाटकीय वर्णन से प्रारम्भ यह कहानी ऐसे बच्चों की हृदय विदारक कथा प्रस्तुत करती है जिनका पिता नशेड़ी होने के कारण जेल में था और माँ उसकी गिरफ्तारी के समय पुलिस को मारने के आरोप में जेल की हवा खा रही थी। इधर उसके यतीम बच्चे गीत- भजन गाकर दिन काट रहे थे और जेल के पास के नाले के किनारे सोकर रात बिताते थे। कहानी की वक्ता के बच्चों ने उक्त दो लड़कियों व एक लड़के से कई बार गाने सुने थे और उन्हें अपने हिस्से की पूड़ियाँ खिलाई थीं उसने भी उन्हें अपने बच्चों के कपड़े दिये थे और उनसे उसकी पूरी कहानी सुनी थी।

युद्ध विरोधी सत्याग्रह में कहानी की वक्ता जेल गयी। वहाँ उक्त अल्हड़ युवती भी उसे मिली। उसका नाम लखिया था| लखिया से एक दिन बात-बात में पता चला कि उसने पुलिस को मारा है। यह सुनते ही उसे गा-बजाकर भीख माँखने वाले बच्चों की याद आ गयी। तभी लगातार चौबीस घंटे पानी बरसा। कहानी लेखिका सबके बाल-बच्चों की रक्षा की प्रार्थना भगवान से करती रही।

वह जेल में कैदी स्त्रियों को अखबार पढ़कर युद्ध की खबरें सुना दिया करती थी। उस दिन शाम को अखबार आया जिसमें तेज बारिश के साथ नाले में तीन गरीब बच्चों के बह जाने, और लाशों की शिनाख्त न हो पाने की खबर थी। उसकी आँखों के आगे उक्त तीनों बच्चों के चित्र खिंच गये जैसे कोई दूर गा रहा है – 'मैं तो डूबत हूँ मंझधार पड़ी, मोरी बैयाँ पकड़ के उठा लेना।' लखिया की कहानी की वक्ता से निकटता हो गयी थी। उस दिन भी वह उसके लिये चाय बना

रही थी। कहानी की वक्ता के मुँह से अचानक निकल गया – 'बेचारे बच्चे' उसने सान्त्वना के कुछ शब्द कहे और कहा कि बच्चे पिता के पास तो हैं। कहानी की वक्ता ने अब लखिया से पूछा कि उसकी गोद के बच्चे के अलावा भी और बच्चे हैं। वह बोली जो उसके पास है वह उसका है जो जेल के बाहर हैं, वे भगवान के हैं, अपने कैसे कहूँ ? यह उत्तर सुन कहानी की वक्ता उसे खबर के विषय में कुछ न बता सकी, वह पूछती ही रह गई।

4.1.33 बड़े घर की बात :-

इस कहानी में लेखिका ने झूठे बड़प्पन की भेंट चढ़ी, एक महिला की दुखद गाथा का वर्णन किया है। मनोहर अपनी बड़ी बहिन का भाई था और एक प्रकार से दत्तक का पुत्र भी। वही उसकी समस्त सम्पत्ति का उत्तराधिकारी है। विवाह से पूर्व ही ऐंग्लो-इण्डियन छोकरियों के साथ सिनेमा थियेटर देख चुका है। फूल का उससे विवाह हुआ है। फूल एक पढ़ी-लिखी किन्तु सीधी-सरल लड़की है। फूल शय्या के दिन वह अपने पति का इन्तजार कर रही है। किन्तु पति गर्मजोशी से स्वागत न होने के कारण भड़क उठता है और गुस्से में 'शकल चुड़ैलों की नखरे परियों के' कहता हुआ कमरे के बाहर निकल जाता है। मनोहर को इस तरह जाते देख उसकी बहन यशोदा फूल के प्रति सहानुभूति तो दिखाती नहीं, उल्टे उस पर ही बरस पड़ती है। इससे पूर्व मनोहर की पहली पत्नी कुमुद ने भी बिना रोये एक भी दिन रोटी न खायी थी और अन्ततः अपने छः माह के बच्चे को छोड़ जहर खाकर मर गयी थी। चारों तरफ यह कहकर मामला रफा-दफा कर दिया गया था कि कुमुद का हार्टफेल हो गया।

फूल बहुत सोच-समझ कर मनोहर के नाम एक पत्र लिखने बैठी। पत्र में उसने अपनी त्रुटियाँ स्वीकार कर मनोहर से क्षमा याचना लिखी। इस बीच मनोहर आ गया। पत्र पूरा कर उसने पीछे देखा तो मनोहर खड़ा था। वह फिर लज्जा संकोच में पड़ा गयी और पत्र फाड़ दिया। फूल को पत्र लिखते देख मनोहर के तन-बदन में आग लग गयी। उसने पूछा, 'किसे पत्र लिख रही थी। सच कहो।' फूल का शरीर बुरी तरह काँप रहा था। मनोहर ने उसके कान ऐंठते हुए कहा, 'बोलो, नहीं तो अभी तुम्हारी हड्डी-पसली तोड़ दूंगा।' फूल ने कहा जो करना हो करो, नहीं बताऊँगी। मनोहर ने उसे पीट-पीट कर बेदम कर दिया। घटना के दूसरे दिन मोहल्ले में एक बार फिर खबर फैल गयी कि मनोहर की दूसरी पत्नी का भी हार्ट फेल हो गया। 'मगर शहर के इतने बड़े और पायेदार आदमी के खिलाफ जबान खोलने की किसे हिम्मत थी। उँह, मर गयी तो मर भी जाने दो स्त्री ही तो थी। कल तीसरी आ जायगी।' लोगों की यह निर्मम प्रतिक्रिया सभ्य समाज की अमानवीयता और विसंगतिपूर्ण मानसिकता को उजागर करती है।

4.1.34 कान के बुंदे :-

हीरालाल वकील साहब का मुंशी था। उसके पास पत्नी कमला के कीमती बुंदे थे। बुंदों के कारण पुलिस ने उसे पकड़ लिया किन्तु वकील साहब ने उसे अपनी जमानत पर छुड़वा दिया। इस कारण हीरालाल वकील साहब की पूरे मन से श्रद्धा करने लगा। हीरालाल में शाम को शराब पीने की आदत थी। वकील साहब की पत्नी हीरादेवी काफी सुशिक्षित थीं। वे प्रधानाचार्य भी रही थीं। वे साधारण लोगों से कुछ कम बात करती थीं। मुंशी हीरालाल की पत्नी कमला इलाहाबाद के प्रसिद्ध वकील मुंशी नवल किशोर की पुत्री थी। समय के फेर ने उसे हीरालाल के साथ सात

फेरों में बाँध दिया था। वह बड़ी ही सौम्य सुशील और शिष्ट थी। असाधारण सुन्दरी थी। कमला के बुंदों की खबर हीरादेवी के पास पहुँची। उन्होंने वैसे ही बुंदे बनवाने की इच्छा जाहिर की, किन्तु वे बुंदे मद्रास के बने थे और कमला के पिता ने कमला की माँ को किसी समय दिलवाये थे। वैसे बुन्दे यहाँ कोई सुनार न बना पा रहा था।

हीरादेवी को कमला के बुँदे पसन्द थे। एक दिन कमला हीरा देवी से मिलने गयी। हीरादेवी ने कोई खास ध्यान न दिया और बाहर ही जमीन पर उसे बैठाया। इतने में कमला घर के भीतर गयी और उसी समय वकील साहब आ गये। कमला उन्हें देख उठ खड़ी हुई। वकील साहब उसके रूप-स्वरूप और शालीन व्यवहार से प्रभावित हुए और बिना यह जाने कि वह कौन है, वे उससे ड्राइंग में बैठने का आग्रह कर बैठे। बाद में इस बात को लेकर पति-पत्नी में विवाद भी हुआ।

कुछ दिन बाद हीरादेवी पहली बार गर्भवती हुई और अपने मायके चली गयी। एक दिन कमला ने पकौड़ियाँ बनायीं और हीरालाल के हाथों वकील साहब को भिजवाईं। पकौड़ियाँ के स्वाद ने उन्हें कमला की ओर आकृष्ट किया। वकील साहब अब हीरालाल को प्रायः शाम को शराब पीने के लिये पैसे देने लगे। हीरालाल अब वकील साहब के लिए घर से खाना भी लाने लगा। बाद में उसके आग्रह पर वे उसके घर पर खाना खाने जाने लगे। इधर परदे के पीछे से खाना परसने वाली कमला को देखने के लिए वकील साहब व्याकुल थे, किन्तु बातचीत का कोई अवसर उन्हें न मिल पा रहा था। एक दिन कुछ मुवक्किल वकील को ढूँढते उसके घर आये। घर में एकान्त देख वकील साहब बोले जिन हाथों ने इतना स्वादिष्ट भोजन बनाया है, उन्हें चूम लेने का मन करता है। कमला वकील साहब को हाथ धुला कर उन्हें तौलिया दे रही थी कि वे उसके

ऊपर झुके और उसके ओठ चूम लिये। कमला हतप्रभ रह गयी। शाम को वकील साहब ने हीरा को एक रूपया देकर शराब पीने भेजा और खुद उसके घर चले गये। हीरालाल के धोखे में कमला ने दरवाजा खोल दिया। वह घबरा गयी। वकील साहब ने उसे बाहों में भर लिया।

इधर हीरादेवी गर्भवती थीं, उधर हीरालाल के घर भी विवाह के नौ वर्ष बाद सन्तान का योग बना था। वह खुश था। उसे इस संयोग के कारणों की कोई जानकारी न थी। इस बीच हीरालाल का वेतन दस रुपये माहवार से बढ़कर पन्द्रह रुपये हो चुका था, और उसे शाम को पीने के लिए भी रोज पैसे मिल जाते थे। एक बार वकील साहब पर उसे थोड़ा संदेह हुआ, किन्तु वकील साहब ने उसे रुपये देकर पीने भेज दिया। वह खूब धुत होकर लौटा। उसके मन में जो संदेह के बीज थे, उसने उन्हें कमला से प्रकट किया। कमला ने कहा कि वह तो वकील साहब के पास जाती नहीं है, वह वकील साहब से मना कर दे कि खाना खाने न आया करें। अब हीरालाल दूसरा मकान खोजने लग गया। वह मकान की तलाश में निकला था कि उसे कुछ मुवक्किल मिल गये। वह उन्हें वकील साहब के बँगले ले गया। वहाँ पता चला वकील साहब क्लब गये हैं। मुवक्किलों से उसने पाँच रुपये पेशगी ले दूसरे दिन आने को कहा और वह स्वयं शराबखाने न जाकर पहले अपने घर चला गया। वह रबर के जूते पहने था। इसलिए उसके आने की आहट न हुई। उसने बाहर खड़े होकर सुना कि कमला कह रही है लड़की हो या लड़का, है तो तुम्हारा ही । इसकी पूरी जिम्मेदारी तुम्हारी ही रहेगी। ऐसा न हो कि तुम्हारा एक बच्चा मोटर पर स्कूल जाय और दूसरा पैदल घिसटता हुआ। वकील साहब कह रहे थे पगली हुई हो तुम्हें भी मैं यहाँ न रहने दूँगा।

मैं तुमको ले के भाग जाऊँगा। हीरालाल यह सब अधिक न सुन सका। दरवाजे पर जोर की एक लात मारी और तेजी से अहाते से निकल न जाने कहा अंधकार में अदृश्य हो गया।

इस घटना को कई महीने बीत गये। वकील साहब और कमला के सम्बन्धों की चर्चा घर-घर फैल गयी। इधर वकील साहब ने हीरादेवी को लिखा कि वे बच्चे को लेकर अभी न आये क्योंकि यहाँ मौसमी बीमारियाँ फैली हैं। उधर हीरादेवी की एक सहेली ने स्थिति की सूचना देते हुए उसे तत्काल लौटने के लिए पत्र लिखा। हीरादेवी के पहुँचने के पन्द्रह दिन पूर्व बंगले पर ही कमला ने एक कन्या को जन्म दिया। हीरादेवी ने आते ही कमला को बंगले से बाहर निकलवा दिया। वह गिड़गिड़ाती रही कि उसे किसी कोठरी में ही रह जाने दो। इतना नन्हा-सा बच्चा लेकर वह कहाँ जाय? लेकिन हीरादेवी की डांट के आगे किसी की एक न चली और वह बड़े-बड़े आश्वासन देने वाले वकील साहब के सामने ही गिरती पड़ती बँगले के बाहर चली गयी। किसी को उस पर दया न आयी।

4.1.35 दो सखियाँ :-

मुन्नी सरदार अमर सिंह की बेटी थी और रमिया उसके माली गोपी सिंह की। रमिया का पिता अमर सिंह के साथ शेर के शिकार पर गया और शेर ने उसे मार डाला। अब रमिया की माँ अमरसिंह के बगीचे में काम करने लगी। मुन्नी और रमिया की कम उम्र थीं। मुन्नी स्कूल जाने लगी और रमिया माँ का हाथ बटाने लगी। घास खोदने और पौधों को पानी देने में एक दिन मुन्नी की माँ ने मालिन को ऊपर बुलाया, वह किसी गलती से आशांकित हो भय से काँपने लगी, किन्तु

उन्होंने कहा हमारी मुन्नी रोज पढ़ने जाती है तुम्हारी रमिया क्यारी में खेलती, कूदती मजे मारती है, यह न चलेगा, कल से यह भी स्कूल जाएगी।

रमिया की समस्त व्यवस्थाएँ मुन्नी के घर वालों ने अपने हाथ में ले लीं। लड़कियाँ बड़ी हो गयी। रमिया अब नौकरी करके अपनी माँ को राहत देना चाह रही थी। मुन्नी की शादी की तैयारियाँ चल रही थी। किन्तु मुन्नी इस बात से चिन्तित थी कि रमिया की भी किसी प्रकार शादी हो जाय। मुन्नी के पिता ने आश्वासन दिया कि इस विवाह के बाद रामी के विवाह का भी अवसर आएगा। मुन्नी का भाई जगत सिंह पाँच साल से विदेश में था। वह आज वापस आ रहा था। मुन्नी और रामी बड़ी लगन से उसका कमरा सजा रही थीं। मुन्नी ने रामी से बताया कि उसने उसके विवाह की बात भी पिताजी से कर ली है, किन्तु वह बोली कि वह विवाह न करेगी। तभी श्रृंगार मेज के सामने दोनों को अपना प्रतिबिम्ब दिख पड़ा। मुन्नी ने कहा, 'रामी मैं तुझसे गोरी हूं पर सुन्दर तू ही मुझसे ज्यादा है। अच्छा देख तू मेरे पति के सामने मत आना। कहीं ऐसा न हो कि वह मुझे छोड़कर तुम्हें पसन्द कर लें।' रामी बोली, 'तुम मेरा मजाक मत उड़ाओ।' इस पर मुन्नी ने कहा, 'अच्छा भैया को आने दो उनसे फैसला करवा लेगे।' रामी ने कहा, 'कहीं वे किसी तीसरे को ही सुन्दर की उपाधि दें तो ?'

मुन्नी प्रसन्न थी, रामी चिन्तित। उसका स्वाभिमान कहता था कि माँ को लेकर कहीं और चली जाय। पर मुन्नी से उसका अटूट प्रेम था। वह जानती थी, ऐसा करने पर मुन्नी का मन बहुत दुखी होगा। घर आते ही मुन्नी ने जगतसिंह से कहा कि वह दोनों में कौन सुन्दर है, इसका फैसला कर दे। किन्तु जगत सिंह ने कहा मुन्नी तू अभी निरी बच्ची ही है। जगत सिंह के मन-मस्तिष्क में

रामी का सौन्दर्य बस गया। उसे लगा कि उसने पहले भी उसे कहीं देखा है, पर उसे याद न आया। आज वह रात को सो न सका। और मुन्नी भी सुबह छः बजे से ही उसके पास जा धमकी। जगत ने उसे समझाने की कोशिश की कि वह अब बड़ी हो गयी है। तभी जगत सिंह की दृष्टि दरवाजे पर ठिठके दो पैरों पर गयी। मुन्नी ने बताया कि रामी अब जगत सिंह से शरमाती है। मुन्नी ने जगत सिंह को बचपन की उस घटना का स्मरण कराया जब रामी जगत सिंह से शादी करने को मचल उठी थी और उन्होंने उसे दो पैसे देकर कहा था, लो शादी कर ली। इस घटना को याद दिलाने पर रामी शरमा गयी। जगत सिंह ने रामी को अन्दर बुलाया और कहा लो चाहे तो पैसे और ले लो। उसी दिन दोनों लड़कियों का रिजल्ट निकला। मुन्नी सेकेण्ड और रामी फर्स्ट पास हुई। मुन्नी ने उससे कहा कि वह तो उससे हर मामले में आगे निकल रही है। रामी ने कहा, किन्तु विवाह के मामले में नहीं। इस बीच जगत सिंह के विवाह हेतु प्रस्ताव आया। मुन्नी ने भी उनसे विवाह करने की जिद की किंतु मुन्नी के विवाह तक उन्होने अपना विवाह न करने का निश्चय सुनाया।

रामी जगत के कमरे से फूलदान लेकर बाहर आ रही थी। तभी जगत सिंह ने रामी का हाथ पकड़ उससे विवाह का प्रस्ताव किया और स्वीकृति चाही। रामी चुप रही। अनेक बार पूछने पर उसने हाँ कह दी। रामी तो बचपन से ही अपने चण्डी ठाकुर (जगत) को स्वीकार कर चुकी थी। मुन्नी की माँ को तो यह प्रस्ताव उचित न लगा, किन्तु उसके पिता ने ऊँच-नीच की सीमा को ध्यान दिये बिना सहर्ष विवाह की स्वीकृति दे दी। एक ही मण्डप में एक ही लग्न में मुन्नी और रामी के विवाह हो जाते है।

4.1.36 देवदासी :-

यह कहानी प्रतिमा नाम की एक देवदासी की है। पढ़े-लिखे किन्तु दुराचारी प्रकृति के छः युवक गुजरात स्थित एक गाँव के मंदिर में गए। मंदिर के मुख्य महन्त ने उनकी खूब आवभगत की और उनकी देखभाल के लिए प्रतिमा नामक देवदासी को लगा दिया। प्रतिमा ने उनकी देखरेख में कोई कमी न रखी। इसका गलत अर्थ लगा युवक महंत को धोखा देकर प्रतिमा को जबर्दस्ती उठा ले गये।

कुछ दिन बाद वे उसे सुरेश नामक एक व्यक्ति के घर के सामने खाली पड़े मकान में ले गए। उस मकान के छज्जे पर सुरेश ने उस नारी को देखा जो उम्र अधिक होने पर भी सुन्दर थी, किन्तु उसके मुख पर विषाद की रेखाएँ थी। सुरेश मामला समझ नहीं पा रहा था। एक बार सुरेश बहुत रात को घर लौटा। उसने रात के सन्नाटे में प्रतिमा से हो रही बातें सुनीं जिसमें उस पर दुराचार हेतु दबाव डाला जा रहा था – 'तो तुम्सीता सती हो? बस यहीं या उस मंदिर में भी जहाँ हजारों को रिझाने के लिये तुम्हें नाचना और गाना पड़ता था।

युवती कह रही थी कि वह सीता नहीं है तो दुराचारिणी भी नहीं। तभी रमणी तेजी से छज्जे पर निकल आयी और सुरेश जो अपनी छत पर खड़ा था, वह बैठ गया। उससे बात कर रहे नरेन्द्र नामक युवक की उद्दण्डता बढ़ती जा रही थी। उसने प्रतिमा को तमाचे जड़ना शुरू कर दिया।

आधा घंटे से यह सब सुन रहा सुरेश अब चुप न रह सका उसने उन पर टार्च की रोशनी मारी और कहा आप लोग युवती को भगा कर लाये हैं। वे बोले हमारे झगड़े में तुम बोलने वाले कौन होते हो। सुरेश ने कहा – 'मैं एक मनुष्य हूँ जो मनुष्यता का बर्ताव करना चाहता है। यदि

आप लोगों ने मेरे साथ दूसरी तरह का बर्ताव किया तो फिर मुझे पुलिस का आश्रय लेना पड़ेगा।“ मामला पुलिस तक गया। बाद में वे लोग जमानत पर छूट गए। इधर सुरेश ने प्रतिमा को मंदिर में सौंपने के उद्देश्य से पत्र लिखकर मंदिर की स्थिति की जानकारी चाही तो पता चला कि देवदासी प्रतिमा के अचानक लापता होने पर बड़े पुजारी की जगह दूसरा पुजारी नियुक्त कर दिया गया है जो बड़ा ही दुराचारी था। प्रतिमा ने कहा कि अब वह वहाँ जाकर क्या करेगी। सुरेश ने उसे विवाह करने की सलाह दी। प्रतिमा ने कहा उससे कौन विवाह करेगा? सुरेश ने कहा- ‘उम्र की बात मत कहो, प्रतिमा ! शेक्सपियर ने जिससे विवाह किया था उसकी उम्र उससे नौ साल अधिक थी। विवाह दो आत्माओं का मिलन है और आत्मा कभी वृद्ध नहीं होती। मैं तुमसे विवाह कर सकता हूँ। प्रतिमा का चेहरा लज्जा से लाल हो रहा था। उसका मस्तक झुकते झुकते सुरेश के चरणों पर आ गिरा।

4.1.37 एक्सीडेण्ट :-

एक दिन कुसुम और प्राणनाथ की कारें टकरा गयीं। कुसुम का सिर फूट गया। टक्कर में गलती कुसुम की थी। प्राणनाथ ने कुसुम से कहा कि वह उसका उपचार करा देगा। कुसुम विवशता में उसके साथ पट्टी कराने गयी। फिर उसने कुसुम को उसके घर छोड़ा। कुसुम के भाई को उसका प्राणनाथ के साथ घर आना अच्छा न लगा।

एक दिन कुसुम पिकनिक गई। संयोग से उसकी गाड़ी में पेट्रोल खत्म हो गया। वहाँ कोई और साधन न था। वह पास के बंगले में घुसी। कुसुम ने देखा कि प्राणनाथ शराब पीता हुआ अखबार देख रहा है और गायिका गा रही है। कुसुम को इस तरह आया देख वह हतप्रभ रह गया।

उसने गायिका को हटाया और कुसुम से बोला ‘आपको आज अचानक अपने घर देखकर हर्ष भी है और दुख भी है।‘ उसने कहा सामाजिक दृष्टि से वे अब कभी उसके घर न आयें। फिर पूछा ‘चाय लेंगी या शर्बत ?’ कुसुम ने अपनी समस्या बताई कि मोटर में पेट्रोल खत्म हो गया है। प्राणनाथ ने गाड़ी में पेट्रोल डलवा दिया, फिर कुसुम ने हिम्मत करके प्राणनाथ से इस तरह गाने वालियों को बुलाने का कारण पूछा। कुसुम ने कहा – ‘वह रेडियो से भी गाने सुन सकता था।‘ प्राणनाथ ने कहा- ‘इन्हें तो मैं सिर्फ बदनाम होने के लिए बुलाता हूँ। और फिर इन गरीब स्त्रीयों में जिनकी उम्र ढल चुकी है उन्हें कोई पूछता नहीं उनके पेट भरने का भी सहारा हो जाता है।‘ कुसुम ने पूछा ‘और शराब क्यों पीते हैं?’ उसने कहा ‘अपने आपको मिटाने के लिए। रुपयों का और क्या करूँ।‘ अधिकार के स्वर में कुसुम बोली ‘मैं इन दोनों बातों को पसन्द नहीं करती। आपके पास बहुत रुपया है तो मुझे दे दीजिये। मैं उनका सद्व्यय करूँगी।‘ कुसुम ने प्राणनाथ से अपने आपको मिटाने का कारण पूछा, किन्तु उसने कहा कि वह इतनी जल्दी में न बता सकेगा।

एक दिन फिर कुसुम उसके घर गयी। वह सोच रही थी प्राणनाथ उतना खराब आदमी नहीं है। आज उसने प्राणनाथ की चाय भी पी और उससे अपने को मिटाने का कारण भी पूछा। इस बीच प्राणनाथ ने नशराब पी, न गाना सुना। प्राणनाथ ने उसे बताया कि संदेह के कारण उसने कैसे एक स्त्री का जीवन बर्बाद कर दिया। उसने बताया कि वह उस रुक्मिणी नाम की महिला का अपराधी है। नाचने-गाने वाली स्त्रियों में भी वह रुक्मिणी को खोजता है। शायद वह कहीं अपनी गरीब हालत में मिल जाय। कुसुम ने प्राणनाथ को चाय पर अपने घर बुलाया। अपनी सहेलियाँ को भी बुलाया। सभी सहेलियाँ प्राणनाथ के सद्व्यवहार के कारण उससे परिचय करना चाह रही

थीं। कुसुम ने उसका परिचय रिश्ते के भाई के रूप में कराया। तभी नौकरानी भामा चाय लेकर आयी। एकाएक भामा और प्राणनाथ ने एक दूसरे को देखा। भामा के हाथ से ट्रे छूटकर जमीन पर गिर गई। भामा निर्जीव-सी वहीं धरती पर पड़ी थी। प्राणनाथ के मुँह से निकल पड़ा रुक्मिणी। सब लोग रुक्मिणी की परिचर्या में लग गए।

4.1.38 दुनिया :-

यह कहानी ऐसे लोगों पर केन्द्रित है जो स्वयं तो चरित्रहीन हैं और अपने पाप कार्यों में सफल न होने पर निष्पाप और पवित्र हृदय लोगों पर कीचड़ उछालते हैं। संभवतः सुभद्रा जी को यत्र-तत्र-सर्वत्र यही प्रवृत्ति दिखाई दी होगी तभी उन्होंने दुनिया की चाल देखते हुए कहानी का शीर्षक ही दुनिया रख दिया।

इस कहानी में एक इंजीनियर की पत्नी मिसेज चोपड़ा खुले मन-मस्तिष्क और विचारों वाली समाज सेविका हैं। उनका स्वभाव हँसमुख है। लोग मिसेज चोपड़ा वीणा देवी के इस मिलनसार स्वभाव का प्रायः गलत अर्थ लगा लेते हैं। उनके शुभेच्छुओं को उनके संबंध में अनुचित टिप्पणियाँ कष्टकर प्रतीत होती है। रामेश्वर बाबू ऐसे ही लोगों में हैं जो उनके शुभेच्छु हैं। मिसेज चोपड़ा के बेटे का जन्मदिन है। उसके कार्ड छपे हैं। कार्ड वितरण की सूची बनी है। रामेश्वर बाबू उस सूची में सम्मिलित कुछ नामों पर आपत्ति करते हैं इनके घर से लौटते हुए एक क्लब में रामलाल और प्रेमनारायण, रामेश्वर बाबू का मिसेज चोपड़ा को लेकर उपहास करते हैं। वहीं पास की मेज पर बैठे भगवती प्रसाद कुछ देर तक तो उनकी बातें सुनते हैं, किन्तु फिर गंभीर आपत्ति करते हैं। वे बीस वर्ष से इस परिवार से परिचित हैं। बच्चे के जन्मदिन की दावत होती है। मिसेज

चोपड़ा उसमें सामने नहीं आती हैं। मिस्टर चोपड़ा बताते हैं कि वह बीमार हैं। दावत खत्म होने के समय भगवती प्रसाद व सत्येन्द्र व रामेश्वर मिसेज चोपड़ा के कमरे में जाते हैं। मिसेज चोपड़ा स्वस्थ हैं और बच्चों में व्यस्त हैं। दावत में शामिल न होने संबंधी प्रश्न का वे उत्तर देती हैं 'मैं इन लोगों के बीच बैठने में अपना अपमान समझती हूँ।' तभी भगवती प्रसाद ऐसे दो पत्र रामेश्वर व सत्येन्द्र को दिखाते हैं, जिनमें एक परिचित व्यक्ति ने पहले मिसेज चोपड़ा से प्रणय निवेदन किया है और फिर मिसेज चोपड़ा ने उसे फटकार लगाई है। भगवती प्रसाद रामेश्वर से पूछते हैं कि क्या पहले पत्र की लिखावट पहचानते हो। पत्र पर प्रेषक का नाम नहीं है। रामेश्वर कुचर्चा करने वालों में से मिस्टर शुक्ला की लिखावट से पत्र लेखक का नाम समझ जाते हैं। तभी मिसेज चोपड़ा ड्राइंग रूप में आती हैं वे पूछती हैं 'यह किसकी जन्मपत्री देखी जा रही है'। सत्येन्द्र हँसते हुए कहते हैं- 'मिस्टर शुक्ला की।

4.1.39 पापी पेट :-

इस कहानी का कथानक 'झंडा सत्याग्रह' के दौरान किये गये पुलिस अत्याचार पर आधारित है। झंडा सत्याग्रहियों की सभा पर पुलिस ने निर्मम लाठी चार्ज किया। पाँच सौ लोग घायल हुए, तीन मरणासन्न हो गये, तीन-चार लोग गिरफ्तार हुए किन्तु जिन पुलिस कर्मियों ने लाठी चार्ज किये उनका 'हृदय उछल नहीं रहा था, वरन् एक प्रकार से दबा-सा जा रहा था।' सिपाही राम बिलावन ने तो नौकरी से इस्तीफा ही दे दिया। सत्याग्रहियों पर थानेदार बरकतउल्ला ने जबर्दस्त लाठी चार्ज कराया, जिसमें उनके बेटे गफूर का मित्र गोपाल बुरी तरह घायल हुआ। गफूर फूट फूट कर रोया। थानेदार को भी अफसोस हुआ किन्तु पापी पेट का सवाल था। साठ

रूपए प्रतिमाह वेतन मिलता था। वे चाहकर भी नौकरी नहीं छोड़ पाये। उधर कोतवाल बख्तावर सिंह भी इस लाठी चार्ज से मन ही मन दुखी हुए। वे राजपूत थे। इस लाठी चार्ज से उनके भीतर भी अन्तर्द्वन्द्व था- 'मेरे पूर्वजों ने कभी निहत्थों पर शस्त्र नहीं चलाये, मैंने आज यह क्या कर डाला? ऐसे मारने से तो मर जाना अच्छा। पर पापी पेट जो न कराये सो थोड़ा।' उन्होनें रात को भोजन नहीं किया किन्तु तीन सौ रूपए की नौकरी छोड़ना उन्हें भी कठिन था।

लाठी चार्ज पर गवाही के लिए मजिस्ट्रेट राय साहब कुन्दनलाल ने जेल में कोतवाल साहब को बुलाया। किन्तु वहाँ से घर लौटते हुए उनकी आत्मा भी उन्हें कोस रही थी 'हमारे मन में क्या देश-प्रेम नहीं है? पर खाली पेट देश प्रेम नहीं हो सकता। आज नौकरी छोड़ दें, तो क्या स्वराज्य वाले मुझे 600/- दे देगे ? हमारे पीछे भी तो गृहस्थी लगी है, बाल-बच्चों का पेट तो पालना ही होगा।" सोच-विचार में डूबे कुन्दनलाल घर पहुँचे, वहाँ पता चला कि पत्नी अस्पताल गयी है। लाठी चार्ज में लड़के का सिर फट गया है। यह सुनकर वे अस्पताल पहुँचे, वहाँ गोपू बेहोश था। सिर में गहरा घाव था। दूसरे दिन ग्यारह बजे जेल में मुकदमा होना था किन्तु न्यायाधीश समय से न पहुँचे। आज उनके पास दो मुकद्दमे थे। एक मुकद्दमा तीन माह से चल रहा था, जिसमें किसी ने 13 वर्ष की लड़की का अपहरण किया था। इसमें अभियुक्त को छः माह की सख्त कैद की सजा सुनानी थी। दूसरा मुकद्दमा एक दिन पहले के काण्ड 'झंडा सत्याग्रह' का था, यह एक घंटे में समाप्त हो गया। 'अभियुक्तों में से एक को दो साल की सख्त कैद और 2000 रुपये जुर्माना, दूसरे को डेढ़ साल की सख्त कैद और 1500 रुपये जुर्माना और तीसरे को एक साल की सख्त कैद और 500 रुपये जुर्माना की सजा दे दी गई।" रायसाहब जब मुकद्दमे के बाद अस्पताल पहुँचे

तो गोपू की नाड़ी क्षीण हो रही थी। 'धीमी आवाज से उसने कहा, वन्दे मा... 'मा' की ध्वनि नहीं निकल पाई; 'म' के साथ ही उसका मुँह खुला रह गया। उसकी माता चीख कर लाश पर गिर पड़ी। राय साहेब के शून्य हृदय में बार-बार प्रश्न उठ रहा था, 'यह सब किसके लिए?' और मस्तिष्क से प्रतिध्वनि उसका उत्तर दे रही थी, 'पापी पेट के लिए।

4.1.40 अमराई :-

यह कहानी असहयोग आंदोलन और अंग्रेजी कुशासन के अत्याचार को आधार बनाकर लिखी गयी है। ठाकुर साहब तीन माह पूर्व ही रायसाहब हुए थे। आनरेरी मजिस्ट्रेट वे पहले से ही थे। उनका एक आम का बाग था, जिसमें सावन के लगते ही झूला पड़ जाता और विजयादशमी तक पड़ा रहता। राखी का दिन था। अमराई में मेला लगा था। मेले में पूरे गाँव के साथ ठाकुर परिवार के भी बच्चे एवं महिलाएँ शामिल थे। बच्चे झूला झूल रहे थे, और लड़कियाँ कजरी गा रही थीं। उस समय देश में सत्याग्रह आन्दोलन चल रहा था। अतएव पूरे देश में 'झंडा ऊँचा रहे हमारा' गीत गूँज रहा था। मेले की भीड़ में अचानक एक बच्चा गा उठा – झंडा ऊँचा रहे हमारा। धीरे-धीरे पूरे मेले ने 'झंडा ऊँचा रहे हमारा' गीत गूंजने लगा।

यह खबर ठाकुर साहब के पास पहुँची तो सरकार के खैरख्वाह होने के कारण वे अमराई की तरफ दौड़े, किन्तु उनके पहुँचने के पहले ही वहाँ पुलिस पहुँच गयी। दरोगा नियामत अली ने बिगड़ कर कहा- 'ठाकुर साहब ! आपसे तो हमें ऐसी उम्मीद न थी।' दस मिनट में सबको भगाइये नहीं तो लाठीचार्ज कर दिया जाएगा। ठाकुर साहब ने भी कहा कि दस मिनट में अमराई खाली करवा दी जाएगी। इतने में उनका नाती विजय व नातिन कान्ति देश आजाद कराने हेतु आपस में

वीरता प्रदर्शन की बात लेकर दादा जी (ठाकुर साहब) के सामने आ गये। बच्चों की इन बातों में ठाकुर साहब को दस मिनट लगे। तब तक पुलिस ने बेरहमी से लाठीचार्ज कर दिया, जिसमें तीस से अधिक बच्चे, कुछ स्त्रियाँ व सात-आठ युवक घायल हुए। विजय इतना घायल हुआ कि मरणासन्न हो गया।

जिस समय विजय अपने जीवन की अन्तिम घड़ियाँ गिन रहा था, उसी समय ठाकुर साहब को अपनी सफाई देने के लिए कोर्ट में बुलाया गया था। ठाकुर साहब आनरेरी मजिस्ट्रेटी व रायसाहिबी का इस्तीफा लेकर कोर्ट पहुँचे और बयान दिया 'मेरा बगीचा असहयोगियों का अड्डी कभी नहीं रहा है क्योंकि मैं अभी तक सरकार का बड़ा भारी खैरख्वाह रहा हूँ। परन्तु आज तो सारा भेद मेरी आँखों के ही आगे विषैले अक्षरों में लिख गया है।" और उन्होंने अपने दोनों इस्तीफे दे दिये। साठ साल के बूढ़े ठाकुर साहब को छः महीने की सख्त सजा और 500 रुपये जुर्माना हुआ। जुर्मान में उनकी अमराई नीलाम कर दी गयी और वहाँ पुलिस चौकी बन गयी।

4.1.41 चढ़ा दिमाग :-

यह कहानी लेखिका की एक आपबीती घटना पर आधारित है। शीला कविताएँ लिखती है, कभी-कभी कहानियाँ भी। उसके पास देशभर से प्रशंसकों के पत्र आते हैं। वह उन सबका उत्तर नहीं दे पाती है। उत्तर दे भी कैसे 'आखिर पत्र भेजने में भी तो खर्च लगता ही है; और वह तो निर्धन थी।' अक्सर सम्पादकों के पत्रों के भी उत्तर नहीं दे पाती। शीला के पति 'सत्याग्रह' में जेल में बन्द हैं। दो सौ रुपये जुर्माना भी हुआ है। वह एक वर्ष से यह कष्ट झेल रही है।

एक दिन ‘कल्पलता’ मासिक के सम्पादक का एक पत्र उसे मिला। सम्पादक या उनके डिस्पैचर की भूल से किसी और का पत्र शीला के नाम के लिफाफे में रख गया। हुआ यह कि सम्पादक ने पत्रिका के विशेषांक हेतु रचना न भेजने का एक शिकायती पत्र शीला को लिखा और उत्तर तक न देने के संबंध में शीला की शिकायत करता हुआ एक पत्र उसके एक मुँह बोले साहित्यकार भाई को लिखा। साहित्यकार को लिखे पत्र में सम्पादक ने लिखा था ‘इस चढ़े दिमाग का कुछ ठिकाना भी है!’ जब साहित्यकार बन्धु शीला का पत्र देने उसके पास गये तो उसने भी नयी लिखी कहानी देने से पहले वह पत्र दिखाया जो उसके साहित्यकार भाई के नाम था। वह इस संबंध में सम्पादक को पत्र लिखने वाला था किन्तु शीला ने समझाया यदि कोई तीन-चार पत्र भेजे और दूसरा उसका कोई उत्तर न दे, तो पत्र भेजने वाला उसे घमण्डी ही तो समझेगा।

साहित्यकार भाई को कहानी देकर वह अपना पत्र पढ़ ही रही थी कि बाहर शोर हुआ और देखते ही देखते जुमनि की वसूली में उसके घर की कुर्की प्रारंभ हो गयी। कुर्की वाले घर के सब सामान के साथ उसके नन्हें बेटे ब्रजेश की साइकिल भी उठा ले गये। शीला की आँखें भीग गयीं, भाई ने सान्त्वना दी ‘बहिन देशभक्तों की यही तो अग्निपरीक्षा है।‘ घर आकर उसने कहानी पढ़ी और ‘कल्पलता’ के सम्पादक के पास भेज दी। कहानी का शीर्षक था ‘चढ़ा दिमाग’।

4.1.42 गौरी :-

बाबू राधाकृष्ण अपनी बेटी गौरी के लिए वर ढूँढ़ते ढूँढ़ते परेशान हैं। वर की तलाश में उन्हें सीताराम नामक एक आदमी का रिश्ता आता है। उसकी उम्र 35-36 के लगभग है। उसका एक विवाह हो चुका है, साथ ही दो बच्चे भी हैं। वह महात्मा गांधी का पक्का अनुयायी अर्थात् सत्याग्रही है। उसे अपने से अधिक बच्चों की चिन्ता है। सीताराम विवाह की तारीख हेतु राधाकृष्ण को पत्र लिख भेजता है जिसके जवाब में राधाकृष्ण कुंडली न मिलने का बहाना बना देते हैं क्योंकि उन्होंने गौरी के लिए कुछ दिन पूर्व नायब तहसीलदार पद पर नियुक्त हुआ एक धनवान वर ढूँढ़ लिया है। गौरी के माता-पिता प्रसन्न है। किन्तु गौरी दुखी है क्योकि 'देशभक्त, त्यागी वीरों के लिए उसके हृदय में बड़ा सम्मान था।' सीताराम ने देश के लिए अपने जीवन का उत्सर्ग किया था अन्यथा वे भी बी.ए. पास करने के बाद नायब तहसीलदार हो जाते। विवाह की निश्चित तारीख के पन्द्रह दिन पहले राधाकृष्ण को एक तार मिलता है जिसमें नायब तहसीलदार के पिता की मृत्यु के कारण एक वर्ष के लिये विवाह टाल देने की सूचना थी। इस सूचना से गौरी के माता-पिता तो दुखी हो गये पर गौरी के सिर पर से जैसे चिन्ता का पहाड़ ही हट गया हो। इस बीच स्वतंत्रता आंदोलन तेज हो गया। गौरी को सीताराम जी के बच्चों की चिंता थी। एक दिन उसने अखबार में खबर पढ़ी कि सीताराम जी राजद्रोह में गिरफ्तार हो गये हैं। गौरी एक नौकर के साथ कानपुर चली जाती है। सीताराम जी साल भर जेल में रहे। वे तीन-चार बच्चों की माँ एक कहारिन के भरोसे बच्चे छोड़ गये थे। उन्हें वर्ष भर बच्चों की चिन्ता सताती रही। साल भर बाद वे जेल से मुक्त हुए। उनकी जेब में कुछ पैसे थे, जिनसे उन्होंने जलेबियाँ खरीदीं। वे चोरों की तरह

धड़कते दिल के साथ घर में घुस रहे थे किन्तु आँगन में पहुँचते ही ठगे-से खड़े रह गये। फिर जरा आगे बढ़कर कहा- आप? गौरी ने झुककर उनकी पद-धूलि माथे से लगा ली। यह कहानी निश्चय ही उन अनाम नारियों के प्रति श्रद्धा जगाने वाली है|

4.1.43 तांगेवाला :-

कहानी में नायक को काश्मीर जाना था किन्तु यात्रा के दो दिन पूर्व रामकृष्ण का एक जरूरी पत्र आ गया। अब उसे रामकृष्ण के गाँव जाना था गाँव तेईस मील दूर था। इसलिए उसने तांगा तय किया। तांगा लगभग सात मील चला होगा कि ताँगेवाला जोर से गा उठा- 'हम फिर से वतन अपना स्वाधीन बना लेगे।' ताँगेवाला खद्दर का कुर्ता पहने था। गांधी टोपी उसके सिर पर थी। इस काम में बन्धन न था इसलिए माता-पिता के रोकने पर भी उसने यह काम अपनाया था । सामने नदी थी। उसने वहाँ तांगा रोक दिया और पानी पीने का आग्रह कर बोला – 'कहते हैं कि सन् सत्तावन के गदर में तात्या टोपे दुश्मनों की सेना को चीरते हुए यहीं से नदी के पार चला गया था।' नायक ने सोचा तांगेवाले को इतिहास का भी ज्ञान है। फिर उसने सन् सत्तावन में हिन्दुस्तानियों की हार के कारणों में आपसी फूट' पर चर्चा की। तांगेवाले का पिता डी. सी. का अर्दली था, किन्तु वह इतना देशभक्त था अंग्रेजों को कभी अपने ताँगे पर न बैठाने की कसम खा चुका था। उसका कहना था 'मेरा मन इनसे बदला लेने को बार- बार उमड़ता है।

नायक ने उससे कहा, 'तुम्हारे विचार तो क्रान्तिकारियों जैसे हैं' और उससे नाम पूछा। उसने अपना नाम रामदास बताया। यह पूछने पर कि क्या किसी क्रान्तिकारी को जानते हो? उसने नहीं में उत्तर दिया। किन्तु उसे पता था क्रान्तिकारियों में भी मुखबिर होते हैं। वह गांधी जी के

सत्याग्रह में जेल भी हो आया था और चाहता था – ‘सन् सत्तावन का सीन फिर दोहराया जाय।‘ नायक ने उसे समझाया सन् सत्तावन की बात ही और थी। तब हमारे पास हथियार थे। अब तो हम लोग बिलकुल पंगु कर दिये गये है।‘ वह बोला ‘हुजूर, यही तो बात है।‘ अब हमें गिरफ्तार करने वाले, सजा सुनाने वाले, सब अपने ही लोग हैं। उसने दीर्घ निःश्वास छोड़ते हुए कहा, ‘अगर हिन्दुस्तानियों में एका ही होता तो क्या मुट्ठी भर विदेशी हम पर शासन कर सकते थे?’ तभी एक ओर से किसी के बिलख-बिलख कर रोने की आवाज आयी। तांगेवाले ने बताया सन् सत्तावन की गदर में जब बहादुरशाह कैद हुआ, और शाहजादों का कत्लेआम अंग्रेजों ने किया, तब उनकी बेगमों के कपड़े-जेवर छीन कर दर-दर भटकने को छोड़ दिया। यह पगली भी उन्हीं में से एक है। कभी रोती है, कभी हँसती है, कभी रात में गाती है। नायक ने उस स्त्री से बात करने की इच्छा जतायी। किन्तु तांगेवाले ने कहा ‘आज तक उससे कोई बात नहीं कर सका।‘ इस प्रकार ताँगेवाले ने रास्ते में न जाने कितनी बातें नायक को बतायी। जब वह ताँगे पर बैठा था तब उसे चिंता थी कि अकेले इतना लम्बा सफर कैसे कटेगा किन्तु वह जान ही न पाया कि तेईस मील का सफर कब पूरा हो गया।

4.1.44 हींगवाला :-

हींगवाला खान, सावित्री के घर हींग बेचने आता है। घर में हींग हो, तो भी वह आग्रहपूर्वक हींग बेच जाता है। घर के बच्चे उसकी इस आदत के कारण उससे चिढ़ते हैं। हींगवाला सावित्री का हम-उम्र है फिर भी वह उसे ‘अम्मा’ कहता है। आज भी खान जबर्दस्ती हींग दे गया है और सवा छः आने अम्मा से ले गया है। खान के जाने के बाद बच्चे माँ से कहते हैं कि वह खान को

तो पैसे दे देती है किन्तु उन्हें मेला घूमने को पैसा नहीं देती। बच्चे मलाई वाला बर्फ खाने को मचलते हैं। माँ उन्हें पैसे दे देती है।

दशहरे का मेला धूमधाम से लगा है। अधिक धूमधाम का कारण यह है कि होली पर हिन्दू- मुस्लिम दंगा हो जाने से होली नहीं मनाई गयी थी। इस बीच खान कई महीने बाद हींग बेचने आया है। सावित्री उससे हींग खरीदती है साथ ही पूछती है दंगे के बाद भी उसे हिन्दू इलाके में उसके घर आने में कोई डर नहीं लगा। इस पर खान कहता है 'ऐसी बात मत कहो अम्मा। बेटे को भी क्या कभी माँ से डर हुआ है जो मुझे होता।'

शाम चार बजे काली का जुलूस निकलने वाला था। बच्चे नौकर श्यामू के साथ मेला गये थे। वहाँ देर शाम दंगा हो गया। लोग कह रहे थे दंगे में कई लोग मर गये हैं। सड़क पर लोगों को भागते देख माँ का हृदय विचलित हो रहा था। बच्चे अब तक घर नहीं आये थे। माँ की बेचैनी बढ़ती जा रही थी। काफी देर होने पर खान बच्चों को लेकर घर आया। उसने बताया दंगा जरूर हुआ किन्तु पुलिस ने झूठे फायर ही किये मरा कोई नहीं, कुछ लोग घायल जरूर हुए। अब सब जगह शान्ति है। बच्चों में छोटे ने कहा- 'अम्मा, खान बहुत अच्छा है। दंगा होते ही श्यामू तो हमें छोड़कर भाग गया। खान ने ही हमें बचाया, नहीं तो हमें भी चोट आती।' सावित्री ने पूछा- 'अच्छा अब तो खान से हींग लेने दोगे?' बच्चों ने एक स्वर में कहा- 'हाँ, हाँ, जरूर लेने देगे। खान तो हमारा दोस्त है।' खान ने डपटकर कहा 'नहीं, दोस्त नहीं। हम तुम्हारा भाई है, भाई।' इस कहानी में प्रभावी रीति से चित्रित किया गया है कि पहले घरों में सामान बेचने आने वाले लोग भी पारिवारिकता और आत्मीयता का कैसा गहरा भाव रखते थे।

4.1.45 गुलाब सिंह :-

इस कहानी में झंडा सत्याग्रही किशोर गुलाब सिंह के बलिदान का वर्णन है। गुलाब सिंह की बहन उसे बहुत प्यार करती है, नासमझी की सीमा तक। बीमारी में डॉक्टर ने उसे अन्न न देने की हिदायत दी है पर वह उसे चुपचाप गुड़-चना खिला देती है। परिणाम यह हुआ कि उसका बुखार बढ़ गया।

वातावरण में झंडा सत्याग्रह की लहर व्याप्त है। मुरझाये हुए मनों में भी नयी जान आ गयी है। उमंगों वाली हवा चल रही है। बड़ा भारी जुलूस निकला, कौमी झंडे का जुलूस था वह। पर बादशाह का हुक्म था कि जुलूस न निकले, झंडा न निकले। बहन पूछती है, क्यों न निकले जुलूस ? भाई कटुता के स्वर में बोला, हमारा देश बादशाह का गुलाम जो है। बहन का कहना था 'तो जुलूस निकले, झंडा निकले। बहिन ने अपनी फटी ओढ़नी से झंडा बना दिया। भाई ने उसे अपने खेलने वाले डंडे में पहना दिया और बहन ने रोली चावल लगाकर भाई को एक वीर बहिन की भाँति विदा किया। भाई थोड़ी दूर गया था कि सिपाहियों ने गोली चला दी। वह घायल होकर अन्तिम साँसें गिनने लगा। कोई पास न आया। बहन दूर से यह देख रही थी। वह दौड़ पड़ी और खून से लथपथ भाई को देख पुकारा भैया। भाई ने कहा- 'तू आयी, यह झंडा ले।' बहन ने झंडा ले लिया। पर भाई चला गया। सिपाहियों ने समझा मानो उसे मारकर कोई गढ़ जीत लिया हो। गुलाब सिंह की अर्थी उठी। बहन वही झंडा लिये चल रही थी। बादशाह का हुक्म था जुलूस नहीं निकलेगा, कौमी झंडा नहीं निकलेगा, पर जुलूस निकला, झंडा भी निकला।

सत्याग्रह आन्दोलन आधारित इस बलिदान कथा का अन्त लेखिका ने बहुत प्रभावपर्ण ढंग से किया है। उसकी इस घटना पर टिप्पणी क्रान्तिकारियों और राष्ट्रभक्तों के बलिदान में एक नया अध्याय जोड़ने वाली है – 'यह कहानी कहाँ की है? किसकी है? हम क्या बतावें? यह फ्रांस की राज्य-क्रान्ति की हो सकती है। यह रूस की राज्य-क्रान्ति की हो सकती है। यह हिन्दुस्तान की सन् 42 की क्रांति की भी हो सकती है, क्योंकि यह घटना चिरन्तन है, अनन्त है। यह जैसे पेरिस में, मास्को में, वैसे जबलपुर में हो सकती है।

4.1.46 सुभागी :-

यह जेल में बन्द एक ऐसी युवती की कहानी है, जिसे एक दरोगा ने अपनी काम वासना की पूर्ति न हो पाने के कारण ही झूठे राजद्रोह में बंद करा दिया। वह कवयित्री के साथ जेल में थी। कवयित्री कांग्रेस की कार्यकर्त्ता होने के कारण जेल गयी थी। उस दिन शाम के समय तेज तूफान के साथ बारिश आयी। कवयित्री बेचैन हो उठी। उसने देखा सुभागी भी वैसी ही बेचैन है। कवयित्री की बेचैनी का कारण उसका नन्हा पुत्र था। उस रात बेचैनी के कारण न कवयित्री सोई थी, न सुभागी। दोनों को अपने बालकों की याद ने सोने न दिया था।

कवयित्री ने सुभागी से पूछा उसका पति कहाँ है? उसने बताया – जेल में। फिर वह भी क्यों जेल चली आयी। छोटे बच्चे को छोड़कर क्या कांग्रेस का काम बच्चे की देखभाल से भी ज्यादा जरूरी था, क्या उसके बिना कांग्रेस का काम न चलता ? उसने बताया उसने कभी कांग्रेस का काम नहीं किया। कवयित्री ने आश्चर्यचकित होकर पूछा – फिर वह कैसे पकड़ी गयी। इस प्रश्न के उत्तर में उसने दरोगा की दरिंदगी की कहानी बतायी। किसी बात पर उसके पति की दरोगा से कुछ

कहा-सुनी हो गयी थी। आंदोलन प्रारंभ होने पर इसका फायदा उठा दरोगा ने झूठी दफाओं में उसके पति को बंद करा दिया और सुभागी से कहा, यदि उसने उसकी बातें मानी तो वह उसे कोई तकलीफ न होने देगा। सुभागी को दरोगा की नीयत में खोट नजर आया। उसने गाँव छोड़ने का निश्चय किया और सवेरे ही स्टेशन पहुँच गयी। वहाँ पर्चों की एक पोटली बरामद करवा दरोगा ने उसे पकड़वा लिया। तब से उसे अपने बच्चे की चिंता सता रही है।

कवयित्री जेल की टंकी पर नहाने गयी थी तभी जेल की जमादारिन ने उसे एक पत्र दिया। पत्र बच्चों ने भेजा था जिसमें उन्होंने लिखा था कि वे सब ठीक हैं और उन्होने रामलाल नाम का एक छोटा नौकर रख लिया है। वह खूब काम करता है। उसे पढ़ाया भी जा रहा है। कवयित्री को सुभागी से पता चला कि उसके बेटे का नाम रामलाल है। उसने सुभागी को पत्र सुनाया। उसे ऐसा लगा जैसे खोया हुआ खजाना मिल गया हो।

4.2 स्त्री संघर्ष से जुड़ी कहानियों का विश्लेषण

सुभद्रा कुमारी चौहान ने कुल 46 कहानियाँ लिखी है। उनकी 46 कहानियों में से ग्यारह कहानियाँ ऐसी है जिसका मुख्य विषय स्त्री समस्या है। जिन कहानियों का विश्लेषण किया जाऐगा वे निम्नलिखित है:-भग्नावशेष', 'होली', 'मंझली रानी', 'दृष्टिकोण', 'कदम्ब के फूल', 'किस्मत', 'मछुए की बेटी', 'आहुति', 'थाती', 'अनुरोध' और 'ग्रामीणा'। इन कहानियों में भारतीय मध्य वर्ग की स्त्री की विवशता, बेबसी, पीड़ा, वेदना और उपेक्षा को चित्रित किया गया है|

4.2.1 दहेज प्रथा की समस्या

दहेज जैसी कुप्रथा के कारण ही अनमेल विवाह होते हैं| वैवाहिक जीवन की कुप्रथाओं के कारण कन्या का विवाह माता-पिता के लिए जटिल समस्या बन जाता है इसलिए कन्या के विवाह को लेकर पारिवारिक चिताओं का सूत्रपात होता है| माता-पिता की इस चिंता एवं उसके कारणों से सुभद्रा जी परिचित थीं| 'भग्नावशेष' कहानी में दहेज ना दे पाने की वजह से उसकी शादी एक अधेड उम्र के व्यक्ति के साथ की जाती है| उसे चार दीवारों में कैद करके रखा जाता है इसी में उसका जीवन बीतता है और उसकी जिंदगी नर्क की तरह बनती है|

इस कहानी में दहेज प्रथा के कारण हुए अनमेल विवाह के परिणाम स्वरूप संवेदनशील कवियत्रियों के साहित्यिक जीवन का अंत दिखाया गया है| इस कहानी में कवयित्री का विवाह एक ऐसे व्यक्ति से हो जाता है जिसके हृदय में अपनी पत्नी और उसकी साहित्यिक अभिरुचि के

लिए कोई सम्मान और स्थान नहीं है| शादी से पहले उसे पूर्ण रूप से अधिकार था लेकिन शादी के बाद उसके सपनों को तोड़ा गया वे उसका जीवन बच्चों तथा घर संभालने में ही बीत गया| वह अपने हक के लिए नहीं लड़ पाई| उसकी स्थिति को देखते हम कह सकते हैं कि, वह अपनी शादी से खुश नहीं थी|

4.2.2 पति द्वारा किया गया शोषण

यह समस्या सदियों से चलती आ रही यह एक बड़ी समस्या है जिसका शिकार स्त्रियाँ बनती है| वे चुपचाप सब कुछ सहन करती है और जो गलत हो रहा है उसका विरोध नहीं करती है| जिस वजह से पति बार-बार शोषण करता है उदाहरण के लिए, ‘होली’ कहानी में जगत प्रसाद हर दिन शराब पीकर घर आता है और अपनी पत्नी को सताता है अत्याचार करता है| वह होली के दिन भी शराब पीकर आता है और जिस दिन खुशियाँ मनानी चाहिए उस दिन वह अपनी पत्नी से झगड़ा करके उसे धक्का देकर चला जाता है तो पत्नी एक पत्थर से टकराती है और उसका सिर पर चोट लगती है और उसे अपनी गलती का एहसास भी नहीं होता |

‘होली’, ‘किस्मत’, ‘थाती’. ‘ग्रामीणा’ आदि कहानियों की स्त्रियाँ अपने पति और सास के अत्याचारों, समाज के अनावश्यक बंधनों और रूढ़िवादिता की शिकार हैं। ‘होली’ की करुणा का जीवन शराबी, जुआरी और विलासी पति के अत्याचार सहते सहते करुणामय हो गया है। ‘किस्मत’ की किशोरी दुर्भाग्य से बाल-विधवा है। वह क्रूर, निर्दयी सास के अत्याचार और ताने सहने तथा आजीवन वैधव्य की आग में जलने के लिए अभिशप्त है।

‘दृष्टिकोण’ कहानी में भी हम यह समस्या देख सकते हैं जहां पर निर्मला की कोई गलती न होने के बावजूद रमाकांत अपनी बात न सुनने की वजह से अपनी पत्नी को मारते हैं|

‘थाती’ कहानी में भी हम यह समस्या देख सकते हैं| थाती’ की नायिका शहर में पली-बढ़ी है। गाँव के लोगों की मानसिकता न समझ पाने के कारण वह हर दिन पति के अत्याचारों को सहते हुए उन्मादग्रस्त हो जाती है।

वहीं ‘आहुति’ की ‘कुन्तला’ के पति ‘राधेश्याम’ अपनी पत्नी की साहित्यिक प्रतिभा से प्रभावित तो अवश्य होते हैं लेकिन दोनों के बीच आयु का अधिक अन्तर अंततः उन्हें संदेही बना देता है और वे ईर्ष्यावश अपने ही हाथों से उसकी रचनाओं को जलाकर उसके साहित्यिक जीवन की ‘आहुति’ दे देते हैं। इस कहानी में लेखिका ने भारतीय समाज में दहेज जन्य विवशताओं, नारी को मात्र भोग्या समझने की दूषित मनोवृत्ति, वार्धक्य काल में विवाह जनित काम कुंठा तथा हीन-भावना के साथ नारीवर्ग की परवशता का प्रभावपूर्ण चित्रण किया है।

4.2.3 नारी के चरित्र पर संदेह

वैवाहिक जीवन में स्त्री के चरित्र पर संदेह करना उसे जिंदा ही निगल जाने के समान है| यह समस्या सुभद्रा जी ने अपने कथा साहित्य में बड़ा ही मार्मिक चित्रण किया है| उदाहरण के लिए ‘कदम्ब के फूल’ कहानी में हमें यह समस्या दिखाई देती है| जहाँ पर घर की बहू एक लड़की से कदम्ब के फूल लाने के लिए कहती है| उसके मन में कोई भी गलत विचार नहीं था, उसका मन एकदम साफ़ था लेकिन उसकी सास उस पर आरोप लगाती है कि वह किसी लड़के से

मिठाइयाँ मंगवा रही है और अपने पति के पैसे खत्म कर रही है| पुरुषप्रधान मानसिकता की वजह बन जाती जिसकी वजह सास अपने ही घर में आग लगाने का काम करती है|

'मंझली रानी' और 'दृष्टिकोण' कहानी में भी यह समस्याँ हमें देखने के लिए मिलती है| स्त्री किसी भी व्यक्ति के साथ अब बातचीत नहीं कर सकती है| अगर वह बातचीत कर रही हैं तो उसे अलग नज़रो से देखा जाता था| स्त्री का कोई पुरुष दोस्त नहीं हो सकता ऐसी गांव की लोगों की मानसिकता थी| उदाहरण के लिए 'मंझली रानी' कहानी में जब 'बहु' अपने 'मास्टर' से बात करती है तो उस पर आरोप लगाया जाता है साथ ही उसे घर से बाहर निकाला जाता है| 'ग्रामीणा' की सोना गाँव के स्वच्छन्द वातावरण से निकलकर शहर के बन्द कमरों में जीवन बिताने के लिए बाध्य करने पर अपने जीवन का अन्त कर देती है।

4.2.4 वैवाहिक जीवन की समस्याएँ

स्त्री और पुरुष का पारस्परिक सहयोग और साहचर्य वैवाहिक जीवन का मूलाधार है। विवाह एक प्रकार से स्त्री और पुरुष दोनों के ही आत्म विकास की यात्रा है। लेकिन सुभद्रा कुमारी चौहान के युग में विवाह का वास्तविक अर्थ भूला दिया गया था। विवाह के सम्बन्ध में अनेक कुरीतियों को प्रधानता दी जाने लगी थी। नारी की वैवाहिक समस्याओं का चित्रण सुभद्रा जी के कथा साहित्य में देखने के लिए मिलता है| इनके युग में वैवाहिक समस्याओं की एक श्रृंखला सी विद्यमान थी|

4.2.5 अन्तर्जातीय विवाह

सुभद्रा कुमारी चौहान यद्यपि जाति-पाँति, छुआ-छूत और ऊँच-नीच के पक्षधर नहीं हैं, उनकी विशालता इस प्रकार के निम्न कोटि के विचारों से ऊपर उठी हुई है, लेकिन जब भी उन्होंने विवाह के अन्तर्जातीय प्रश्न को खड़ा किया वहीं पर उनकी लेखनी रूक गयी। उदाहरण के लिए 'मंझली रानी' कहानी में 'तारा' एक गरीब परिवार की लड़की है| वह पढ़ी लिखी है| पैसों की वजह से उसकी शादी एक बड़े राजा के बेटे के साथ की जाती है। वह राजा का बेटा पढ़ा लिखा नहीं था| तारा का पिताजी सोचता है कि अगर मेरी बेटी का विवाह राजा के घर में हो गया तो वह सुख और चैन से रहेगी| किंतु अंत में उस पर आरोप लगाकर उसे घर से बाहर निकाल दिया जाता है|

4.2.6 अनमेल विवाह

स्त्री का जीवन अनेक सामाजिक कुप्रथाओं की श्रृंखला से जकड़ा हुआ है। अधिकतर दहेज की कुप्रथा के कारण ही अनमेल विवाह होते हैं। 'मँझली रानी' में एक मध्यवर्ग की अंग्रेजी पढ़ी-लिखी लड़की का विवाह मामूली हिन्दी पढ़े-लिखे एक विलासी लड़के से हो जाता है, जो एक राजा का लड़का है। शिक्षा और वर्ग की अनदेखी करके किए जाने वाले इस अनमेल विवाह के दुष्परिणाम भी शीघ्र ही सामने आते हैं। लड़की पर झूठे लांछन लगाकर उसे घर से निकाल दिया जाता है। सामाजिक प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए पिता द्वारा भी उसे स्वीकार न करने पर वह दर-दर की भिखारिन बनने के लिए बाध्य हो जाती है। इस कहानी में जहाँ एक ओर थोथी कुलीनता, झूठे बड़प्पन व गरीब की विवशता का चित्रण है, वहीं थोथी कुलीनता की आड़ में

पल रही अमानवीय और षड्यंत्रकारी स्थितियों का भी चित्रण है। दुष्ट चरित्र किस प्रकार भले लोगों को अपने दुष्चक्र का शिकार बनाते हैं, यह भी इस कहानी में विशेष रूप से चित्रित है। 'मँझली रानी', 'दृष्टिकोण', 'कदम्ब के फूल', 'मछुए की बेटी', 'अनुरोध' आदि कहानियों में स्त्री-स्वातन्त्र्य और स्त्री-अधिकारों की माँग उठाई गई है।

'मंझली रानी' और 'दृष्टिकोण' शीर्षक कहानियों में स्त्री के सच्चे पुरुष मित्रों को सम्मति दी गई है, विवाहिता स्त्री का यदि पति के अतिरिक्त कोई अन्य पुरुष मित्र है तो इसका यह अर्थ नहीं होता कि वह भ्रष्टा ही है। स्त्री-पुरुष में यौन सम्बन्ध के बिना भी घनिष्ठता हो सकती है, और वह घनिष्ठता उनके मानसिक और बौद्धिक अभावों की पूर्ति कर उन्हें नैतिक बल भी प्रदान कर सकती है|

'दृष्टिकोण' कहानी में बाल-विधवा गर्भवती की असहाय अवस्था में उसे दुर्दशा से बचाने के लिए कहानी की नायिका निर्मला उसकी सहायता के लिए आगे बढ़ती है। वह कुछ समय के लिए उसे अपने घर में आश्रय देना चाहती है लेकिन शीघ्र ही उसे यह समझा दिया जाता है कि उस घर पर उसका कोई अधिकार है ही नहीं, इसमें स्त्री और पुरुष के प्रति समाज के भेदभावपूर्ण दृष्टिकोण पर प्रहार किया गया है।

4.2.7 विवाह विच्छेद

आधुनिक वैयक्तिक जीवन मूल्यों ने हमें आत्मकेन्द्रित बनाकर सम्बन्धों के प्रति बेईमान बना दिया है। पति-पत्नी के कभी न टूटने वाले बंधन को क्षणिक बनाकर पारिवारिक व्यवस्था को छिन्न-भिन्न करके विवाह विच्छेद को प्रश्रय दिया जाने लगा है। सुभद्रा जी ने अपने कथा-साहित्य में विवाह विच्छेद की समस्या का चित्रण भी किया है। गाँवों में स्त्रियों पर तरह-तरह के आरोप लगाकर उन्हें छोड़ दिया जाता था, किन्तु शिक्षित समाज में स्त्री ने पुरुष से मुक्त होने के लिए और पुरूष ने स्त्री से मुक्त होने के लिए विवाह-विच्छेद का माध्यम तलाक को अपनाया| उदाहरण के लिए 'मंझली रानी' कहानी में तारा पर गलत आरोप लगाकर उसे घर से बाहर निकाल दिया जाता है| और उसका पति उससे रिश्ता तोड़ देता है| साथी तारा के घर वाले भी उसे रिश्ता तोड़ देते हैं| जो गलती उसने कि नहीं थी उसकी उसे सजा मिल रही थी|

4.2.8 विधवा समस्या

विधवा जीवनः भारतीय समाज को प्राचीनकाल से ही वैधव्य की समस्या विचलित कर रही है। सुभद्रा जी ने समाज का सबसे निरीह प्राणी विधवा ही थी, जिसकी निरीहता का मूल कारण समाज के नैतिक मूल्य हैं। जिसके कारण स्त्री से सदैव कठोर पतिव्रत-पालन की आशा की जाती थी। विधवा नारी की इस दयनीय दशा का चित्रण सुभद्रा जी ने अपने कहानियों में देखने के लिए मिलता है| उदाहरण के लिए 'किस्मत' कहानी में सास अपने विधवा बहु किशोरी का अत्याचार करती है| उसे ठीक से खाना नहीं दिया जाता है, उसके हाथों घर का सारा काम करवा

लिया जाता है| दिन रात उसे ताने दिए जाते हैं और बिचारी किशोरी सब कुछ सहन करती है उसका अपनी सास का विरोध नहीं करती है|

4.2.9 नारी द्वारा नारी का शोषण

'कदम्ब के फूल' इस कहानी में हमें बहु पर सास का अत्याचार यह समस्या देखने के लिए मिलती है| नारी द्वारा नारी का शोषण कोई नई बात नहीं है| अपितु यह तो सदियों से चली आ रही परम्परा है। सास अपनी बहू पर रात दिन ताने मारती रहती है| उसे अनेक प्रकार की गालियाँ दी जाती है| सास बहू के साथ अच्छा व्यवहार नहीं करती है| सास पति और बहू के बीच में झगड़ा लगती है| उसे चरित्रहीन कर देती है| साथ ही अनेक प्रकार के आरोप भी लगाए जाते है|

'कदम्ब के फूल' कहानी में सास की उस रूढ़िग्रस्त मानसिकता को उजागर किया गया है जिससे परिचालित होकर वे बहुओं पर अत्याचार करना अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझती हैं। उन्हें बहुओं को दबाकर रखना सामाजिक व्यवहार-कुशलता का एक आवश्यक और न्यायसंगत नियम लगता है जिसे कोई नहीं बदल सकता लेकिन कहानी की नायिका भामा स्पष्ट रूप से कह देती है, ''मुझे वह बहू न समझ लेना जो सास की मार चुपचाप सह लेती है।

'मछुए की बेटी' में स्वच्छन्द प्रवृत्ति की तन्नो के जीवन-चरित को दिखाया गया है। 'अनुरोध' में विवाहिता स्त्री वीणा के अन्य पुरुष निरंजन के प्रति दुराग्रह से ग्रस्त प्रेम को चित्रित किया गया है जिसके कारण वह उसे अपने से दूर नहीं होने देना चाहती। लेकिन जब वह निरंजन की पत्नी का पत्र पढ़ती तब उसे अपनी भूल की प्रतीति होती है और वह अगले ही दिन निरंजन

से कह देती है, ‘‘जिस प्रकार आप इतने दिनों तक मेरे आग्रह से रहे, उसी प्रकार मेरे अनुरोध से आप आज रात की गाड़ी से चले जाइए। इस कहानी में सुभद्रा जी ने पत्नी की नम्रता एवं उसके शील की शक्ति का एक सफ़ल उदाहरण प्रस्तुत किया है। वीणा के माध्यम से उन्होंने एक पतिव्रता स्त्री के प्रति दूसरी स्त्री के हृदय में आदर व सम्मान की भावना को व्यक्त किया है।

नारी जीवन आरम्भ से अन्त तक अनेक समस्याओं से आच्छादित है। उसके पग-पग पर समस्या जटिल रूप से खड़ी है। कन्या, पत्नी, वधू, भगिनी, विधवा सभी रूपों में समस्याएँ हैं। सुभद्रा जी ने स्त्री जीवन को निकट से देखा। उसकी जटिलताओं को परखा है उनके समाधान के प्रयत्न भी किये हैं। वे स्त्री जीवन की समस्याओं को सुलझाने के लिए स्त्री को पुरुष के समान अधिकार प्राप्त होना आवश्यक मानती है। दोनों में सद्भाव एवं सहयोग की भावना से ही समाज एवं परिवार अपने विकास के पथ पर अग्रसर हो सकेगा।

पंचम अध्याय

निष्कर्ष

निष्कर्ष

सुभद्रा कुमारी चौहान हिंदी की सुप्रसिद्ध कवयित्री और लेखिका हैं। हिंदी साहित्य की दुनिया में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मात्र नौ साल की उम्र में सुभद्रा कुमारी ने अंग्रेज़ों के खिलाफ़ अपनी पहली कविता लिखी । सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपनी कविताओं से स्वतंत्रता की लड़ाई में देशवासियों का मनोबल बढ़ाया और जाति, रंग भेद और नस्लभेद के खिलाफ़ आवाज उठाई। उनकी कहानियाँ प्रमाणित करती है कि उन्होंने जीवन और समाज की अनेक समस्याओं पर विचार किया| उन्होंने अपने सुख-दुख को व्यक्त करने के लिए वास्तविकता को सबके सामने खोल कर रख दिया और स्त्री की स्थिति सुधारने के लिए स्त्री-स्वातन्त्र्य और स्त्री-अधिकारों का प्रबल समर्थन किया| सुभद्राकुमारी चौहान ने स्त्री की निजी स्वाधीनता और उससे जुड़े यथार्थ को अभिव्यक्ति देने के लिए अपनी कविताओं और कहानियों में छायावादी भाषा से विद्रोह किया|

छायावादी युग में राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा के विकास में जिन कवियों ने उल्लेखनीय योग दिया, उनमें श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान का नाम अग्रगण्य है। अपने समूचे जीवन एवं साहित्य में उन्होंने न केवल अपने युग की विषम सामाजिक-राजनीतिक चुनौतियों का सामना किया बल्कि स्वाधीनता के लिए संघर्षरत तत्कालीन समाज में अपनी प्रखर काव्याभिव्यक्ति से नये प्राण फूंके। वैसे देखा जाए तो इन्होंने कम लिखा है लेकिन जो लिखा उसमें ही उनको प्रसिद्धि मिली| उनके साहित्य का

केंद्र बिंदु स्त्री है| अपनी व्यापक कथा दृष्टि से वे एक अति लोकप्रिय कथाकार के रूप में हिंदी साहित्य जगत में सुप्रतिष्ठित है| सुभद्रा कुमारी चौहान महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन में भाग लेने वाली प्रथम महिला थी और कई द.फा जेल भी गयी|

भारत में महिलाओं की स्थिति एक समान नहीं है बल्कि प्राचीन काल से आधुनिक काल यानी वर्तमान समय तक परिवर्तनशील रही है| प्राचीन काल से हमारा समाज आज भी आधुनिक युग तक पुरुष प्रधान ही रहा है| प्राचीन काल में भारतीय नारी बाल विवाह, पर्दा प्रथा, अनमेल विवाह, सती प्रथा जैसी कुरीतियों को चुप-चाप सहन कर रही थी।

भारत में शिक्षा प्रणाली, स्वतंत्रता, पाश्चात्य प्रभाव, समाज सुधार आंदोलन आदि के कारण ही स्त्रियों में नवीन चेतना उदित होती हुई दिखाई देने लगी। पाश्चात्य नारी मुक्ति आंदोलन को सफल बनाने वालों में स्टुअर्ड मिल, कालमार्क्स, फ्रायड, लूसी स्टोन, मार्गरेट मीड आदि का बहुत बड़ा योगदान दिखायी देता है। जिसके फलस्वरूप भारतीय समाज सुधारकों ने भी इन्हीं से प्रभावित होकर भारतीय स्त्री की दशा में सुधार लाने के लिए विभिन्न विधि-विधान बनाये। लेकिन आज वर्तमान में वे कमर कसकर हर कार्य में भाग लेकर समाज में बराबरी का हिस्सा पा रही है। वे पुरुषों से कंधे से कंधा मिलकर आगे बढ़कर अपने जीवन की राह पर चल रही है। आज की स्त्री किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं है और यही है आज की 'भारतीय स्त्री ।

उनकी कहानियों में दो ही स्वर प्रमुख रूप से मिलते हैं - एक तो देश-भक्ति का स्वर और दूसरा समाज में अपने व्यक्तित्व को प्रतिष्ठित करने के लिए संघर्षरत नारी की पीड़ा और विद्रोह का स्वर। उनकी कहानियों में मर्दों द्वारा स्त्रियों पर किए गए अत्याचार, स्त्रियों की दयनीय स्थिति को रेखांकित करती है साथ ही भारतीय समाज के लोगों के विचार, परंपरा स्त्री के प्रति दृष्टि एवं उनका जीवन आदि को बड़े ही यथार्थ रूप में चित्रित किया गया है| वे चाहती थी कि स्त्रियों की दुखद कहानियों को पाठकों के सामने लाया जाए |उनका गद्य ही नहीं उनकी जीवन प्रक्रिया भी जिंदगी के सहज और जरूरी सरोकारों से जुड़ी हुई थी। सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानियों में भारतीय मध्य वर्ग की स्त्री की विवशता, बेबसी, पीड़ा, वेदना और उपेक्षा को चित्रित किया गया है|

सुभद्रा कुमारी चौहान के मानसिक जगत् का निर्माण काल्पनिक स्वप्नों से न होकर तत्कालीन राष्ट्रीय जीवन और संघर्षों के यथार्थ परिवेश में हुआ था। उनमें क्षत्राणी का रक्त व ओज तथा एक कुलीन पारिवारिक भारतीय नारी का सहज मानवीय, कारुणिक, सुकोमल और भावुक हृदय एक साथ था। इसीलिए उन्होने जहां एक ओर राष्ट्रीय गौरव के ओजस्वी गीत गाए वहीं दूसरी ओर अपने युग की भारतीय नारी की संघर्ष-कथा भी कही।

सुभद्रा कुमारी चौहान देश की स्वाधीनता और नारी की स्वतन्त्रता के लिए अनेक प्रयास किए। उन्होंने बेड़ियों में जकड़ी भारतमाता और भारतीय नारी को मुक्त कराने

के लिए शक्तिशाली ब्रिटिश सत्ता और रूढ़िवादी समाज का निर्भीकता से सामना किया। शासन और समाज के विरुद्ध आवाज उठाने पर उन्हें जीवन में निरन्तर संघर्षों का सामना करना पड़ा लेकिन उन्होंने कदम पीछे नहीं हटाए | यह निस्संकोच कहा जा सकता है कि भारत और भारतीय नारियों को अपना जन्म सिद्ध अधिकार दिलाने में सुभद्राजी की लेखनी का गौरवपूर्ण योगदान रहा है|

सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानियों की बुनावट, कथानको में अचानक विस्मित कर देने वाले परिवर्तन, तथा भाषा शैली सरल है जिसके कारण पाठक कहानियों को आसानी से पढ़ सकते हैं| उनकी कहानियों की विषय वस्तु स्पष्ट है| कहानियों की शैली रोचक और प्रभावशाली है| कहानियों की सादगी और अभिव्यक्ति की स्वाभाविकता हमें लगातार कहानी से जोड़े रखती है|

सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानियों में सामाजिक चेतना प्रधान कहानियों की संख्या सर्वाधिक हैं। उनके तीनों कहानी संग्रहों - 'बिखरे मोती', 'उन्मादिनी' और 'सीधे-सादे चित्र' में कुल आठ कहानियों को छोड़कर शेष सारी कहानियाँ सामाजिक चेतना मूलक हैं जिनमें से अधिकांश में नारी जीवन व उसके संघर्ष का मार्मिक उद्घाटन हुआ है। सामाजिक रूढ़ियों और पुरुष की शोषक मानसिकता का खुला विरोध करते हुए सुभद्रा जी अपनी कहानियों में नारी जीवन के मानसिक, शारीरिक, पारिवारिक व सामाजिक प्रसंगों और उनकी समस्याओं का विश्वसनीय एवं यथार्थ चित्र उपस्थित करती हैं।

सुभद्रा जी की अधिकांश कहानियाँ राष्ट्र प्रेम, समाज सुधार, नारी जागरण, बंधन मुक्ति और क्रांतिकारी चेतना से प्रेरित हैं। ये जमीनी सच्चाई, सामाजिक दुर्दशा, पुरुष वर्ग के दुराग्रहों को उजागर करने वाली कहानियाँ आदर्शवाद से अनुप्राणित हैं।

'उन्मादिनी' संग्रह में 'अभियुक्ता' और 'चढ़ा दिमाग' शीर्षक कहानियाँ राष्ट्रीय कहानियाँ हैं। 'अभियुक्ता' के द्वारा अंग्रेजी न्याय व्यवस्था पर व्यंग्य किया गया है जिसमें देखते-ही-देखते झूठे गवाहों के आधार पर एक असहाय, निर्दोष और निराश्रित लड़की को अपराधी ठहराने के सारे कुप्रयास किए जाते हैं। अन्ततः सौभाग्यवश वह निर्दोष प्रमाणित हो जाती है। नारी की सहृदयता से सम्बन्धित कहानियाँ 'उन्मादिनी' कहानी संग्रह में नारी की सहृदयता से सम्बन्धित कहानियों की संख्या सात है| जो इस प्रकार हैं 'उन्मादिनी', 'असमंजस', 'सोने की कंठी', 'नारी हृदय', 'पवित्र ईर्ष्या', 'अँगूठी की खोज' और 'वेश्या की लड़की'। इस संग्रह की अधिकांश कहानियाँ प्रेमपरक हैं जिनमें नारी के विशुद्ध प्रेम के साथ-साथ उसकी पवित्रता, भावुकता और सहृदयता को दर्शाया गया है।

सुभद्रा जी की अधिकांश कहानियाँ किसी न किसी सत्य घटना पर आधारित होती थी| सुभद्रा कुमारी चौहान ने जितना साहित्य रचा, वह उनके साहित्यिक व्यक्तित्व को चरितार्थ करता है, साथ ही इस संभावना की ओर ध्यानाकर्षित करता है कि यदि वे कुछ और समय सृजनरत रहतीं तो हिन्दी साहित्य कुछ और समृद्ध

होता। अंततः हम कह सकते हैं कि, सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपने साहित्यिक योगदान से हिंदी जगत में अपना एक निश्चित स्थान निर्माण किया है|

संदर्भ सूची

संदर्भ सूची

आधार ग्रंथ

1)रूपा गुप्ता, सुभद्रा कुमारी चौहान ग्रंथावली, स्वराज प्रकाशन, संस्करण 2015|

सहायक ग्रंथ

1)डॉ. सुभी धूमिया, भारतीय समाज में महिलाएँ, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, संस्करण 2009|

2)रमण सिन्हा, हिंदी नवजागरण और स्त्री साहित्य श्रृंखला, स्त्रियों की स्थिति, अनन्य प्रकाशन, संस्करण 2019|

3)महादेवी वर्मा, पथ के साथी, लोकभारती प्रकाशन, संस्करण 1994|

4)आशारानी व्होरा, औरत: कल, आज और कल, कल्याणी शिक्षा परिषद प्रकाशन, संस्करण 2011|

5)शान्ति कुमार स्याल, भारतीय नारी और पश्चिमीकरण आर्य प्रकाशन मंडल, संस्करण 2013|

6)मोजम्मिल हसन 'आरजू', भारतीय महिला एवं आधुनिकीकरण, प्रकाशन अजुन पब्लिशिंग हाउस, संस्करण 2017|

7)डॉ. प्रभावती जड़िया, हिंदू नारी कार्यशीलता के बदलते आयाम, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, संस्करण 2003|

8)डॉ. श्रीमती अजित गुप्ता, मधुमती, राजस्थान साहित्य अकादमी की मासिक पत्रिक, संस्करण 2007|

9)डॉ. बीना शर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान राष्ट्रप्रेम की पर्याय, मधुमती पत्रिका संस्करण 2007|

10)डॉ. संजय गर्ग, स्त्री विमर्श का कालजयी इतिहास, सामयिक प्रकाशन, संस्करण 2012|

11)डॉ. सौ. मंगल कप्पीकेरे साठोत्तरी हिंदी लेखिकाओं की कहानियों में नारी, विकास प्रकाशन, संस्करण 2002|

12)डॉ. उमा शुक्ल, भारतीय नारी: अस्मिता की पहचान, लोकभारती प्रकाशन, संस्करण 1994|

13)एम. आई. राजस्वी, राष्ट्रभक्त कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान, ज्ञान विज्ञान एजूकेयर, संस्करण 2022|

अंतरजाल से आलेख

1) Dr. Manjushree menon सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य में नारीवादी आख्यान, M.E.S college of Arts, commerce and science, Bangaluru. (Volume 6, Issue 2 may, 2018)

2)Harapriya Mohapatra, status of women in Indian society, choudwar college, cuttack odisha. (Volume 3,Issue 6, 2015)

3)राकेश, स्वाधीनता आंदोलन और सुभद्रा कुमारी चौहान का साहित्य, यूनिवर्सिटी ऑफ़ दिल्ली 2010|

4)आरती श्रीवास्तव, हिंदी की राष्ट्रीय साहित्य परंपरा के संदर्भ में सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य का अनुशीलन, हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय 2010|

अंतरजाल

1)https://rb.gy/10tsq

2)https://tau.id/ifot9

3)https://hindi.careerindia.com/features/subhadra-kumari-chauhan-essay-004576.html

4)https://imvashi.com/subhadra-kumari- chauhan-biography-hindi/

5)https://shorturl.at/bequE

6)https://nibandhbharti.com/subhadra-kumari-chauhan-par-nibandh/

7)https://shorturl.at/1LM46

8)https://shorturl.at/SH349

9)https://shorturl.at/moqGQ